चैत्र मास शुक्ल पक्ष, 22 वर्ष, अंक 113, पृष्ठ 8, मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज | सोमवार 22 मई 2023 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

भारत-ब्रिटेन मुक्त व्यापार समझौते पर प्रगति सहित द्विपक्षीय रणनीतिक साझेदारी की समीक्षा की

मोदी व ऋषि में हुई द्विपक्षीय चर्चा

हिरोशिमाः जापान के हिरोशिमा में जी-7 की बैठक में भाग लेने पहुंचे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को ब्रिटेन के प्रधानमंत्री ऋषि सुनक के साथ कई क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने को लेकर चर्चा की। इस दौरान भारत-ब्रिटेन मुक्त व्यापार समझौते पर प्रगति सहित द्विपक्षीय रणनीतिक साझेदारी की समीक्षा की। मोदी ने जी-7 देशों के शिखर सम्मेलन से अलग ऋषि सुनक से मुलाकात की। इस दौरान दोनों नेताओं ने व्यापार एवं निवेश और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी जैसे व्यापक क्षेत्रों में द्विपक्षीय सहयोग को और मजबूत करने पर सहमति भी जताई। मोदी ने ट्वीट कर कहा, 'प्रधानमंत्री ऋषि सुनक के साथ मुलाकात बहुत सार्थक रही। हमने व्यापार, इनोवेशन, विज्ञान और ऐसे अन्य क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने पर चर्चा की है।' विदेश मंत्रालय ने ट्वीट कर जानकारी दी है कि, 'व्यापक रणनीतिक साझेदारी को बढ़ावा को लेकर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने हिरोशिमा में ब्रिटेन के प्रधानमंत्री ऋषि सुनक के साथ सार्थक बातचीत की। दोनों नेताओं ने भारत-ब्रिटेन के बीच एफटीए (मुक्त व्यापार समझौता) से जुड़ी वाताओं में हुई प्रगति का जायजा लेने के साथ-साथ द्विपक्षीय **रणनीतिक साझेदारी की समीक्षा की।'**

'व्यापक क्षेत्रों में सहयोग को गहरा करने पर सहमति व्यक्त की'

मंत्रालय ने कहा कि मोदी और सुनक ने व्यापार एवं निवेश, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, उच्च शिक्षा और दोनों देशों के नागरिकों के बीच परस्पर संबंधों जैसे व्यापक क्षेत्रों में सहयोग को गहरा करने पर सहमति व्यक्त की। विदेश मंत्रालय ने कहा कि मोदी और सुनक ने भारत की जी-20 अध्यक्षता पर भी चर्चा की। मंत्रालय ने कहा कि मोदी ने जी-20 शिखर सम्मेलन के लिए सुनक का नई दिल्ली में स्वागत करने की उत्सुकता जताई। भारत और ब्रिटेन पिछले साल जनवरी से एफटीए पर बातचीत कर रहे हैं, जिसका मकसद एक ऐसे व्यापक समझौते पर सहमति बनाना है, जिससे दोनों देशों के बीच 2022 में अनुमानित 34 अरब पाउंड के द्विपक्षीय व्यापार संबंधों में उल्लेखनीय वृद्धि होने की उम्मीद है। ब्रिटिश सरकार के आधिकारिक आंकड़ों के मुताबिक भारत 2022 की तीसरी तिमाही के अंत में बीती चार तिमाहियों में ब्रिटेन का 12वां सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार था। दोनों देशों के बीच हुआ व्यापार ब्रिटेन के कुल व्यापार का 2.1 प्रतिशत था।

पापुआ न्यू गिनी पहुंचे मोदी, मरापे ने पांव छूकर किया स्वागत

नई दिल्लीः प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी तीन देशों की यात्रा के दूसरे चरण में रविवार को पापुआ न्यू गिनी पहुंचे। किसी भारतीय प्रधानमंत्री की पापुआ न्यू गिनी की यह पहली यात्रा है। जापान से करीब साढ़े 7 घंटे की यात्रा के बाद प्रधानमंत्री विमान से पोर्ट मोरेस्बी पहुंचे, जहां पापुआ न्यू गिनी में उनकी अगवानी प्रधानमंत्री जेम्स मारापे ने की। प्रधानमंत्री के विमान से उतरने के बाद दोनों नेता पहले गले मिले। उसके बाद प्रधानमंत्री मारापे ने प्रधानमंत्री मोदी के पांव स्पर्श करने का प्रयास किया, जिसके बाद प्रधानमंत्री ने उन्हें पीठ पर थापी देते हुए गले लगा लिया। इसके बाद उनका पूर्ण औपचारिक स्वागत किया गया। प्रधानमंत्री मोदी को गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया। आम तौर पर देश में सूर्यास्त के बाद आने वाले किसी भी नेता का औपचारिक स्वागत नहीं किया जाता, लेकिन प्रधानमंत्री मोदी के लिए एक विशेष अपवाद के तौर पर उनका पूर्ण औपचारिक स्वागत किया गया। विदेश मंत्रालय के अनुसार कल पापुआ न्यू गिनी के प्रधानमंत्री जेम्स मारापे के साथ संयुक्त रूप से भारत-प्रशांत द्वीप समूह सहयोग मंच के तीसरे शिखर सम्मेलन की मेजबानी करेंगे। पापुआ न्यू गिनी में प्रधानमंत्री मोदी के द्विपक्षीय कार्यक्रम होंगे। इसमें गवर्नर-जनरल सर बॉब डाडे और प्रधानमंत्री जेम्स मारापे के साथ बैठकें शामिल हैं। उल्लेखनीय है कि 2014 में लॉन्च किए गए इस मंच में भारत और 14 प्रशांत द्वीप देश शामिल हैं।

दो हजार रुपये के नोट बदलते वक्त फॉर्म भरने और आईडी दिखाना जरूरी नहीं: एसबीआई

नई दिल्लीः देश और सार्वजनिक क्षेत्र के सबसे बड़े स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (एसबीआई) ने दो हजार रुपये के नोट बदलने के लिए गाइड लाइन जारी की है। एसबीआई ने बैंक ने कहा कि नोट बदलने के लिए किसी पहचान पत्र (आईडी) दिखाने की जरूरत नहीं है। इसके लिए कोई फॉर्म भी नहीं भरना होगा। एक बार में 10 नोट बदले जा सकेंगे। एसबीआई ने रविवार को जारी एक नोटिफिकेशन में यह जानकारी दी है। स्टेट बैंक ने यह स्पष्टीकरण सोशल मीडिया पर चल रहीं उन अफवाहों के बाद जारी किया है, जिनमें दावा किया जा रहा था कि 2,000 हजार रुपये के नोट को बदलवाने के लिए आईडी प्रूफ, आधार कार्ड दिखाने के साथ ही एक फॉर्म भी भरना होगा।

माउंट एवरेस्ट से लौटते समय भारतीय मूल व सिंगापुर का युवा पर्वतारोही लापता

सिंगापुर,। दुनिया की सबसे ऊंची पर्वत चोटी माउंट एवरेस्ट से शुक्रवार को वापसी के समय भारतीय मूल का युवा पर्वतारोही श्रीनिवास सैनी दत्तात्रेय (39) लापता हो गए हैं। श्रीनिवास सिंगापुर की रियल एस्टेट कंपनी ह्यजोंस लैंग लासेलह्ल में कार्यकारी निदेशक हैं। वह 1 अप्रैल को नेपाल से दल के साथ माउंट एवरेस्ट के लिए रवाना हुए थे। उन्हें 4 जून को लौटना था। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक श्रीनिवास की पत्नी सुषमा सोमा ने कहा है।

370 हटने तक चुनाव नहीं लड़ूंगी: महबूबा

बेंगलुरुः जम्मू कश्मीर की पूर्व सीम और पीडीपी प्रमुख महबूबा मुफ्ती ने रविवार को बेंगलुरु में ऐलान किया है कि जब तक जम्मू-कश्मीर में आर्टिकल 370 बहाल नहीं हो जाता, वे विधानसभा चुनाव नहीं लड़ेंगी, लेकिन उनकी पार्टी चुनाव में अपना उम्मीदवार उतारेगी। महबूबा ने बेंगलुरु में पत्रकारों से चर्चा के दौरान कर्नाटक सरकार के शपथग्रहण में कई दलों को न बुलाने पर कहा कि कांग्रेस को अभी और त्याग करना होगा, वरना लोगों के पास दूसरे विकल्प भी मौजूद हैं। इतना हीं नहीं उन्होंने बीजेपी पर आरोप लगाते हुए कहा कि बीजेपी नहीं चाहती है कि देश में कोई विपक्ष हो। जिस तरह दिल्ली सरकार को शक्तिहीन कर दिया गया है। वैसा सबके साथ होने जा रहा है।

जी20 को बीजेपी ने हाईजैक कर लिया : जम्मू में होने वाला जी20 समिट, देश का इवेंट है लेकिन बीजेपी ने इसे हाईजैक कर लिया है। उन्होंने लोगो को कमल से बदल दिया है, जबकि लोगो को देश से जुड़ा होना चाहिए था, किसी पार्टी का नहीं... यह सार्क ही है जो इस क्षेत्र में हमारे देश का नेतृत्व स्थापित करेगा। यहां सार्क शिखर सम्मेलन क्यों नहीं होता ताकि हमारी समस्या का समाधान हो।

जम्मू-कश्मीर खुली जेल बन गया हैः जम्मू-कश्मीर का विशेष दर्जा संघवाद का सबसे अच्छा उदाहरण है। लेकिन अनुच्छेद 370 को खत्म करके राज्य को तोड़कर कमजोर कर दिया गया। चीन अब जम्मू-कश्मीर के मामलों में हस्तक्षेप कर रहा है जो केवल पाकिस्तान करता था। धारा 370 को हटाकर बीजेपी ने यही किया है।

रील बनाने के लिए राष्ट्रीय पक्षी मोर के पंख नोचे

कटनीः वीडियो रील बनाकर सोशल मीडिया पर पोस्ट करने के लिए एक युवक ने राष्ट्रीय पक्षी मोर के पंख नोच दिए। उसके साथी ने वीडियो बनाया और सोशल मीडिया पर पोस्ट कर दिया। वीडियो वायरल होने के बाद वन विभाग ने अज्ञात पर केस दर्ज किया है। आरोपी का पता नहीं चला है। मामला मध्यप्रदेश के कटनी का है। वायरल वीडियो में मोर के साथ एक युवक और युवती बैठे नजर आ रहे हैं। एक अन्य युवक भी नजदीक ही ऊंचाई पर बैठा दिख रहा है। वीडियो में युवक मोर के पंख नोच रहा है। वह हंसते हुए कैमरे के सामने देख रहा है।

रीठी क्षेत्र में दिखा आरोपीः वन विभाग के अधिकारियों ने बताया कि ये युवक जिले के रीठी क्षेत्र में दिखाई दिया है। इसलिए वहां तलाश शुरू की। वहीं वीडियो में जो बाइक दिख रही है, उसका मालिक परिवहन विभाग के रजिस्ट्रेशन नंबर के अनुसार डिंडौरी निवासी जयमनीषा बिहिलया है। विभाग वाहन मालिक से भी संपर्क करने की कोशिश कर रहा है। आरोपी युवक का पता लगाकर उसकी गिरफ्तारी के प्रयास किए जा रहे हैं।

सेना की खुफिया जानकारी पाकिस्तान पहुंचा रहा था; विदेशी मेहमानों का गुलमर्ग दौरा रद्द

जम्मू-कश्मीर में जैश-ए-मोहम्मद का आतंकी अरेस्ट

श्रीनगरः जम्मू-कश्मीर के श्रीनगर में 22 मई से जी-20 बैठक शुरू हो रही है। उससे एक दिन पहले एनआईए ने जैश-ए-मोहम्मद के एक आतंकी को अरेस्ट किया है। आतंकी की पहचान कुपवाड़ा जिले के मोहम्मद उबैद मलिक के रूप में हुई है। उबैद पाकिस्तान स्थित जैश-ए-मोहम्मद कमांडर के लगातार संपर्क में था। वह आतंकी संगठन को भारतीय सैनिकों और सुरक्षा बलों की आवाजाही के बारे में गुप्त जानकारी पहुंचा रहा था। इस बीच भारत ने सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए जी-20 मेहमानों का गुलमर्ग दौरा रद कर दिया। खबर थी कि आतंकी वहां किसी बड़ी साजिश की प्लानिंग कर रहे हैं। अब एक आतंकी के पकड़े जाने के बाद श्रीनगर में सिक्यारिटी और टाइट कर दी गई। जी-20 की बैठक शेर-ए-कश्मीर इंटरनेशनल कन्वेंशन सेंटर में होनी है।

एनएसजी और मरीन कमांडो, स्कैनर और खोजी कुत्ते भी तैनातः कड़ी सुरक्षा के तहत एलीट एनएसजी और मरीन कमांडो श्रीनगर में तैनात किए गए हैं। कार्यक्रम स्थलों की सुरक्षा में पुलिस और अर्धसैनिक बलों की भी मदद ली जा रही है। इसके अलावा विस्फोटक या आईईडी की जांच के लिए स्कैनर और खोजी कुत्तों को लगाया गया है। अधिकारियों के मुताबिक, शहर से गुजरने वाले वाहनों की जांच की जा रही है ।

सिद्धारमैया कैबिनेट के 9 मंत्री करोड़पति, सब पर क्रिमिनल केस

नई दिल्लीः 20 मई को कर्नाटक में सिद्धारमैया कैबिनेट में शपथ लेने वाले सभी 9 मंत्रियों पर क्रिमिनल केस दर्ज हैं। सबसे ज्यादा 19 केस डिप्टी सीएम डीके शिवकुमार पर और 13 केस मुख्यमंत्री सिद्धारमैया पर दर्ज हैं। इतना ही नहीं, ये सभी मंत्री करोड़पति भी हैं। यह जानकारी कर्नाटक इलेक्शन वॉच और एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स रिपोर्ट में दी गई है। यह रिपोर्ट कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया सरकार के नौ मंत्रियों के शपथपत्रों के आधार पर तैयार की गई है। सभी नौ मंत्रियों ने अपने खिलाफ आपराधिक मामलों की जानकारी भी दी है। इनमें से चार पर गंभीर आपराधिक मामले दर्ज हैं।

ये हैं सिद्धारमैया कैबिनेट के 9 मंत्रीः 20 मई को कर्नाटक में मुख्यमंत्री और कैबिनेट के 9 मंत्रियों का शपथ ग्रहण समारोह हुआ है। जिसमें डीके शिवकुमार डिप्टी सीम बनाए गए। इन सभी को राज्यपाल थावरचंद गहलोत ने शपथ दिलाई। सीएम सिद्धारमैया कुरुबा से और डिप्टी सीएम डीके शिवकुमार वोक्कालिगा समुदाय से आते हैं। इनके अलावा, डॉ. जी परमेश्वर, केएच मुनियप्पा, प्रियांक खड़गे एससी से हैं। सतीश जारकीहोली एसटी, एमबी पाटिल लिंगायत कम्युनिटी, केजी जॉर्ज क्रिश्चियन, जमीर अहमद खान मुस्लिम और रामालिंगा रेड्डी रेड्डी समुदाय से हैं। कर्नाटक के उपमुख्यमंत्री डीके शिवकुमार सबसे अमीर कैबिनेट मंत्री हैं क्योंकि उन्होंने कुल 1413.80 करोड़ रुपए की संपत्ति घोषित की है। जबकि कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे के बेटे प्रियांक खड़गे सबसे कम घोषित कुल संपत्ति वाले मंत्री हैं। चित्तपुर से विधायक प्रियांक के पास महज 16.83 करोड़ रुपए की संपत्ति है।

नए संसद भवन का उद्घाटन राष्ट्रपति करें...पीएम नहीं: राहुल गांधी

कांग्रेस ने कहा कि 28 मई को सावरकर जयंती, इस दिन इनॉगरेशन राष्ट्र निर्माताओं का अपमान

नई दिल्लीः 28 मई को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी संसद की नई बिल्डिंग का उद्घाटन करेंगे। राहुल गांधी ने इसका विरोध किया है। राहुल ने अपने सोशल मीडिया हैंडल पर लिखा- संसद के नए भवन का उद्घाटन राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को ही कराना चाहिए, प्रधानमंत्री को नहीं। उधर, तमाम विपक्षी दल और कांग्रेस ने नई बिल्डिंग के इनॉगरेशन की तारीख पर सवाल उठाए हैं। कांग्रेस ने कहा कि 28 मई को हिंदुत्व विचारक विनायक दामोदर सावरकर की जयंती है, ऐसे में इसी दिन नए संसद भवन का उद्घाटन करना राष्ट्र निमार्ताओं का अपमान है। 18 मई को लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला ने प्रधानमंत्री को नए भवन का उद्घाटन करने का निमंत्रण दिया था।

862 करोड़ रुपए में तैयार हुआः 862 करोड़ रुपए में बने नए संसद भवन का काम पूरा हो गया है। प्रधानमंत्री ने 10 दिसंबर 2020 को इसकी आधारशिला रखी थी। नए संसद भवन का निर्माण 15 जनवरी 2021 को शुरू हुआ था। इस बिल्डिंग को पिछले साल नवंबर में पूरा हो जाना था। सेंट्रल विस्टा प्रोजेक्ट के तहत बनी ये बिल्डिंग प्रधानमंत्री का ड्रीम प्रोजेक्ट है। इसे 28 महीने में बनाया गया।

4 मंजिला बिल्डिंग, भूकंप का असर नहींः पुराना संसद भवन 47 हजार 500 वर्गमीटर में है, जबकि नई बिल्डिंग 64 हजार 500 वर्ग मीटर में बनाई गई है। यानी पुराने से नया भवन 17 हजार वर्ग मीटर बड़ा है।

नया संसद भवन 4 मंजिला है। इसमें 3 दरवाजे हैं, इन्हें ज्ञान द्वार, शक्ति द्वार और कर्म द्वार नाम दिया गया है। सांसदों और श्क्ढ२ के लिए अलग एंट्री है। इस पर भूकंप का असर नहीं होगा। इसका डिजाइन ल्ड्ढ डिजाइन, प्लानिंग एंड मैनेजमेंट प्राइवेट लिमिटेड ने तैयार किया है। इसके आर्किटेक्ट बिमल पटेल हैं।

विपक्ष एकजुट होकर भाजपा के अध्यादेश को संसद में हराए: केजरीवाल

नई दिल्लीः बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव ने रविवार को दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल से घर आकर मुलाकात की और भाजपा की केंद्र सरकार द्वारा लाए गए अध्यादेश के खिलाफ आप की सरकार का समर्थन करने की घोषणा की। इन नेताओं के बीच करीब एक घंटे तक केंद्र के अध्यादेश समेत अन्य राजनीतिक मुद्दों पर चर्चा हुई। इसके बाद मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल, नीतिश कुमार और तेजस्वी यादव ने मीडिया के माध्यम से दिल्ली और देश की जनता के समक्ष अपनी बात रखी। केजरीवाल ने दिल्ली की जनता के साथ खड़े होने के लिए दोनों नेताओं का धन्यवाद करते हुए कहा कि दिल्ली में केंद्र सरकार की तानाशाही समेत कई राजनीतिक मुद्दों पर चर्चा हुई। विपक्ष को एकजुट होकर हमें केंद्र की भाजपा सरकार के इस तानाशाही अध्यादेश को संसद में हराना होगा। अगर राज्यसभा में यह बिल हार गया तो वो 2024 का सेमी फाइनल होगा और पूरे देश में संदेश चला जाएगा कि 2024 में भाजपा की सरकार जा रही है। इस बीच मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बावजूद दिल्ली की चुनी हुई सरकार को काम करने से रोकने पर आश्चर्य जताया और पूरे देश में भाजपा की केंद्र सरकार के खिलाफ अभियान चलाने की बात कही। मीडिया से बात-चीत करते हुए बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट ने बहुत अच्छा फैसला दिया है। कोर्ट के फैसले के बाद केंद्र सरकार द्वारा जो कुछ भी करने की कोशिश हो रही है, यह एक विचित्र बात है। चुनी हुई सरकार जब बनती है तो उसे संविधान में कुछ अधिकार दिए गए हैं। उस अधिकार को कोई कैसे हटा सकता है। ये किस तरह हो रहा है ? इसलिए हम लोग कह रहे हैं कि पूरे देश में विपक्ष एकजुट हो, ताकि इनकी मनमानी को रोका जा सके। दिल्ली की जनता ने अरविंद केजरीवाल को प्रचंड बहुमत दिया है। पूरा देश इस बात को मानता है कि ह्यआपह्ल की सरकार दिल्ली में बहुत अच्छा काम कर रही है। सुप्रीम कोर्ट का फैसला भी आ गया।

चीन ने हिरोशिमा संयुक्त बयान पर राजनयिक विरोध दर्ज कराया

बीजिंग, । चीन ने जी-7 देशों के हिरोशिमा संयुक्त बयान पर राजनयिक विरोध दर्ज कराया है। ड्रैगन ने इन देशों पर बीजिंग के आंतरिक मामलों में दखल देने का आरोप जड़ा है। उल्लेखनीय है कि शनिवार को जारी हिरोशिमा संयुक्त बयान में ताइवान, पूर्वी और दक्षिण चीन सागर में चीन की आक्रामकता को लेकर गंभीर चिंता व्यक्त की गई है।

जापान के हिरोशिमा में हुए जी-7 देशों के शिखर सम्मेलन में चीन से संबंधित मुद्दे व्यापक तौर पर उठाए गए। जी-7 में कनाडा, फ्रांस, जर्मनी, इटली, जापान, ब्रिटेन और अमेरिका शामिल हैं। संयुक्त बयान का एक अहम हिस्सा चीन को लेकर है। इसमें चिंता जताते हुए यह भी कहा गया है कि वे चीन के साथ ह्यरचनात्मक और स्थिर संबंधह्ल चाहते हैं।

जी-7 देशों ने हिरोशिमा संयुक्त बयान में तिब्बत, हांगकांग और शिनजियांग सहित चीन में मानवाधिकारों के हनन पर चिंता व्यक्त की है। शिनजियांग में बीजिंग पर हजारों उइगर मुसलमानों को जबरन श्रम शिविरों में बंद रखने का आरोप है।

चीन के विदेश मंत्रालय के एक प्रवक्ता ने हिरोशिमा संयुक्त बयान जारी होने के कई घंटे बाद देररात बयान जारी किया। इसमें कहा गया है कि चीन की गंभीर चिंता के बावजूद जी-7 ने बीजिंग को बदनाम किया। यह सार्वजनिक रूप से चीन के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप है।

खबर संक्षेप

समाजसेविक के पिता के निधन पर क्षेत्र में शोक की लहर

सिरसा। प्रयागराज मेजा क्षेत्र के दलई का पूरा रामनगर निवासी समाजसेवी देवेश कुमार यादव (एडोकेट) के पिता कौशलेश यादव (अधिकारी) का दिन बुधवार समय 7 बजकर 30 मिनट के लगभग निधन हो गया। वे 62 वर्ष के थे और लंम्बे समय से केंसर की बीमारी से पीड़ित चल रहे थे। उनके निधन की खबर पाते ही उनके इआवास पर शुभचिंतको की भीड़ उमड़ पड़ी। देर शाम तक काफी संख्या में क्षेत्र के व्यपारियो और बुद्धिजीवी वर्ग व राजनैतिक वर्ग उनके आवास पर जाकर श्रद्धासुमन अर्पित किये। उनका अंतिम संस्कार छतवां गंगा घाट पर किया गया।

मेजा में 12 से अधिक लोग चेचक की चपेट में

स्वास्थ्य विभाग की टीम ने की जांच-पड़ताल प्रधान बोले- चेचक से गांव में दहशत

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। मेजा के मांडा थाना क्षेत्र के ग्राम पंचायत नहवाई के मानपुर गांव में चेचक (चिकन पॉक्स) बीमारी की चपेट में आने से दर्जनों ग्रामीण बीमार हो गए। इससे समूचे गांव में भय का माहौल बना हुआ है। सूचना पर पहुंची स्वास्थ्य विभाग की टीम ने जांच कर मरीजों को आवश्यक दवाएं वितरित कर साफ-सफाई रखने को कहा।मांडा थाना क्षेत्र के ग्राम पंचायत नहवाई के मानपुर गांव में बीते तीन दिनों से चेचक बीमारी ने पांव पसार रखा है। इससे दर्जनों ग्रामीण चपेट में आकर बीमार अवस्था के पड़े हैं। बीमारी को बढ़ता एवं मरीजों की जनसंख्या में बढ़ोत्तरी देख ग्रामीणों ने इसकी जानकारी मांडा सीएचसी के स्वास्थ्य कर्मचारियों को दिया। सूचना पर सीएचसी मांडा के अधीक्षक डॉ. अजीत सिंह ने डॉ. विजय कुमार की टीम गठित कर तत्काल उस गांव में भेजा। टीम ने गांव पहुंचकर चेचक बीमारी से ग्रसित मरीजों का इलाज करते हुए आवश्यक दवाएं वितरित की।

चेचक को लेकर गांव में फैली है दहशत

चेचक को लेकर गांव के प्रधान मंजूर अली ने बताया कि दर्जनों ग्रामीणों के चेचक बीमारी की चपेट में आने से गांव में दहशत है। स्वास्थ्य विभाग की टीम को सजग रहना चाहिए। ताकि अन्य ग्रामीण बीमारी की चपेट में न आ सकें। साथ ही साफ सफाई की व्यवस्था जल्द दुरुस्त करा दी जाएगी।

दबंगों ने किराना व्यापारी को लाठी डंडे से पीटा आधा दर्जन पर केस, तीन को पुलिस ने किया गिरफ्तार

मऊआइमा। मऊआइमा कस्बा के मोहल्ला महत्वना में दबंगो ने एक राय होकर एक किराना व्यपारी पर लाठी डंडा सरिया से जानलेवा हमला कर दिया जिससे वह बुरी तरह घायल होकर बेहोश हो गया। बीच बचाव में कई को चोटें भी आयी है। दबंगों ने कई को जान से मारने की धमकी भी दी। पुलिस ने आधा दर्जन को नामजद करते हुए तीन को गिरफ्तार कर लिया जबकि बेहोश व्यापारी को तेजबहादुर स्पू में भर्ती कराया गया है। मऊआइमा कस्बा के मोहल्ला महतवाना कोट निवासी रहमत उल्ला पुत्र अब्दुल गफ्फार प्लाई का कारोबार करते हैं। आरोप है कि मोहल्ले के दबंग प्रवृत्ति के लोग उसकी दुकान में आकर लाठी डंडा सरिया से हमला किया। बीच बचाव करने पर दबंगों ने शफी उल्ला ,मोईनुद्दीन अख्तर ,वामिक, जमील उद्दीन आदि को मारे पीटे तथा मोहल्ला के अतीक समी, उबैदुल्ला को मार डालने की धमकी भी दिए। सूचना पर पहुंची पुलिस ने तुरन्त मुख्य आरोपी अंसार अहमद, जुल्फिकार अहमद, इफ्तिखार अहमद को हिरासत में ले कर बेहोश व्यापारी रहमत उल्ला को पहले सामुदायिक स्वास्थ्य पर भेजा गया जहां डाक्टरों के जवाब देने पर बेली में भर्ती कराया गया है। रहमत उल्ला पुत्र अब्दुल गफ्फार की तहरीर पर मऊआइमा पुलिस ने अंसार अहमद ,इस्तियाक अहमद ,इफ्तिखार अहमद पुत्रगण इम्तियाज तथा अंसार के पुत्र मोहम्मद बेलाल, शाहिद बाबू ,जुल्फिकार अहमद तथा चार अज्ञातों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है तथा पुलिस हिरासत में अंसार अहमद,जुल्फिकार, इफ्तिखार अहमद से पुलिस पूछताछ कर रही है।

इसी प्रकार मऊआइमा के चकफात्मा उर्फ माधोपुर गांव में दबंगों ने हरिलाल पुत्र स्व. भगौतीदीन के अनुसार विपक्षी उसकी जमीन पर दरवाजा लगा रहे थे दरवाजा लगाने से मना करने पर विपक्षियों ने लाठी, डंडा, हथौडा, रम्भा आदि लेकर घर पर हमला कर दिए। चरही तोडने के बाद चारा मशीन क्षतिग्रस्त कर दिए। हरिलाल का आरोप है कि जब वह जान बचा कर घर में घुस गया तो घर के अन्दर घुस कर सारा गृहस्थी का सामान तोडते हुए गालियां देते हुए जान से मारने की धमकी दिए जबतक 112 नम्बर पहुंचते ही सभी भाग गए। हरीलाल ने मऊआइमा थाने में सुभाष चन्द्र ,शिवपूजन, सुरेश कुमार, प्रेमचंद्र, सिकंदर कुमार, नीरज कुमार, राम सिंह, अमर चन्द्र ,रामचन्द्र, राहुल कुमार, आशीष कुमार, वीरेंद्र कुमार, हनुमन्त,महेंद्र कुमार, गुलाब चंद्र तथा अन्य अज्ञातों के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दिया है।

अपने हिस्से की जमीन मांगने पर मारपीट कर किया जख्मी

मऊआइमा। अपने हिस्से की जमीन मांगने पर सगे बडे भाई और उसके बेटे ने लाठी डंडो से मार पीट कर बुरी तरह जख्मी कर दिए तथा गालियां देते हुए जान से मारने की धमकी दिए। मऊआइमा कस्बा के मोहल्ला अबूहीम पटटी निवासी सरफराज माजिद पुत्र स्वर्गीय माजिद के मुताबिक उसके हिस्से की जमीन बडे भाई ने हडप लिया है। सरफराज माजिद ने मऊआइमा थाने में तहरीर दे कर अपने छोटे भाई शहनवाज माजिद और भतीजे इकबाल अहमद के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दिया है।

न्यूज झरोखा

सरकार पिछड़े नेताओं का सहारा लेकर लगातार आरक्षण पर कर रही प्रहार : पवन सिंघाल पटेल

रत्योरा। उत्तर प्रदेश की सरकार लगातार पिछड़ों के आरक्षण पर प्रहार कर आर्थिक रूप से उन्हें तोड़ने का प्रयास कर रही है। जितनी सरकारी नौकरियां उत्तर प्रदेश सरकार की तरफ से युवाओं के लिए निकाली जाती हैं उन नौकरियों में लगातार पिछड़ों के आरक्षण को पूरी तरह खत्म किया जा रहा है। कुछ महीने पहले 69000 शिक्षक भर्ती निकली थी जिसमें पिछड़ों के आरक्षण को पूरी तरह समाप्त कर दिया गया था। आरक्षण को लेकर लगातार उत्तर प्रदेश के युवा लखनऊ में धरना प्रदर्शन कर रहे हैं। लेकिन सरकार और सरकार में बैठे सहयोगी दल के लोग अब तक इसका निराकरण नहीं कर सके। सरकार में बैठे भारतीय जनता पार्टी व सहयोगी दल के पिछड़े समाज के नेता प्रदेश के लोगों को बरगला कर मुद्दे को ठंडे बस्ते में डालने का पूरा जिम्मा ले लेते हैं। यह बातें युवा नेता पवन सिंघाल पटेल ने पिछड़ों के आरक्षण के साथ किए जा रहे छेड़छाड़ को लेकर कही है। आगे कहा कि अभी हाल में ग्राम पंचायत अधिकारी के कुल 1468 पद सृजित किए गए हैं। जिसमें पिछड़ों को 27% आरक्षण का लाभ मिलना चाहिए लेकिन सरकार में बैठे पिछड़े समाज के नेताओं के रहमोंकरम पर पिछड़ों को सिर्फ 139 पद दिया जा रहा है, जो पूरी तरह गलत है। इसके लिए पिछड़े समाज के तमाम जिंदा लोगों को सरकार से और सरकार में बैठे अपने समाज के नेताओं से अवश्य सवाल करना चाहिए। सिर्फ बरगलाने के लिए एक बार बयान देना उनके स्वार्थी और गुलामगिरी वाली मानसिकता को दशार्ता है।

भारद्वाज गुरुकुलम संस्थान में मनाई गई राजीव गांधी की पुण्यतिथि

सहसों। क्षेत्र के रुदापुर देवनहरी स्थित भरद्वाज गुरुकुलम संस्थान में रविवार को संस्थान के निदेशक अधिवक्ता देवराज उपाध्याय के अध्यक्षता में कंप्यूटर क्रांति के जनक एवं आधुनिक भारत के निमार्ता पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न स्वर्गीय राजीव गांधी जी की पुण्यतिथि पर उन्हें याद कर उनके तैलीय चित्र पर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए पुण्य तिथि मनाई गई। इस अवसर पर उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए अधिवक्ता देवराज उपाध्याय ने कहा कि आज समूचा भारत राजीव गांधी को सच्ची श्रद्धांजलि के साथ शत शत नमन करते हुए उनके लहू का ऋणी रहेगा। उन्होंने भारत के विभिन्न मंत्रालयों का उत्तरदायित्व बखूबी जिम्मेदारी से निर्वहन करते हुए निभाया है। देश उनके कृतित्व और व्यक्तित्व से आज भी शिक्षा ले रहा है। मौके पर प्रमुख रूप से कृपाशंकर पांडेय, सुभाषचन्द्र विश्वकर्मा, बीडीसी राम सिंह, रमेश चन्द्र मिश्रा, गौविंद सिंह, दिलीप कुमार दूबे, आशुतोष मिश्रा, विनय, विपुल एवं संजय शर्मा सहित आदि उपस्थित रहे।

यूपी बोर्ड 10वीं और 12वीं में बच्चो ने रचा इतिहास

सिरसा। उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद द्वारा हाई स्कूल और इंटरमीडिएट 2023 का परीक्षा फल घोषित कर दिया गया। जिसमें मेजा क्षेत्र के ब्लाक उरूवा अंतर्गत श्री के०एस० चौधरी कन्या इंटर कॉलेज छतवां सिरसा प्रयागराज में बच्चों ने रचा इतिहास। कक्षा 12वीं में अंशिका यादव 399 (88%), प्रतीक्षा सिंह 399 (80%), कविता यादव 395 (79%), संध्या सरोज 380 (76%), आराध्या तिवारी 379 (76%), कक्षा 10वीं में एकता यादव 512 (85.3%), मुस्कान राय 491 (82%), संभावी मिश्रा 482(80.3%), रिया गुप्ता 469 (78%), रूबी पाल 459 (76.5%), कृति पाल 458 (76.3%), जाह्नवी द्विवेदी 458(76.3%), आयशा 457 (76.1%), आराध्या पटेल 450(75%) सफलता हासिल किया। विद्यालय परिवार और गुरुजनों की ओर से सभी बच्चों को बोर्ड परीक्षा में सफलता प्राप्त करने पर बधाई देते हुए जीवन मे आगे बढ़ने का आशीर्वाद दिया गया।

मेजा में सरकारी योजना के नाम पर की गई ठगी

साइबर ठगों ने युवक से मांगा बार कोड, ऐप डाउनलोड करने पर 20980 उड़ाए

प्रयागराज। मेजा में साइबर क्राइम का मामला तेजी से बढ़ता जा रहा है। फोन के जरिए सीधे साधे लोगों को झांसा देकर के उन्हें शिकार बनाया जा रहा है। आए दिन कोई ना कोई व्यक्ति साइबर ठगों के झांसे में फंसकर अपनी जमा पूंजी गंवा रहे हैं। मेजा में भी इसी तरह साइबर ठगी का एक और मामला प्रकाश में आया है। यहां भुक्तभोगी ने साइबर सेल में लिखित शिकायत करते हुए आरोपियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है।मिली जानकारी के अनुसार, मेजा थाना क्षेत्र के अमिलिया कला गांव शैलेश कुशवाहा पुत्र लालचंद कुशवाहा के मोबाइल पर फोन आया कि मातृत्व योजना के तहत खाते में जो पैसा डालने की बात कही गई थी। खाता ठीक न होने के कारण नहीं जा रहा। इस दौरान साइबर ठगों ने युवक से दूसरे नंबर का बार कोड मांगा और और प्ले स्टोर से एक ऐप डाउनलोड करने को की बात कह कर खाते से 20980 उड़ा दिए।

मामले की जांच में जुटी पुलिस : भुक्तभोगी के मोबाइल पर जैसे ही पैसे कटने का मैसेज आया तो उसके होश उड़ गए। भुक्तभोगी ने साइबर सेल में अज्ञात आरोपियों के खिलाफ तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की है। मेजा थानाध्यक्ष ज्ञानेश्वर मिश्र ने बताया कि पीड़ित की तहरीर पर जांच कराई जा रही है। जल्द ही कार्रवाई की जाएगी।

नशेड़ी बाइक सवार युवकों की टक्कर से वृद्धा गंभीर

शंकरगढ़। शनिवार की रात लगभग 12 बजे बाइक सवार दो युवकों ने एक वृद्धा को टक्कर मार दी। इस हादसे के बाद बाइक सवार दोनों युवक भी गिरकर चोटिल हो गए। हादसे के बाद वृद्धा के शोर पर घरवालों की नींद खुल गई और वृद्धा समेत बाइक सवार युवकों को भी अस्पताल ले जाया गया। यह हादसा शिवराजपुर चौराहे पर हुआ। जानकारी के मुताबिक शंकरगढ़ थाना क्षेत्र के शिवराजपुर चौराहा निवासी राजकली (70) पत्नी शिव प्यारे का मकान सड़क पर ही है। बीती रात वह लघुशंका के लिए घर से बाहर निकली थीं। इसी दरम्यान बरगढ़ कीतरफ आ रहे बाइक सवार युवकों ने राजकली को जोरदार टक्कर मार दी। टक्कर लगने से राजकली के हाथ और पैर में चोटें आई हैं। इस हादसे के बाद असंतुलित होकर बाइक सवार भी गिरपड़े और दोनों चोटिल हो गए, जिसमें एक को ज्यादा चोटें आई हैं। हादसे की सूचना पर पहुंची पुलिस ने तीनों घायलों को 108 एंबुलेंस से सीएचसी शंकरगढ़ पहुंचाया, जहां तीनों का उपचार हुआ। राजकली की हालत को देखते हुए एसआरएन रेफर कर दिया गया है। बाइक सवार युवकों की पहचान विकास पाल (22) पुत्र मुलाई पाल (निवासी जारी) और मुकेश (22) पुत्र लक्ष्मण (निवासी सतना, मध्य प्रदेश) के रूप में हुई। शंकरगढ़ पुलिस के मुताबिक दोनों हादसे के समय नशे में धुत थे और बरगढ़ की तरफ से प्रयागराज लौट रहे थे।

चोरों ने लाखों रुपए नकदी समेत लाखों के जेवरात उड़ाये

अखंड भारत संदेश

क्षेत्र के बेरी गांव में बीती देर रात्रि हुई वारदात, 1 जून को भुक्तभोगी के बेटी की आनी है बारात

रत्योरा। कोरांव थाना क्षेत्र के बेरी गांव में बीती देर रात्रि को चोरों ने घर के पीछे के दरवाजे से घुसकर घर के अंदर रखे बाक्स घर से दूर खेत में उठा ले गए। जहां बक्सों को तोड़कर उसमें रखे नकदी रुपए जेवरात एवं कीमती कपड़े लेकर फरार हो गए। जानकारी के मुताबिक बाबूलाल पुत्र गिरजा प्रसाद निवासी बेरी का परिवार प्रतिदिन की तरह बीती शनिवार की रात्रि घर के बाहर सो रहे थे। रात्रि में चोर घर में कब घुसे और कब बॉक्स उठाकर खेत में चले गए। इस बात की जानकारी किसी भी परिजनों को नहीं हो सकी। सुबह जब महिलाएं खेत की ओर गईं तो देखा कि टूटे हुए बॉक्स खेत में पड़े हुए हैं। भुक्तभोगी ने 112 डायल कर घटना की सूचना पुलिस को दी। जिस पर पहुंची पुलिस ने घटना का स्थलीय निरीक्षण करते हुए विधिक कार्रवाई में जुट गई। भुक्तभोगी बाबूलाल ने गांव के ही मुकेश वर्मा पुत्र सुमारू को नामजद करते हुए पुलिस को तहरीर दी है। पुलिस तहरीर के आधार पर जांच पड़ताल में जुट गई है। भुक्तभोगी ने तहरीर में बताया है कि बक्से में रखे डेढ़ लाख नकद, 50 नग साड़ी, 6 नग सोने के लॉकेट, एक पायल चांदी का, एक पेटी चांदी की, 10 नग पैंट शर्ट का कपड़ा, 6 नग मीना चांदी का, चांदी के लक्षा, एक बोरी चना, एक बोरी अरहर की दाल व शादी में देने के लिए खरीदे गए 16000 के बर्तन आदि सामान उठा ले गए हैं। भुक्तभोगी बाबूलाल ने बताया कि 31 मई को बेटी की तिलक जानी है और 1 जून को बारात आनी है। जिसके लिए नकद रुपए, कपड़े, जेवरात व बर्तन इत्यादि खरीद कर घर में रखा था जिसे चोरों ने चोरी कर लिया।

काम कर लौट रहे मजदूर को मारपीट कर किया घायल

अखंड भारत संदेश

सहसों। बदनाम गांव निवासी हजारी प्रसाद सुबह घर से मजदूरी करने के लिए काम पर गया था लौटते समय रास्ते में ही रोककर रंजिसन कुछ लोगों ने मारपीट करने लगे जिसमें मारपीट के कारण हजारी प्रसाद घायल हो गया। जानकारी के अनुसार थाना सराय इनायत के बगई कला के बदनामा गांव निवासिनी रामा देवी ने सराय इनायत थाने में जाकर लिखित नामजद तहरीर देते हुए आरोप लगाया है कि उनका पुत्र हजारी प्रसाद मजदूरी करके शनिवार को सायंकाल घर लौट रहा था कि बभनकुईयां गांव के कुछ अराजक व्यक्तियों ने पुरानी रंजिश को लेकर हजारी प्रसाद से वाद-विवाद करने लगे जिसमें वाद विवाद बढ़ने पर मारपीट करने लगे जिससे मारपीट से मजदूर हजारी प्रसाद घायल हो गया। मामले में रामा देवी ने संबंधित थाने की पुलिस को नामजद तहरीर देकर कार्यवाही की मांग किया है। इस संबंध में थाना अध्यक्ष सराय इनायत ने बताया कि तहरीर मिली है मामले की जांच की जा रही है।

बारा में अवैध खनन को लेकर दो पक्षों में मारपीट

6 लोग हुए गंभीर रूप से घायल, 4 महिलाएं भी हैं शामिल

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। बारा में यमुना नदी में बालू के अवैध खनन को लेकर दो पक्षों में विवाद में जमकर लाठियां चलीं। एक ही परिवार के पांच लोग गंभीर रूप से घायल हो गई। घायलों को इलाज के लिए अस्पताल पहुंचाया गया। पुलिस पूरे मामले की जांच पड़ताल कर रही है।घटना घूरपुर थाना क्षेत्र के बसवार गांव की है। जहां पर शासन की रोक के बावजूद भी चोरी-छिपे अवैध बालू का खनन जोरों पर चल रहा है। वहीं, इसी खनन के चलते बसवार गांव के दो पक्षों में जमकर मारपीट हुई। गांव के राकेश पुत्र बडकें व राजेंद्र पुत्र मोती के बीच बालू खनन को लेकर गाली गलौज और मारपीट हुई।मारपीट में रमेश को गंभीर चोटें आई। उनका बायां पैर भी टूट गया। जबकि बीच-बचाव करने पहुंची रमेश की पत्नी उमा व दो बेटियां खुशी और पारो को भी उक्त लोगों ने जमकर पीटा, जिससे वह भी घायल हुई हैं।घायल रमेश की भाभी मातिनी देवी को भी मारा पीटा गया। मारपीट में घायल रमेश कुमार ने बताया कि उन्हें मारने वाले अशोक उनके बेटे सूरज, चंद्रमा, संजय, राम बहादुर आदि लोग जहां उनके घर पर चढ़कर के लाठी-डंडों से मारा जिससे उनका पैर भी टूट गया और उनकी दो बेटियों के साथ पत्नी व भाभी को भी गंभीर चोटें आई हैं। जबकि दूसरे पक्ष से अशोक कुमार के द्वारा आरोप लगाया गया कि रमेश के साथ में रहने वाले लोगों ने ही उन्हें मारा-पीटा हैं।घायल उमा देवी के द्वारा बताया गया कि उन्होंने घूरपुर थाना प्रभारी के नंबर पर फोन कर-के मारपीट की सूचना दी लेकिन सूचना के एक घंटे बाद भी घूरपुर पुलिस मौके पर नहीं पहुंच सकी जिसके बाद वह लोग किसी तरह से बच बचाकर थाने पर पहुंचकर अपनी शिकायत दर्ज कराएं हैं। घूरपुर थाने के उपनिरीक्षक हृदय नारायण के द्वारा बताया गया कि दोनों पक्षों की तहरीर पर जांच करने के उपरांत विधिक कार्रवाई की जा रही है। वहीं घायलों को इलाज के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र जसरा भेजा गया है।

मेजा अस्पताल में मारपीट के मामले में केस दर्ज

अखंड भारत संदेश

मेजा। सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र मेजा प्रयागराज में गत दिवस अस्पताल के कर्मचारी से मारपीट के मामले में आज आरोपी के खिलाफ मेजा पुलिस मुकदमा पंजीकृत कर जांच में जुट गई है।अस्पताल के अधीक्षक ओमप्रकाश द्वारा मेजा थाने में दी गई तहरीर के मुताबिक16 मई 23 को अपराह्न 1:30 बजे श्रृष्टि उम्र 12 वर्ष का एक्स-रे कराने के लिए आये मुन्ना यादव उर्फ गुण्डा पुत्र रामबहादुर यादव निवासी करदहा थाना मेजा व दो व्यक्ति नाम पता अज्ञात नशे में धुत होकर एक्स-रे कर्मचारियों से गाली गलौज एवं अभद्रता करते हुए राजकीय कार्यों में बाधा उत्पन्न करते हुए जान से मारने की धमकी देते हुए मार पीट करने में उतारू हो गए। हास्पिटल में दवा इलाज हेतु आये हुये कुछ लोगों व हास्पीटल कर्मचारियो के बीच-बचाव करने पर यह धमकी देते हुए चले गये कि अस्पताल परिसर के बाहर निकलने पर देख लेंगे जिससे कर्मचारी दहशत में है।अधीक्षक ने उक्त व्यक्तियों के विरुद्ध उचित कार्यवाही करने की अपील की है जिससे कर्मचारी अपने राजकीय कार्य को सुगमता से कर सके।पुलिस अधीक्षक की शिकायत पर मेजा थाने में रविवार को केस दर्ज कर जांच जुट गई है।

युवक को पीट कर किया लहूलहान

झूंसी। स्थानीय थाना क्षेत्र के हबीबपुर में कुछ लोगो ने पुरानी रंजिश के चलते एक युवक की पीट कर लहूलहान कर दिया। पीड़ित ने मामले की लिखित शिकायत पुलिस से की है। हबीबपुर निवासी प्रदीप कुमार ने बताया कि वह शनिवार की शाम काम पर से घर लौट रहा था। रहीमापुर में एक चाय पान की गोमती पर बैठे आधा दर्जन लोगों ने पुरानी रंजिश के चलते लाठी, रॉड लेकर उसपर पिल पड़े और जम कर मारा खून से लथपथ प्रदीप कुमार थाने पहुचा और मामले की लिखित शिकायत की। पीड़ित के सर में गंभीर चोट आई है। पुलिस ने घायल का प्राथमिक उपचार करा कर मामला दर्ज कर लिया।

ग्राम समाज की जमीनों से हटेंगे अवैध कब्जे : ग्राम प्रधान

अखंड भारत संदेश

आयुक्त प्रयागराज को प्रधान ने दिया राजस्व हित में प्रत्यावेदन, जिले से आदेश के बावजूद राजस्व टीम कर रही लापरवाही, मनमाने रूप से अपात्र द्वारा पट्टा कराकर कीमती बंजर भूमि कब्जाने पर हाईकोर्ट ने एडीएम राजस्व को दिया शीघ्र निस्तारण कार्यवाही का आदेश

कोरांव। ग्राम पंचायत अल्हवा तहसील कोराव के ग्राम प्रधान ने पंचायतीराज अधिनियम में प्रदत्त अधिकारों का इस्तेमाल करते हुए प्रसाशन से अवैध ढंग से अतिक्रमित ग्राम समाज की जमीनों को सीमांकन कर खाली किए जाने का अनुरोध पत्र प्रस्तुत किया है। ग्राम पंचायत अल्हवा में ग्राम ही के कई सरहगों ने चकमार्ग, रास्ते, बंजर,नवीन परती, खलिहान, अस्पताल, मुख्य मार्ग की जमीनों पर काफी समय से अवैध कब्जा कर निर्माण कार्य तथा कृषि कार्य कर अनुचित लाभ उठा रहे हैं जिस पर ग्राम सभा की खुली बैठकों में तथा संदेशों द्वारा अतिक्रमण खाली कराने का अनुरोध किया जा चुका है। फिर भी लोगों ने अमल नहीं किया। जिस पर तहसील दिबाद, थाना दिवस सीएम हेल्प लाइन, एसडीएम, तहसीलदार, डीएम, सी आर ओ प्रयागराज से ले कर राजस्व सचिव लखनऊ और मुख्य सचिव उत्तर प्रदेश सासन लखनऊ तक कोई कार्यवाही न होने पर लिखा पढ़ी की है। इस परिपेक्ष्य में ग्राम प्रधान अल्हवा अखिल भारतीय प्रधान संगठन प्रयागराज मंडल अहद अहमद सिद्दीकी उर्फ शहजादे ने कमिश्नर प्रयागराज मंडल को पत्र दे कर ग्राम सभा की सारी जमीनों से अवैध कब्जे हटवाने के लिए राजस्व टीम गठित किए जाने और विधिक कार्यवाही का आग्रह किया है। ग्राम प्रधान ने बताया कि ग्राम समाज की कीमती भूमि पर वृछा रोपड के नाम पर केंद्रीय कर्मचारी और अपात्र होते हुए बिना भूमि प्रबंधक समिति के अनुमोदन के पट्टा करा लिए जाने नाजायेज लाभ उठाने के विरुद्ध डीएम न्यायालय में पट्टा कैंसिलेशन का वाद दाखिल किया है। जिस पर अविलंब निरस्ती करण कार्यवाही हेतु ग्राम प्रधान ने उच्च न्यायालय प्रयागराज में एक याचिका संख्या 8031/2023=अहद अहमद सिद्दीकी बनाम उत्तर प्रदेस सरकार व अन्य दाखिल कर दी। जिस पर निगरानी न्यायालय एडीएम वित्त एवं राजस्व प्रयागराज को निरंतर सुन वाई कर अधिकतम छ माह के अंदर निस्तारण करने का आदेश पारित किया है। न्यायालय ने यह भी निर्देशित किया कि यदि हड़ताल भी हो तो भी सुनवाई जारी रखी जाए। ग्राम प्रधान ने बताया कि उक्त भू खंड पर विवाह घर निर्मित कराया जायेगा। साथ ही भू खंड संख्या 280 नवीन पर्ती अवैध ढंग से अतिक्रमण किए भूमि को खाली करा कर जल जीवन मिशन के तहत पेयजल की टंकी निर्मित कराई जाएगी। जिससे पूरे ग्राम वासियों को शुद्ध पेयजल हर घर जल योजना के तहत मुहइया किया जा सके। ग्राम प्रधान शहजादे ने बताया कि ग्राम समाज की जमीनें खाली करा कर पात्र गरीब भूमि हीनों को आवासीय तथा कृषि कार्य का आवंटन किया जायेगा, जिससे सभी गरीब समाज की मुख्य धारा से जुड़ सकें। प्रधान ने बताया कि उक्त भू खंडों के अतिचारी भी माफिया लोग मेरे विरुद्ध एक न एक षड्यंत्र रचते रहते हैं और तरह तरह की धमकियां एक दूसरे गांवों के तिस्तेदार और असमाजिक तत्वों से दिलवाते रहते हैं। इसकी सूचना सासन तक दी गई है। उन्होंने बताया कि भू अतिचारी आवंटन कार्य तथा सीमांकन और अतिक्रमण हटवाने में हल्का लेखपाल पर दबाव बना रहे हैं। जो अनुचित है। प्रधान ने बताया कि यदि राजस्व टीम ने उक्त भू खंडों को खाली नहीं कराया गरीबों को आवंटन में विलम्ब किया गया तो सीधे उच्च न्यायालय में याचिका प्रस्तुत कर दूंगा।

बेणीमाधव मंदिर दारागंज परिक्रमा मार्ग से समाधि हटाने का मामला, कोर्ट ने मांगी स्थलीय निरीक्षण रिपोर्ट

प्रयागराज। प्रयागराज दारागंज स्थित नगर देवता के नाम से विख्यात श्री बेणी माधव मंदिर के परिक्रमा मार्ग में महंत ओंकार गिरी की समाधि हटाने की मांग में दाखिल सिविल वाद पर सिविल जज प्रयागराज की अदालत ने अमीन भेजकर स्थलीय निरीक्षण रिपोर्ट मांगी है। अदालत ने कहा है कि अमीन उभय पक्षों को सूचित कर नियत तिथि 7जुलाई23 से पहले विवादित स्थल का निरीक्षण करें,नजरी नक्शा तैयार करें,तथा मौके के साक्ष्य व कब्जे की स्थित आख्या पेश करें।वाद की अगली सुनवाई 7जुलाई को होगी। दारागंज निवासी अधिवक्ता रामचंद्र शर्मा ने मंदिर परिसर में भू समाधि के खिलाफ सिविल कोर्ट में मुकदमा दायर किया है।इनका कहना है कि श्री बेणी माधव मंदिर पौराणिक मंदिर है। यह आराजी संख्या 113 मौजा मुस्तफाबाद,मुंसफा उपरहार वर्तमान भवन संख्या 309दारागंज ,तहसील सदर प्रयागराज में स्थित है।जिसका पुनर्निर्माण तत्कालीन भू स्वामी कार्तिकेय पांडेय ने कराया था। मंदिर के सामने धर्मशाला व शिवमन्दिर का भी निर्माण कराया था और महा निवार्णी अखाड़ा को सौंप दिया। धर्मशाला व शिवमन्दिर भवन संख्या 703दारागंज है। जिसमें पुलिस चौकी स्थापित की गई है। वर्तमान यह मंदिर प्रयाग के 12माधवों में प्रमुख हैं। मान्यता है कि त्रिवेणी स्नान का पूर्ण फल बिना माधव दर्शन के नहीं प्राप्त होता। शर्मा का कहना है कि मंदिर में पूर्व महंत की कोरोना काल में विरोध के बावजूद समाधि बना ली गई है। जिससे श्रद्धालुओं की आस्था को ठेस पहुंचाई गई है।वादी ने अदालत से अमीन भेजकर आरोप का सत्यापन कराने तथा परिक्रमा मार्ग से भू समाधि हटाई जाय। क्यों कि वर्तमान महंत विभा तिवारी व मंदिर प्रशासक कमेटी मंदिर का प्रबंधन कर रही है।महंत द्वारा अपने पिता पूर्व महंत ओंकार गिरी को मंदिर में समाधिस्थ कर श्रद्धालुओं की भावना को ठेस पहुंचाया है। अदालत ने सिविल वाद में अमीन नियुक्त कर स्थलीय निरीक्षण की वादी की अर्जी 13ग स्वीकार कर ली ।और अमीन को स्थलीय निरीक्षण कर रिपोर्ट पेश करने का आदेश दिया है।

नैनी औधोगिक क्षेत्र में बनेगा हैवी लिफ्ट ड्रोन

सुरक्षा व निगरानी एवं कृषि तथा भूमि के निर्धारिण में होगा सहायक

अखंड भारत संदेश

नैनी। औधोगिक क्षेत्र में स्थित नैनी एरोस्पेस इंजीनियरिंग लिमिटेड में उत्तर भारत की पहली हैवी लिफ्ट ड्रोन फैसिलिटी स्थापित होने जा रही है। जहां 25 किलो का वजन उठाने में सक्षम ड्रोन को बनाया जायेगा। पिछले दिनों इस बारे में दक्षिण भारत की गरुड़ एरोस्पेस से एक समझौते पर हस्ताक्षर किया गया है। बताया जाता है कि कुछ ही समय में हैवी लिफ्ट ड्रोन का निर्माण शुरू कर दिया जायेगा नैनी एरोस्पेस लिमिटेड के मुख्य कार्यकारी अधिकारी ए श्रीवास्तव के अनुसार ड्रोन मैन्युफैक्करिंग यूनिट स्थापित होने से रोजगार बढ़ने के साथ ही इस संबंध में शिक्षा के प्रसार में मदद मिलेगी। अपनी तरह की पहली हेवी लिफ्ट ड्रोन फैसिलिटी में बनने वाले ड्रोन से सुरक्षा,निगरानी,कृषि और भूमि के निर्धारण आदि क्षेत्रों में बढ़ रही मांग को पूरा किया जाएगा। कृषि क्षेत्र में मजदूरों की कमी और उच्च लागत जैसी समस्या पर ड्रोन की मदद से लगाम लगाया जा सकता है। हेवी लिफ्ट ड्रोन 25 किलो व्जन के साथ उड़ सकता है और 500 मीटर की दूरी तक जा सकता है। वाले साथ ही एक सेकंड में पांच मीटर की दूरी तय करेगा इससे पहले नैनी एरोस्पेस लिमिटेड में धूरव हैलिकोटर और एलसीएच के लूम बनाए जा चुर्के हैं।

महाकुंभ-2025 से पहले पर्यटकों को मिलेगा रोप-वे का तोहफा, शुरू किया गया सर्वे

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। महाकुंभ-2025 में संगम दर्शन अलग हटकर हो सकेगा। इसके लिए केबल कार चलाई जाएगी। संगम पर रोपवे की महात्वाकांक्षी परियोजना को महाकुंभ से पहले पूरा किया जाना है। इसे पीपीपी मॉडल पर चलाने की योजना बनाई गई है। महाकुंभ की परियोजनाओं में संगम पर रोपवे को सीएम योगी आदित्यनाथ के ड्रीम प्रोजेक्ट के रूप में देखा जा रहा है। प्रयागराज आने वाले श्रद्धालु अब केबल कार से संगम, अक्षयवट, सरस्वती कूप के अलावा माघ मेला और कुंभ मेला का नजारा देख सकेंगे। पहली बार संतों-भक्तों और सैलानियों के लिए केबल कार की सेवा यहां मिलेगी। महाकुंभ से पहले देश-दुनिया के पर्यटकों रोपवे का तोहफा दिलाने की योजना पर काम शुरू हो गया है। इसके लिए झूंसी से अरैल के बीच तीन रोपवे स्टेशन बनाए जाएंगे। इस योजना पर 60 करोड़ रुपये से अधिक खर्च आने का अनुमान है।पर्यटन विभाग की ओर से इसका खाका प्रस्तुत किया गया है। हाल में ही प्रयागराज मेला प्राधिकरण के आई ट्रिपलसी सभागार में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के सामने भी कुंभ मेलाधिकारी विजय किरन आनंद ने संगम पर रोपवे योजना का प्रस्ताव प्रस्तुत किया था। फिलहाल केबल कार पीपीपी मॉडल पर श्रद्धालुओं-पर्यटकों के लिए चलाई जाएगी। इसके लिए झूंसी में उल्टा किला के के अलावा अरैल में त्रिवेणी पुष्प परिसर के अलावा सोमेश्वर महादेव के पास रोपवे स्टेशन बनाए जाएंगे।सोमेश्वर महादेव के पास स्टेशन बनाने के लिए सर्वे कर लिया गया है। योजना के अनुसार सरकार इसके लिए भूमि उपलब्ध कराएगी। बाकी काम ठेका लेने वाली कंपनी को करना होगा। किराया निर्धारण और केबल कार के संचालन की भी व्यवस्था कंपनी के जिम्मे ही होगी। पर्यटन विभाग की इस योजना के तहत केबल कार से एक बार में 20-25 सैलानी संगम दर्शन कर सकेंगे। इन स्टेशनों से महज 10 से 15 मिनट के भीतर पर्यटक संगम दर्शन कर सकेंगे। पीपीपी मॉडल पर तैयार होने वाली इस योजना के संचालन के लिए चुनिंदा और अनुभवी रोपवे संचालक कंपनियों से संपर्क किया गया है।

कुछ ने लिया तो कुछ ने लेने से मना किया दो हजार का नोट, गुलाबी नोट खपाने की होड़

प्रयागराज। दो हजार के नोट बैंकों को वापस किए जाने का सर्कुलर जारी होने के अगले दिन शनिवार को प्रयागराज के बाजारों में अफरा-तफरी मच गई। आलम ऐसा रहा कि तमाम दुकानों पर लोग दो हजार के नोट के साथ खरीदारी के लिए पहुंचे। लीगल होने की वजह से शुरू में तो व्यापारियों ने दो हजार का नोट लिया, लेकिन तमाम स्थानों पर व्यापारी गुलाबी नोट लेने से कतराते रहे। इस दौरान शहर के पेट्रोल पंपों पर दो हजार के नोट को लेकर किचकिच हुई। कई जगह चार पहिया वाहन चालकों को बैरंग ही लौटना पड़ा तो कुछ जगह पेट्रोल पंप संचालकों ने दो हजार का ही पेट्रोल दिया।शहर के प्रमुख बाजारों की बात करें तो सिविल लाइंस, कटरा, चौक, कोठापार्चा में तमाम दुकानों में लोग दो हजार रुपये का ही नोट लेकर पहुंचे। कारोबारी आशीष अरोरा ने बताया कि सर्कुलर जारी होने के बाद बाजार में आज दो हजार रुपये के नोट की आमद बढ़ गई । एक-दो दिन में बाजार में दिक्कत और बढ़ सकती है। वहीं दूसरी ओर आरबीआई के ताजा सर्कुलर के आते ही मार्केट में एक बार फिर से ""नोटबंदी"" की चर्चा गर्म हो गई। कारोबारी अखिलेश सिंह ने कहा कि आरबीआई के इस आदेश से अगले कुछ दिन बाजार में उछाल आ सकता है। क्योंकि दो हजार के नोट अभी सितबर तक लीगल है। उसके बाद त्योहारी सीजन शुरू हो जाता है। ऐसे में इस वर्ष बाजार अब अच्छा ही जाएगा। कैट के प्रदेश अध्यक्ष महेंद्र गोयल ने बताया कि दो हजार के नोट वापसी की सूचना मिलते ही बाजारों में भीड़ बढ़ गई है।

महापौर का किया गर्मजोशी से स्वागत

अखंड भारत संदेश

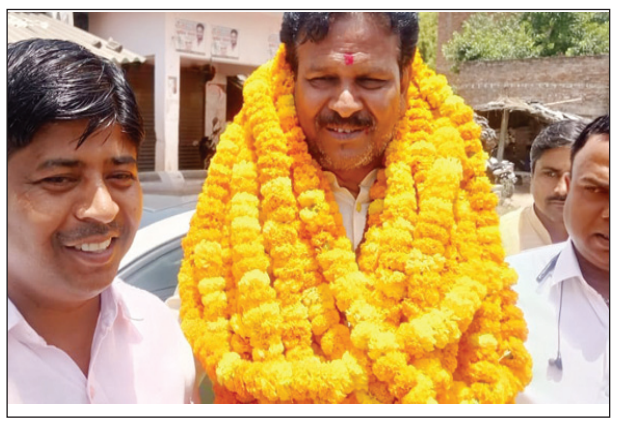

झूंसी। नवनिर्वाचित महापौर प्रयागराज गणेश केशरवानी का रविवार को झूंसी ने जगह जगह भव्य स्वागत किया गया। छतनाग पार्षद शिवनारायण यादव घुंनु ने अपने समर्थकों के साथ महापौर को पार्टी का पटका और फूल, माला पहना कर गर्मजोशी से स्वागत किया। छतनाग के मिलन चौराहे पर स्वागत के दौरान पूर्व जिला पंचायत सदस्य अशोक यादव, विजय सिंह, अमर सिंह, मनोज जिगिना, आनंद जायसवाल आदि मौजूद रहे। एक्यूप्रेशर संस्थान में भी महापौर का स्वागत हुआ। सेंट्रल एकेडमी में भाजपा जिला कार्यसमिति की बैठक में उपस्थित कार्यकर्तों ने भी महापौर का स्वागत किया। इस दौरान सांसद फूलपुर केशरी देवी, विधायक प्रवीण पटेल, ब्लाक प्रमुख अरुणेंद्र यादव दब्बू, सेंट्रल एकेडमी के डायरेक्टर एसके तिवारी, जिलाध्यक्ष अश्वनी द्वेवदी, महामंत्री मनोज निषाद, राजीव राणा आदि मौजूद रहे। वही जीटी रोड पर नवनिर्वाचित पार्षद गुलफिरोज खान के नेतृत्व में व्यापारियों ने मेयर का स्वागत किया।

किन्नरों ने सरेराह तीन युवकों पर बोला हमला, जमकर पीटा

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। कर्नलगंज में मजार तिराहे के पास किन्नरों के एक गुट ने शनिवार रात जमकर हंगामा किया। गाड़ी में टक्कर लगने पर लोडर चालक व उसके दो साथियों को जमकर पीटा। साथ ही अपनी गाड़ी में खींचने की भी कोशिश की। पुलिस जब तक मौके पर पहुंचती, आरोपी भाग चुके थे। पीड़ितों ने थाने में तहरीर दी है।घटना रात नौ बजे के करीब हुई।टवेरा गाड़ी में सवार होकर किन्नर फाफामऊ की ओर जा रहे थे। उधर एक लोडर भी उसी ओर जा रहा था। मजार तिराहे से पहले लोडर किन्नरों की टवेरा से छू गई जिस पर उन्होंने हंगामा कर दिया। लोडर रुकवा लिया और पहले चालक को पकड़कर पीटना शुरू कर दिया। उसे बचाने के लिए लोडर में बैठे दो साथी उतरे तो उन्हें भी लात-घूंसों से जमकर पीटा। इस दौरान किन्नरों के कुछ साथियों ने डंडों से तीनों की पिटाई की।सरेराह पिटाई से वहां अफरातफरी का माहौल कायम हो गया। करीब 15 मिनट तक हंगामा होता रहा। इसी दौरान किसी ने सूचना दी तो पुलिस पहुंची लेकिन तब तक मारपीट करने वाले भाग चुके थे। पिटाई में लोडर चालक व उसके दोनों साथी चोटिल भी हुए। पुलिस तीनों को थाने ले गई और फिर उन्हें मेडिकल के लिए भेजा गया। इंस्पेक्टर राममोहन राय ने बताया कि पीड़ितों का मेडिकल कराया जा रहा है। मुकदमा दर्ज कर कार्रवाई की जाएगी।

टवेरा में खींचने की कोशिश

वीडियो भी हुआ वायरल : जिस वक्त यह घटना हुई, उसी दौरान वहां से गुजर रहे एक शख्स ने कार के भीतर से वीडियो बना लिया। कुछ देर बाद यह वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल भी हो गया। 1.09 सेकेंड के इस वीडियो में सबसे पहले किन्नर दो युवकों को पीटते और टवेरा के भीतर खींचते नजर आते हैं। कुछ दूरी पर उनके साथी डंडा लेकर एक अन्य व्यक्ति को पीटते नजर आते हैं। साथ ही इसकी जेब से जबरन कुछ छीनने की कोशिश भी करते नजर आते हैं।

ट्रेन से कटकर गैंगमैन की मौत शव के ऊपर दौड़ी दूसरी ट्रेन

प्रयागराज। प्रयागराज-वाराणसी रेल मार्ग पर पेट्रोलिंग कर रहे गैंगमैन की ट्रेन से कटकर मौत हो गई। इसके बाद लापरवाही की हद तब पार हो गई जब उसके शव को ट्रैक से हटाए बिना ही एक ट्रेन और गुजार दी गई। घटना की सूचना पाकर सरायइनायत पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर एसआरएन में पोस्टमार्टम के लिए भेजा। वहीं, इस घटना का वीडियो भी वायरल हो गया। प्रयागराज-वाराणसी रेलवे मार्ग पर रविवार को झूंसी-रामनाथ रेलवे स्टेशन के बीच शाम को तीन बजे पेट्रोलिंग कर रहे गैंगमैन योगेंद्र प्रताप सिंह की ट्रेन से कटकर मौत हो गई। योगेंद्र पूर्वोत्तर रेलवे के बनारस मंडल में कार्यरत थे। गैंगमैन की ड्यूटी कीमैन की अनुपस्थिति में ट्रैक पेट्रोलिंग पर लगाई गई थी। गैंगमैन की मौत के बाद भी उसके शव को ट्रैक से नहीं हटाया गया और विभूति एक्सप्रेस को उसी ट्रैक से गुजार दिया गया। घटना को लेकर रेलकर्मियों में आक्रोश पैदा हो गया। योगेंद्र पोल नंबर 316-26 के बीच ट्रैक की जांच कर रहे थे, इसी बीच वह बलिया-प्रयागराज मेमू पैसेंजर जो रामबाग स्टेशन से बलिया की ओर जा रही थी उसकी चपेट में आ गए और उनकी मौके पर ही मौत हो गई। ट्रेन के लोको पायलट ने कंट्रोल रूम पर सूचना दी, लेकिन घटना स्थल पर न तो जीआरपी पहुंची और न ही आरपीएफ।

साथी कर्मचारियों ने जताया आक्रोश : इसी बीच रामबाग स्टेशन से रवाना हुई विभूति एक्सप्रेस ने भी योगेंद्र के शव को रौंद दिया। इसके बाद सराय इनायत थाने की पुलिस मौके पर पहुंची और शव का पंचनामा भरकर पोस्टमार्टम के लिए शव को रवाना किया। योगेंद्र दो भाइयों में छोटे और अविवाहित थे। बेटे की मौत से मां मीरा देवी का रो-रोकर बुरा हो गया। उधर, घटना की जानकारी पर योगेंद्र के साथी कर्मचारी आक्रोशित हो गए। कर्मचारियों के अनुसार गैंगमैन को प्रमोशन के बाद कीमैन बनाया जाता है। इन्हें ट्रैक की पेट्रोलिंग की ट्रेनिंग दी जाती है, लेकिन विभाग ने लापरवाही करते हुए गैंगमैन को बिना किसी ट्रेनिंग के ट्रैक पर उतार दिया।इसी तरह कई अन्य गैंगमैन को भी कीमैन की ड्यूटी पर जबरन भेज दिया जाता है। दूसरी ओर वाराणसी मंडल के पीआरओ अशोक कुमार का कहना है कि घटना के थोड़ी देर बाद गैंगमैन का शव रेल ट्रैक से हटा दिया गया था। उसके बाद ही विभूति एक्सप्रेस को वहां से निकाला गया।

गंगा में डूबे दोनों छात्रों का शव बरामद, कर्जन ब्रिज के नीचे पानी में उतराया मिला

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। शिवकुटी में नहाते समय गंगा में डूबने वाले इंटर के दोनों छात्रों का शव रविवार को बरामद कर लिया गया। एनडीआरएफ और गोताखोरों ने काफी मशक्कत की लेकिन शव नहीं मिल सका था। रविवार को दोनों छात्रों रमन द्विवेदी और कृष्णा मिश्रा का शव कर्जन पुल के नीचे पानी में उतराता मिला। दोनों इंटर के छात्र थे। शव मिलने के बाद परिवार के सदस्यों का रो-रोकर बुरा हाल रहा। बड़ी संख्या में आसपास और मुहल्ले के लोग जमा थे। पुलिस भी मौके पर पहुंच गई।शनिवार सुबह शिवकुटी में फिर एक हादसा हो गया, जिसमें 12वीं के दो छात्र रमन द्विवेदी (15) और कृष्णा मिश्रा (16) गंगा में डूब गए। पुलिस देर शाम तक तलाश में लगी रही, लेकिन उनका कुछ पता नहीं चला। रविवार को भी उनकी खोजबीन की जा रही थी, इसी बीच दोनो का शव घटनास्थल से कुछ दूर पर कर्जन ब्रिज के नीचे पानी में उतराया मिला।दोनों छात्र शांतिपुरम के रहने वाले हैं और वहीं स्थित गुरुकुल मान्टेसरी स्कूल में साथ ही पढ़ते थे।रमन के पिता शिवमूर्ति द्विवेदी पुलिस विभाग में दरोगा हैं और वर्तमान में चंदौली में तैनात हैं। जबकि कृष्णा के पिता लोकेश मिश्रा हाईकोर्ट में अधिवक्ता हैं। पुलिस के मुताबिक, शनिवार सुबह आठ बजे के करीब दोनों अपने पांच अन्य दोस्तों सार्थक, ध्रुव, अजीत, आदर्श व अभिन्न के साथ फाफामऊ कछार के पास स्थित बने मैदान में क्रिकेट खेलने गए थे। मैच खत्म होने के बाद सभी गंगा स्नान करने के लिए फाफामऊ पुल के नीचे बने घाट पर पहुंच गए।नहाने के बाद पांच अन्य साथी तो निकल आए, लेकिन रमन व कृष्णा नहाते रहे। इसी दौरान दोनों गहराई में चले गए और डूबने लगे। उनकी चीख सुनकर किनारे पर खड़े दोस्तों ने शोर मचाया, लेकिन देखते ही देखते दोनों गंगा में डूब गए। सूचना मिली तो पुलिस पहुंच गई और फिर स्थानीय गोताखोरों को बुलवाकर उनसे तलाश कराई गई। कुछ देर बाद जल पुलिस व राज्य आपदा मोचन बल (एसडीआरएफ) के जवान भी पहुंच गए। दिन भर खोजबीन चलती रही, लेकिन दोनों छात्रों का कुछ पता नहीं चला। रविवार को फिर दोनों की खोजबीन शुरू की गई थी कि उनका शव उतराया मिला। उधर, घटना की सूचना पर दोनों बच्चों के परिजन भी मौके पर पहुंच गए। दोनों अपने भाई बहनों में सबसे छोटे हैं। रमन इकलौता बेटा है, जिसकी दो बड़ी बहनें प्रिया व काजल हैं। दोनों बहनों के साथ मां का भी रो-रोकर बुरा हाल है। उधर, कृष्णा दो भाइयों व एक बहन में सबसे छोटा है। घर में बड़ी बहन वैशाली, बड़ा भाई वैभव व मां रीता हैं। हादसे के बाद से दोनों घरों में कोहराम मचा है।

रील्स बनाने वाली दुल्हन वर्णिका चौधरी का चलती गाड़ी में वीडियो आया सामने

पुलिस ने काटा 15 हजार का चालान, पत्थर गिरजाघर के पास की यह फोटो है जिसमें बिना हेलमेट के स्कूटी चला रही लड़की, फेसबुक इंस्टाग्राम पर रील्स बनाने के लिए लड़की ने इस अंदाज में बनवाया वीडियो

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। इन दिनों इंस्टाग्राम पर रील्स बनाने में लड़कियां आगे हैं। प्रयागराज में एक लड़की चलती सफारी गाड़ी के बोनट पर बैठकर रील्स बनाने के लिए वीडियो शुट कराती रही। वह दुल्हन की तरह सजकर निकली थी। इसका वीडियो वायरल हुआ तो ट्रैफिक पुलिस एक्शन मूड में आ गई सफारी गाड़ी का 15,500 रुपए का चालान कर दिया उसका एक और वीडियो स्कूटी से चलते हुए वायरल हुआ। जिसमें वह दुल्हन की तरह ही सजधज कर लंहगा पहने बिना हेलमेल के स्कूटी चला रही है दोनों वीड़ियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है ट्रैफिक पुलिस ने सफारी गाड़ी नंबर UP70DL0888 और स्कूटी नंबर UP70GK7660 का चालान कर दिया है वर्णिका चौधरी नाम की लड़की का जो वीडियो वायरल हुआ है वह शहर के पत्थर गिरजाघर के पास बनाया गया है पहला वीडियो स्कूटी की है जिसमें लड़की खुद स्कूटी चला रही है, उसने उसे इंस्टाग्राम पर पोस्ट किया है दूसरी वीडियो सफारी पर सवार होकर बनाई गई इसमें लड़की सफेद कलर की सफारी गाड़ी की बोनट पर बैठी है आगे कुछ लोग दौड़ते हुए उसका वीडियो बनाते दिख रहे हैं। वहां मौजूद अन्य यात्री भी रखूककर उसका वीडियो बनाने लगे ट्रैफिक पुलिस को इसकी भनक तक नहीं लगी गाड़ी मिथिलेश सिंह के नाम से है जो अमरपुर शंकरगढ़ का निवासी है चालक का नाम सुभाष सिंह बताया गया है पुलिस छानबीन कर रही है।

पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की शहादत दिवस पर कांग्रेसियों ने अर्पित किया श्रद्धा सुमन

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। सिकंदरा में कांग्रेस के राष्ट्रीय सदस्य अशफाक अहमद के आवास पर पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय राजीव गांधी के शहादत दिवस पर उनके चित्र पर कांग्रेस कार्यकताओं ने पुष्प चढ़ाकर श्रद्धा सुमन अर्पित किया।इस मौके पर डा.जगत नारायण सिंह ने कहा कि राजीव गांधी ने पंडित जवाहरलाल नेहरू और इंदिरा गांधी की राजनीतिक विरासत को ही नहीं संभाला बल्कि देश को तकनीक व वैश्विक बुलंदियों तक पहुंचाने के लिए अभूतपूर्व कार्य किए।उन्होंने कहा कि राजीव गांधी ने इंटरनेट की सुविधा,कंप्यूटर,राइट टू इनफार्मेशन,पेशा कानून,देश में शिक्षा के लिए विकास को शिखर तक ले जाना चाहते थे।राजीव गांधी ने भारत देश को विकसित देश और शिक्षित देश बनाकर गरीबों को भी उन्नत की ओर ले जाना चाहते थे उन्होंने कहा कि स्वर्गीय गांधी के व्यक्तित्व को कभी भुलाया नहीं जा सकता। रश्मिता दुबे ने कहा कि राजीव गांधी पंचायतों और नगर पालिकाओं को महिलाओं के लिए एक तिहाई आरक्षण के साथ एक तिहाई दर्जा दिलाने का व्यक्तिगत रूप से नेतृत्व किया महिलाओं को उनकी प्रेरणा से सीख लेने की जरूरत है यही उनके लिए हम सबकी सच्ची श्रद्धांजलि है। कांग्रेस के राष्ट्रीय सदस्य अशफाक अहमद ने कहा कि राजीव गांधी ने सूचना क्रांति की बुनियाद रखी जिसने भारत को पूरी तरह से बदल दिया उन्होंने असम,पंजाब,मिजोरम, और दार्जिलिंग जैसे अशांत क्षेत्रों में शांति बहाल करने एवं इन्हें विकास के रास्ते पर वापस लाने के लिए कई समझौते किए उन्होंने कहा कि राजीव ने सबसे बड़ा काम 18 साल की उम्र में युवाओं को वोट देने का अधिकार दिया।राजीव गांधी पंचायती राज व्यवस्था के जनक थे। कार्यक्रम में विनोद विश्वकर्मा, मोहम्मद सददाम समाजसेवी, अंजली, अंशिता, शिवप्रसाद प्रजापति, मोहम्मद शमीम प्रधान, राज नाथ यादव, बृजेन्द्र पटेल, मोहम्मद हफीज, मोहम्मद वसीम, अमनेश दुबे, मोहम्मद मजहर, मोहम्मद आरिफ, मोहम्मद रऊफ, पवन पटेल, अखिलेश गौतम, सुरेन्द्र यादव, मोहम्मद फारूक सहित कई लोग उपस्थित रहे।

कर्नल की पत्नी की रिश्तेदार के घर में संदिग्ध हाल में मौत, मामले की जांच में जुटी पुलिस

प्रयागराज। कीडगंज में कर्नल की पत्नी शालिनी शर्मा (45) रिश्तेदार के घर के भीतर संदिग्ध हाल में मृत पड़ी मिलीं। शाम को रिश्ते के जीजा घर आए तो उन्हें घटना की जानकारी हुई। अस्पताल ले जाने पर डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। पोस्टमार्टम में मौत का कारण स्पष्ट न होने पर विसरा प्रिजर्व किया गया है। पुलिस जांच पड़ताल में जुटी है।शालिनी मूल रूप से कानपुर की रहने वाली थीं। उनके पति गौरव बनर्जी सेना में कर्नल थे। इसी साल 10 जनवरी को उनकी भी मौत हो गई थी। वह बाथरूम में गिरे पड़े मिले थे। पिता की मौत के बाद बेटा बीटेक करने पंजाब चला गया। उधर, शालिनी कीडगंज के खलासी लाइन में रहने वाले अपने दूर के रिश्तेदार देव कुमार बनर्जी के घर आकर रहने लगीं।देव प्राइवेट नौकरी करते हैं और रोज की तरह काम पर चले गए थे। शाम को घर आने पर देखा कि शालिनी कमरे में अचेत पड़ी थीं। वह उन्हें करीब स्थित निजी अस्पताल ले गए जहां डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया।सूचना पर पुलिस पहुंची और शव को मोर्चरी भेजा। पोस्टमार्टम होने पर शनिवार दोपहर बाद परिजनों ने अंतिम संस्कार कर दिया। सूत्रों के मुताबिक, पोस्टमार्टम में मौत का कारण स्पष्ट नहीं होने पर विसरा प्रिजर्व किया गया है। इंस्पेक्टर कीडगंज राममूर्ति यादव ने बताया कि जांच पड़ताल की जा रही है। फिलहाल परिजनों ने कोई आरोप नहीं लगाया है।

मुंबई से शादीशुदा महिला को प्रयागराज लाकर किया रेप

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। मुंबई में नौकरी करने के दौरान शादीशुदा महिला को अपने प्रेम जाल में फंसाकर दुष्कर्म करने के आरोपी को पुलिस ने प्रयागराज में गिरफ्तार कर लिया। आरोपी पीड़िता को लेकर प्रयागराज स्थित अपने गांव आया और वही पर रेप और अप्राकृतिक यौनाचार किया। पुलिस उसकी पिछले 3 महीने से तलाश कर रही थी।प्रयागराज पुलिस कमिश्नरेट के करछना थाने में अप्राकृतिक यौनाचार, गाली गलौज, मारपीट, धमकी, रेप आदि धाराओं में एफआईआर दर्ज थी। आरोपी को क्षेत्र के बरदहा मोड़ के समीप से गिरफ्तार किया गया है। चीना थाना प्रभारी विश्वजीत सिंह ने बताया कि क्षेत्र के रीवा महोली गांव निवासी लक्ष्मी शंकर दुबे उर्फ राजा पुत्र स्वर्गीय अमरनाथ दुबे मुंबई में प्राइवेट काम करता था। वह जहां काम करता था। बगल में जौनपुर की एक महिला अपने परिवार के साथ रहती थी। इस दौरान लक्ष्मी शंकर और उस महिला के बीच में संपर्क हो गया। महिला ने आरोप लगाया कि लक्ष्मी शंकर ने उसे शादी का सब्जबाग दिखाकर अपने प्रेम जाल में फंसा लिया था।जिसकी वजह से वह अपने पति और बच्चों को छोड़कर उसके साथ मुंबई से प्रयागराज के करछना थाना अंतर्गत रीवा महोरी गांव उसके घर आ गई थी। यहां भी लक्ष्मी शंकर ने उसे शादी का झांसा दिया और उसके साथ शारीरिक संबंध बनाए। जब महिला ने शादी करने को कहा तो वहां मना करने लगा। महिला ने पुलिस में जाने की धमकी दी तो लक्ष्मी शंकर महिला को लेकर फिर से मुंबई चला गया और वहां पर उसे छोड़ दिया। महिला ने इस संबंध में मुंबई के नजदीकी थाने में इसकी शिकायत की तो वहां के पुलिस ने उसकी शिकायत यह कहते हुए दर्ज करने से मना कर दिया कि उसके साथ रेप प्रयागराज में हुआ है। इसलिए वह प्रयागराज में जाकर एफआईआर दर्ज कराएं।जिसके बाद महिला मार्च में होली के पहले प्रयागराज आई और करछना थाने में लक्ष्मी शंकर के खिलाफ नामजद तहरीर दी। उसकी तहरीर के आधार पर करछना पुलिस ने लक्ष्मी शंकर उर्फ राजा दुबे के खिलाफ मुकदमा अपराध संख्या 92/2023 के तहत धारा 376, 377, 313, 504, 506 और 392 आईपीसी के तहत एफआईआर दर्ज किया। उसी के बाद से लक्ष्मी शंकर की तलाश की जा रही थी। लक्ष्मी शंकर फरार चल रहा था। थाना प्रभारी विश्वजीत सिंह के मुताबिक रविवार को सूचना मिली कि वह मोड़ के समीप है। जिसके बाद पुलिस टीम ने घेराबंदी करके उसे गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार करने वाली पुलिस टीम में एसआई अखिलेश राय, हेड कॉन्स्टेबल प्रवीण कुमार पांडेय शामिल थे।

शादी का झांसा देकर पीड़िता को किया गुमराह, पुलिस ने आरोपी को भेजा जेल

राष्ट्रीय लोक अदालत का भव्य आयोजन

राष्ट्रीय लोक अदालत में कुल 192554 वादों का निस्तारण किया गया माननीय जनपद न्यायाधीश इलाहाबाद के द्वारा 08 सिविल वाद निस्तारित किए

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण लखनऊ के निदेर्शानुसार आज दिनांक 21.05.2023 को जिला विधिक सेवा प्राधिकरण इलाहाबाद के तत्वाधान में जनपद न्यायालय इलाहाबाद व समस्त तहसीलों में राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन प्रातः 10:00 माननीय जनपद न्यायाधीश अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकार इलाहाबाद संतोष राय द्वारा दीप प्रज्वलित करके किया गया राष्ट्रीय लोक अदालत में कुल 192554 वादों का निस्तारण किया गया माननीय जनपद न्यायाधीश इलाहाबाद के द्वारा 08 सिविल वाद निस्तारित किए गए फौजदारी के कुल 4009 वादों का निस्तारण किया गया पारिवारिक न्यायालय द्वारा कुल 108 वादों का निस्तारण आपसी सुलह समझौते के आधार पर किया गया मोटर दुर्घटना दावा अधिकरण पीठासीन अधिकारी बुद्धीसागर मिश्रा के द्वारा 51 वादों का निस्तारण किया गया विकास श्रीवास्तव अपर जनपद न्यायाधीश ईसी एक्ट के द्वारा विद्युत के 212 मामलों का निस्तारण किया गया दिनेश कुमार गौतम मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट के द्वारा 1137 वाद अमित कुमार अपर मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट कक्ष संख्या -7 के द्वारा 1405 वाद दीक्षा वर्चुअल कोर्ट ट्रैफिक के द्वारा 13482 प्री लिटिगेशन वाद निस्तारित किए गए राजस्व न्यायालय के द्वारा कुल 131582 वादों का निस्तारण किया गया बैंक के प्री लिटिगेशन के 1464 मामले निस्तारित किए गए रविकांत द्वितीय नोडल अधिकारी एडीजे लोक अदालत के निर्देशन में समस्त विभागों से समन्वय स्थापित कर लोक अदालत का सफल आयोजन किया गया। यह जानकारी सुभाष चंद्र मौर्य सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की गई।

सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मेरा नाम त्रुटि वस मेरे नाम के आगे कौशलेंद्र सिंह चंदेल पुत्र राम सजीवन सिंह चंदेल ग्राम सरपतही, पोस्ट पूरब शरीरा जनपद कौशांबी हो गया है जो गलत है मेरा वास्तविक एवं सही नाम कौशलेंद्र सिंह पुत्र राम सजीवन सिंह पता उपरोक्त ही वास्तव में सही है मुझे इसी नाम व पता से जाना पहचाना जाए।

कौशलेंद्र सिंह पुत्र राम सजीवन सिंह ग्राम सरपतही पोस्ट पूरब शरीरा तहसील मंझनपुर जनपद कौशांबी।

मेधावियों से प्रेरणा लें अन्य छात्र : विधायक

अटल टिंकरिंग लैब से बच्चों में बढ़ती है जिज्ञासा : हरिप्रताप

अटल टिंकरिंग लैब का फीता काटकर उद्घाटन करते विधायक व नपाध्यक्ष।

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। शहर के जोगापुर स्थित सी० बी० एस० एकेडमी में अटल टिंकरिंग लैब एवं प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन किया गया जिसके मुख्य अतिथि राजेन्द्र मौर्या विधायक सदर एवं विशिष्ट अतिथि हरि प्रताप सिंह वर्तमान न०पा० अध्यक्ष उपस्थित रहे। इस दौरान विधायक सदर ने मेधावियों को उनके सम्मान रख उद्देश्य के बारे में बताया और मेधावियों की सराहना की एवं अन्य बच्चों को उनसे प्रेरणा लेने की शिक्षा दी। वहीं हरिप्रताप सिंह ने अटल टिंकरिंग लैब के महत्व के बारे में बताते हुए कहा कि अटल टिंकरिंग लैब एक ऐसी प्रयोगषाला है जिसमें बच्चों में जिज्ञासा बढ़ती है। ऐसी लैब का शुभारंभ करने में हमें बेहद खुशी है कि यहां के बच्चे इसका लाभ उठाएंगे। प्रबंधक चन्द्र भान सिंह एवं प्रधानाचार्य राजेश सिंह महामंत्री भाजपा ने बताया की अटल टिंकरिंग लैब ऐसी प्रयोगशाला है जो विद्यार्थियों में जिज्ञासा रचनात्मकता एवं कल्पना को बढ़ावा देने के साथ-साथ नवीन कौशल सीखने और अपने विचारों को आकार देने के लिए एक नवीन स्थान प्रदान करती है। लैब इंचार्ज राकेश कुमार सिंह ने लैब की तकनीकी व उपकरणों के बारे में बताया। कार्यक्रम में विभव कुमार श्रीवास्तव विश, श्यामलाल प्रजापति प्रवीण राय संजोग राम अदित्य भट्ट, आभा शर्मा, देवेश पाण्डेय राजेन्द्र मिश्रा, रंजना सिंह, आदि लोगो का कार्यक्रम की सफल बनाने में सहयोग रहा। श्वेता यादव ने इण्टरमीडिएट परीक्षा व हाईस्कूल बोर्ड परीक्षा में आयुष यादव ने सर्वश्रेष्ठ अंक प्राप्त कर प्रथम रहे। वहीं अन्य मेधावियों में मो० जैद खान, महिमा पुष्पाडर, दीपक शर्मा मानसी यादव के ने क्रमशः द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त किया।

कक्षाओं में श्रेष्ठ स्थान पाने वाले बच्चों को किया गया पुरस्कृत

अखंड भारत संदेश

साहित्यिक संस्था सृजना ने कार्यक्रम किया आयोजित

बच्चों को पुरस्कृत करते संस्था के पदाधिकारी।

प्रतापगढ़। सृजना साहित्यिक संस्था उत्तर प्रदेश द्वारा सदर विकास खंड के ग्राम सरायदली में वार्षिक परीक्षा में श्रेष्ठ स्थान पाने वाले बच्चों को पुरस्कृत किया गया। सभी को प्रशस्ति पत्र एवं मेडल से नवाजा गया। ग्रीष्मावकाश में निरंतर पढ़ने के लिए प्रेरित किया गया। समाजसेवा में उत्कृष्ट योगदान हेतु प्राणपती देवी को शाल तथा स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि समाजसेवी प्रेमदास मौर्य ने बच्चों को प्रेरित करते हुए कहा कि शिक्षा मनुष्य के लिए वरदान है। इसी से सम्मान मिलता है। अध्यक्षता करते हुए वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. दयाराम मौर्य रत्न ने कहा कि गर्मी की छुट्टियों में भी पढ़ाई जारी रखें। तेज गर्मी में बीमारी से बचने के लिए खान-पान ठीक रखना चाहिए। संचालन अधिवक्ता लेखिका रीतिका मौर्य रीतू ने किया। विचार प्रकट करने वालों में वीरेंद्र कुमार, अनुराग, आरती मौर्य, आनन्द,आकाश, उर्मिला प्रमुख रहे। पुरस्कार पाने वाले बच्चों ने भविष्य के लक्ष्य बताए। इस अवसर पर आदर्श मौर्य, आयुष, श्रावण कुमार ,जतिन पाल,देवांश, नैंसी, साक्षी, सृष्टि, अनन्या, श्लोक ने गीत, कहानी तथा चुटकुले प्रस्तुत किये।

वित्तीय साक्षरता कार्यक्रम का किया गया आयोजन, लोगों को दी गई जानकारी

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। आजादी की अमृत महोत्सव कार्यक्रम के अंतर्गत बीसी सखी को आत्मनिर्भर बनाने तथा लोगो को जागरूक करने के लिए तथा वित्तीय आत्मनिर्भरता के लिए बीसी सखी के कार्यो का प्रचार प्रसार करते हुए वित्तीय समायोजन की बात की गई।

ग्राम पंचायत ग्राम पंचायत उसरौली,सरसतपुर, बीबीपुर बरडीह,दाऊदपर में आजादी की अमृत महोत्सव के अंतर्गत वित्तीय साक्षरता कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के अंतर्गत ग्राम पंचायत स्तर पर नियुक्त बीसी सखी के कार्यों का प्रचार प्रसार एवं वित्तीय समावेशन परिचर्चा की गई । कार्यक्रम में पट्टी ब्लॉक मिशन प्रबंधक मोहम्मद शमीम के द्वारा जानकारी दी गई कि बीसी सखी के माध्यम से जमा तथा निकासी, ऋण, आधार लिंकिंग, मनरेगा के मजदूरों का मजदूरी, पेंशन की निकासी तथा अन्य सभी प्रकार के बैंकिंग सेवा संबंधित सुविधाओं का लाभ ग्रामीण लोग अपने ग्राम पंचायत में ही उठा सकते हैं उनको कहीं पर आने जाने जरूरत नहीं पड़ेगी। इस कार्यक्रम में ब्लॉक मिशन प्रबंधक राजबहादुर, समूह सखी एवं संबंधित ग्राम पंचायत की बीसी सखी मौजूद रही।

घर के सामने खड़ा ट्रैक्टर अज्ञात चोरों ने उड़ाया

परियावां, प्रतापगढ़। थाना नवाबगंज अंतर्गत लवाना चैकी के शेखपुर धनापुर निवासी शिवमंगल मौर्य का स्वराज 735 मिम मॉडल 2020 रोज की भांति घर के सामने खड़ा था जिससे अज्ञात चोरों ने बीती रात चोरी कर लिया। काफी खोजबीन करने के पश्चात भुक्तभोगी नेघटना की सूचना नवाबगंज पुलिस को दी उक्त ट्रैक्टर चोरी की तहरीर शिवमंगल मौर्य के पुत्र कृष्णपाल मौर्य ने अज्ञात चोरों के विरुद्ध नवाबगंज थाने में दी है। ट्रैक्टर चोरी की घटना की सूचना पर नवाबगंज पुलिस जांच में जुटी हुई है।

देश के सूचना क्रांति पंचायती राज के जनक थे राजीव गांधी

इंदिरा भवन पर कांग्रेसियों ने मनाई राजीव गांधी की पुण्यतिथि

अखंड भारत संदेश

पुण्यतिथि पर आयोजित कार्यक्रम में बोलते जिलाध्यक्ष डा0 लालजी त्रिपाठी।

प्रतापगढ़। जिला कांग्रेस कमेटी कार्यालय इंदिरा भवन पर भारत के पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की पुण्यतिथि मनाई गई। कार्यक्रम की अध्यक्षता जिला अध्यक्ष डॉ लालजी त्रिपाठी तथा संचालन नगर अध्यक्ष इरफान अली ने किया।

जिला अध्यक्ष डॉ लालजी त्रिपाठी ने राजीव गांधी जी के चित्र पर पुष्प अर्पित करते हुए कहा कि राजीव गांधी देश के सूचना क्रांति पंचायती राज के जनक थे जिससे आज देश विकास कर रहा है। राजीव गांधी ने देश की सुरक्षा के लिए पृथ्वी त्रिशूल अग्नि जैसी मिसाइल का विकास कराया था। उन्होंने कहा राजीव गांधी जी को युवाओं पर बहुत मन था। युवा शक्ति की राजनीति में भागीदारी बढ़ाने के लिए उन्होंने मतदान में आयु 21 से घटाकर 18 वर्ष कर दी थी। राजीव गांधी ने भारत को अंतरराष्ट्रीय मंच पर भी अभूतपूर्व सफलता दिलाई थी।

कार्यक्रम में पीसीसी सदस्य रोहित कुमार शुक्ला, डॉ प्रशांत देव शुक्ला, डॉक्टर नीरज तिवारी, जिला कोषाध्यक्ष वेदांत तिवारी, आशुतोष तिवारी, अवध राज यादव, विश्वास सिंह, मोहम्मद बिलाल, जावेद अख्तर, महिला कांग्रेस अध्यक्ष सरोज कश्यप ने राजीव गांधी को श्रद्धा सुमन अर्पित किए। कार्यक्रम में पीसीसी सदस्य प्रशांत देव शुक्ला, सेवादल जिला अध्यक्ष महेंद्र शुक्ला ने अपने विचार रख राजीव गांधी को श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

अब नहीं होगा बैंक ऑफ बड़ौदा का स्थानांतरण

अखंड भारत संदेश

सांसद व विधायक के प्रयास रुका, कैथौला शाखा का था मामला

लालगंज, प्रतापगढ़। क्षेत्र के कैथौला गांव में स्थिति बैंक ऑफ बड़ौदा का स्थानांतरण अब नही होगा। आस पास के लोगो को जब जानकारी हुई तो सभी ने खुशी जताई। बता दें की कैथौला के साथ ही पड़ोस के गावों को बैंकिंग सुविधा प्रदान करने के लिए राज्यसभा सांसद प्रमोद तिवारी व विधायक मोना के प्रयास से कई वर्ष पहले गांव में बैंक को स्थापित किया गया था।

अभी हाल ही में बैंक के अधिकारियो ने इसे रानीगंज कैथौला बाजार ले जाने के लिए कोरम पूरा ही कर रहे थे कि मामले की जानकारी ग्रामीणों को हो गई। वह लोग परेशान हो गए। क्षेत्रीय लोगो ने बैंक स्थानांतरण की जानकारी राज्यसभा सांसद प्रमोद तिवारी को दी साथ ही बैंक का स्थानांतरण न हो इसके लिए अनुरोध भी किया। राज्यसभा सांसद ग्रामीणों की सुविधा को देखते हुए नियमावली का हवाला देते हुए विभाग को पत्र लिखा। विभागीय जांच के बाद सब कुछ ठीक मिला और बैंक के स्थानांतरण को रोक दिया गया। बैंक से लाभान्वित कैथौला, कलापुर, सरैया, बरीबोझ, इटहा, मधुकरपुर, रोहड़ा, देल्हूपुर के ग्रामीणों ने इस मौके पर एक बैठक कर सांसद व क्षेत्रीय विधायक के प्रति आभार जताया। इस मौके पर पूर्व प्रमुख ददन सिंह, भैयाराम तिवारी, मो इस्लाम, देवेंद्र सिंह, भूपेंद्र यादव, सत्येंद्र सिंह, नन्हे खान, कबीर समेत सैकड़ों लोग मौजूद रहे।

ठंडा पेयजल पिलाने में आगे आए शहर के दो प्रमुख चिकित्सक

डा0 संजय कपूर व डा0 घनश्याम अग्रवाल ने की शुरूआत

अखंड भारत संदेश

राहगीरों को ठंडा पानी पिलाते डा0 संजय कपूर।

प्रतापगढ़। इस भीषण गर्मी में जब तापमान 44 व 45 डिग्री चल रहा है, ऐसे में आम लोगों को ठंडा पेयजल उपलब्ध कराने में शहर के दो प्रमुख चिकित्सक सामने आए हैं। शहर के रोटरी क्लब के पूर्व अध्यक्ष एवं लाज भोला व लाल पचैरी के पदाधिकारी डा0 संजय कपूर ने प्रयागराज-अयोध्या राजमार्ग पर कपूर चैराहे पर स्थित क्लीनिक पर तथा डा0 घनष्याम अग्रवाल ने राम जानकी मंदिर के सामने शांतनु नर्सिंग होम पर पानी का घड़ा रखकर आने-जाने वाले लोगों के लिये ठंडा पेयजल की सुविधा उपलब्ध कराया।

इस पुनीत व संवेदनषील कार्य को करने वाले डा0 संजय कपूर ने कहा कि गर्मी में अधिक से अधिक पेयजल का उपयोग सभी को करना चाहिये तभी गर्मी का असर शरीर में कम होता है। इस अवसर पर षिवधर पाण्डेय, संतोष नारायण त्रिपाठी, बसंत कुमार त्रिपाठी आदि ने नागरिकों को ठंडा पेयजल पिलाने में सहभागिता की जिसकी लोगों ने सराहना किया। लोगों का कहना है कि इसी तरह समाज के बडे.-बडे. लोग भी संवेदनषीलता दिखाएं तो आने-जाने वाले लोगों को शुद्ध पेयजल के लिये भटकना नहीं पडेगा और इस भीषण गर्मी से आसानी से बचा जा सकता है।

औद्योगिक कम्पनियों के भ्रमण पर निकले बच्चे

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। यूनिक वेलफेयर फाउंडेशन के द्वारा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय भारत सरकार के सहयोग से ग्रामीण छात्रों का दल औद्योगिक क्षेत्र भ्रमण पर हुआ रवाना श्रीमती पार्वती कमल बहादुर सिंह इन्टरमीडिएट कालेज के प्रबन्धक श्री नरेन्द्र बहादुर सिंह एवं सम्मानित समाजसेवी देवेंद्र भूषण तिवारी ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया ग्रामीण बच्चों को औद्योगिक क्षेत्र का भ्रमण यूनिक वेलफेयर फाउंडेशन द्वारा कराया जा रहा है। जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में पढ़ने वाले बच्चों का तकनीकी जांनकारी के प्रति जानकारी बढ़ने के साथ-साथ नये क्षेत्रों की जानकारी भी मिलती है और बुद्धि का विकास होता है 100 बच्चों के टीम को हरी झंडी दिखाकर सतारिया नैनी प्रयागराज आदि क्षेत्रों में भ्रमण के लिए रवाना किया इस कार्यक्रम का संचालन संतोष कुमार चतुर्वेदी द्वारा किया गया। कार्यक्रम में दिनेश कुमार, प्रेम चंद, दिनेश सिन्ह, अर्चना सिन्ह दिनेश सिन्ह प्रेम पाल, भीष्म प्रताप सिंह उमेश यादव धीरेन्द्र प्रताप सिंह एवं छात्र लोग मौजूद रहे।

भूमिधारी जमीन पर अवैध कब्जा की शिकायत

बिहारगंज, प्रतापगढ़। अंतू थाना के कल्याणपुर दंडीकाछ ग्रामसभा में भूमिधरी जमीन पर जबरन निर्माण हो रहा है। पीड़ित परिवार ने बिना जमीन बंटवारे के निर्माण करने का आरोप लगाया है। बिना पैमाईश के रिपोर्ट लगाने का लेखपाल पर आरोप लगाया। पीड़ित अनिरुद्ध मिश्र ने एसपी ऑफिस एवम तहसील में शिकायत पत्र देकर पुलिस पर मिलीभगत का आरोप लगाया है। पीड़ित परिवार का कहना है कि अंतू पुलिस के सहयोग से जबरन निर्माण कराया जा रहा है जबकि उसके परिवार पर दबाव डालने के लिए पुलिस दो बार चालान कर चुकी है।

11551 दीपों से जगमग होगा मां बेल्हा देवी घाट

श्री गंगा दशहरा महोत्सव को भव्य मनाने की बनी रूपरेखा

अखंड भारत संदेश

गंगा दशहरा महोत्सव की तैयारी को लेकर बैठक में मौजूद पदाधिकारीगण

प्रतापगढ़। श्री गंगा दशहरा महोत्सव समिति की एक बैठक मां बेल्हा देवी धाम के उपप्रबंधक व समिति के अध्यक्ष प्रमोद सिंह मुन्ना भइया की अध्यक्षता में संपन्न हुई। इसमें 30 मई को श्री गंगा दशहरा महोत्सव मनाने के विषय में समिति के लोगों ने विचार विमर्श किया।

कार्यक्रम के संयोजक रोशनलाल उमरवैश्य ने बताया कि विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी गंगा दशहरा महोत्सव बेल्हा देवी धाम में मनाया जाएगा। 30 मई को 11551 दीपों से सभी घाटों को प्रकाश में किया जाएगा और मां बेल्हा देवी मंदिर धाम व हनुमान मंदिर आदि मंदिर परिसर को फूल-मालाओ और विद्युत झालरों से सजाया जाएगा। तत्पश्चात शाम को मां सई गंगा की महाआरती होगी। समिति के अध्यक्ष प्रमोद कुमार सिंह(मुन्ना भइया) ने कहा कि सभी तैयारियां समय से पूर्ण कर ली जाएं और अब की बार महोत्सव में और भव्यता लाने का प्रयास किया जाएगा। भक्तगण बहुत ही उत्साहित हैं गंगा दशहरा महोत्सव में गत वर्षो की भीड़ को देखते हुए और भी इंतजाम किए जाएंगे। इस अवसर पर रघु पंडा, मनोज पंडा, सनी तिवारी, त्रिवेणी तिवारी, आशीष पाठक, आशीष सिंह, सुरेश मास्टर, जग्गू पंडा, सोनू पंडा, मोनू पंडा, प्रमोद, अजय, गैंडा, अरविंद कोटेदार, भारत, दीपक, प्रदीप, विजय, बच्चा, राजू, अमन, मोनू ,पप्पू पांडे, गिरजा, गणेश, बीनू ,गोलू, रविंद्र, इंद्रेश,संजय बाबा आदि उपस्थित रहे।

सूरज ने सीजीएल में ऑडीटर पद पर चयन से बढ़ाया संग्रामगढ़ का मान

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। स्थानीय रोडवेज डिपो में टीआई संजय तिवारी के पुत्र सूरज तिवारी ने सीजीएल में आडीटर पद पर सफलता हासिल कर जिले का नाम रोशन किया है। सूरज की सफलता पर साथी परिवहनकर्मियों के साथ उसके पैतृक गांव संग्रामगढ़ में भी खुशी का माहौल देखा गया। संग्रामगढ़ निवासी सूरज तिवारी की मां रमा तिवारी गृहणी हैं। सूरज ने हाईस्कूल संग्रामगढ़ इण्टर कालेज से प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण करते हुए इण्टरमीडिएट लखनऊ से तथा बीटेक कानपुर से किया। सूरज इस समय घर पर ही रहकर प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में लगा हुआ था। इसके पहले उसने एसएससी की परीक्षा में उन्तीसवीं रैंक हासिल की। सूरज की सफलता पर सांसद प्रमोद तिवारी, अरूण तिवारी, संतोष उपाध्याय, अवनीश शर्मा, राजेश तिवारी, अनुराग उपाध्याय आदि ने खुशी जाहिर करते हुए इसे बड़ी उपलब्धि कहा है।

स्वच्छता को लेकर नगर पालिका ने निकाली जन जागरुकता रैली

नगर पालिका द्वारा निकाली गई रैली में शामिल अधिकारी।

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। मेरी लाइफ मेरा स्वच्छ शहर स्वच्छ भारत मिशन शहरी 2.0 अभियान के क्रम में नगर पालिका परिषद बेला प्रतापगढ़ में अधिशासी अधिकारी राम अचल कुरील द्वारा फीता काटकर उद्घाटन किया गया।

मेरी लाइफ मेरा स्वच्छ शहर अभियान के तहत रेड्यूज, रियूज, रीसाइकल केंद्र के अंतर्गत लोगों को जागरूक करने के उद्देश्य से जन जागरुकता रैली निकाली गई और रैली को हरी झंडी भी दिखाई, जिसमें किताबे कपड़े प्लास्टिक और खिलौने को भी दान किया गया। उद्घाटन के दौरान मुख्य रूप से सफाई एवं खाद्य निरीक्षक संतोष कुमार सिंह, राजस्व निरीक्षक लाल बहादुर, राजेंद्र बिन्द, सफाई प्रभारी प्रशांत सिंह, जिला कार्यक्रम प्रबंधक स्वच्छ भारत मिशन शहरी वरुण कुमार सिंह, जिला समन्वयक आशीष मिश्रा, राजेंद्र यादव, राजू कार्यालय स्टाफ एवं सफाई कर्मचारीगण शामिल रहे।

फांसी के फंदे पर झूलता मिला शव, कोहराम

संदिग्ध परिस्थिति में सड़क के किनारे मिला शव

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। अधेड़ की फांसी के फंदे से झूलकर हुई मौत को लेकर शनिवार को हडकंप मच गया। उदयपुर थाना के कुम्भीआइमा निवासी रामसुमेर का पुत्र दुर्गा प्रसाद मौर्य 53 शुक्रवार की रात खाना खाने के बाद अपने कमरे मे सोने चला गया।

सुबह ग्रामीणों की नजर दुर्गा प्रसाद के गांव से सौ मीटर दूर पेड़ पर शव के लटकने से पर पड़ी तो हडकंप मच गया। ग्रामीणों ने मृतक के परिजनों को घटना की सूचना दी। जानकारी मिलने पर उदयपुर पुलिस मौके पर पहुंची और ग्रामीणों के सहयोग से शव को पेड से नीचे उतरवाया। पुलिस ने शव का पंचनामा कराकर उसे पीएम के लिए जिला मुख्यालय भेजवाया। ग्रामीणों में चर्चा यह भी रही कि मृतक के बड़े बेटे ने शेयर बाजार में कुछ रूपया लगा रखा था। यह धनराशि डूब गयी। ऐसी स्थिति मे लाखों के कर्जे की भरपाई के लिए मृतक परेशान रहने लगा। ग्रामीणों के मुताबिक कुछ दिन पूर्व मृतक ने कर्ज अदा करने के लिए दस बिस्वा अपना खेत भी बेंच दिया था। इसके बाद भी कर्जदार तगादे के लिए घर आने लगे थे। कर्ज को लेकर दुर्गा प्रसाद परेशान था। हालांकि पुलिस मौत के कारणों को लेकर पीएम रिर्पोट के इंतजार मे बतायी जाती है। अधेड़ की मौत से परिजनों मे कोहराम भी मच गया। मृतक के दो बेटे हैं। इसमें बड़ा बेटा उमाचंद्र 30 तथा शेखर 27 है। उधर अंतू थाना क्षेत्र के गौरबारी गांव के पास सड़क के किनारे संदिग्ध परिस्थितियों में युवक का शव मिलने से क्षेत्र में सनसनी फैल गई। मामले की जानकारी पुलिस को दी गई। सूचना मिलने पर भारी पुलिस बल के साथ अंतू थाना प्रभारी अवन कुमार दीक्षित मौके पर पहुंचे। इस दौरान पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर जांच पड़ताल में जुट गई। बता दें कि गौरबारी गांव के पास संदिग्ध अवस्था में युवक का शव मिला था। मृतक की पहचान जयकरन सरोज निवासी लवली कोहडौर के रूप में हुई है।

रोजगार परक शिक्षा देश के विकास के लिए महत्त्वपूर्णः लाल गीतेश्वर

कौशल विकास प्रशिक्षण केंद्र का हुआ शुभारंभ

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। रोजगार परक शिक्षा से ही देश का विकास संभव है उक्त बाते एसपी इंटरमीडिएट के प्रबंधक लाल गीतेश्वर प्रताप सिंह ने उत्तर प्रदेश कौशल विकास योजना के तहत खोले गए प्रशिक्षण केंद्र के उद्घाटन के दौरान मुख्यातिथि के रूप में कही।

श्री सिंह ने बताया की प्रदेश सरकार द्वारा संचालित केंद्र पर बच्चों को निः शुल्क कंप्यूटर एवं इंग्लिश स्पीकिंग कोर्स के साथ ही ब्यूटीशियन के कोर्स को सिखाया जाएगा। केंद्र के प्रबंधक शिव पूजन ने बताया की सभी छात्र-छात्राओं को सरकार द्वारा किताबे और ड्रेस भी मुफ्त में प्रदान की जाएगी। साथ ही कहा कि संस्थान में जिन बच्चो की उपस्थिति 70 प्रतिषत होगी। उन्हे परीक्षा में शामिल किया जाएगा। भविष्य में उन्हें विभिन्न कंपनियों के द्वारा रोजगार के अवसर भी प्राप्त हो सकते है। संस्थान में 18 से 35 वर्ष के लोग ही दाखिला पा सकेंगे। इस योजना के तहत चार माह का प्रशिक्षण दिया जायेगा। कार्यक्रम का संचालन रविन्द्र प्रताप सिंह ने किया। इस मौके पर अशोक सिंह, विष्णु सिंह, आशुतोष सिंह, हरिलाल सरोज, सत्येंद्र सिंह सौम्य, कौशलेंद्र सिंह, सत्येंद्र श्रीवास्तव आदि लोग उपस्थित रहे।

नौकरी का झांसा देने वाला ठग धराया

अखंड भारत संदेश

लालगंज प्रतापगढ़। नवजवानों को बड़ी बड़ी सरकारी नौकरियों में चयनित कराने का झांसा देने वाला आरोपी पुलिस के हत्थे चढ़ गया। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ केस दर्ज कर रविवार को उसे न्यायालय भेज दिया। आरोपी ठगी में इस कदर माहिर निकला कि वह बैंक तथा पुलिस सेवा के साथ बड़ी बड़ी नौकरियों का फर्जी आईकार्ड एवं नियुक्ति पत्र आदि भी रचने लगा। उसकी पोल खुली तो पुलिस भी जालसाजी के उसके तिकड़म को देख दंग रह गई। लीलापुर थाने के बरिश्ता निवासी मो. इस्माइल पुत्र जैनुल आब्दीन के अनुसार उसे नौकारी दिलाने के नाम पर सिंधौर गांव निवासी चंद्रपाल पांडेय के पुत्र बृजेश कुमार पांडेय ने दो लाख सत्तर हजार रूपए की मांग की। आरोपी ने पीड़ित को झांसा देते हुए एडवांस के रूप में पंद्रह हजार रूपए गड़प भी कर लिए। यही नही आरोपी ने पीड़ित की चचेरी बहन समशेरगंज निवासी मंसूर अली की पुत्री शहनूर बेगम को डिप्टी एसपी पद पर नौकरी दिलाने के नाम पर ठगी की।

खबर संक्षेप

तीन वारण्टी अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। थाना चरवा पुलिस बल द्वारा वारंटी अभियुक्त वीरेन्द्र कुमार पुत्र बच्चीलाल निवासी मलाक नागर थाना चरवा को गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है इसी प्रकार थाना कोखराज पुलिस बल द्वारा वारंटी अभियुक्त राजकुमार पुत्र स्व0 मोतीलाल निवासी गिरधरपुर थाना कोखराज को गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है इसी प्रकार थाना संदीपनपाट पुलिस बल द्वारा वारंटी अभियुक्त कंचन सिंह पुत्र जगदेव निवासी पट्टी परवेजा थाना संदीपनघाट को गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है।

दुष्कर्म का वांछित गिरफ्तार

कौशाम्बी। जनपद में अपराध एवं अपराधियों के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान के क्रम में थाना पश्चिम शरीरा पुलिस बल द्वारा पॉक्सो एक्ट से सम्बन्धित वांछित अभियुक्त धर्मेंद्र पुत्र छोटेलाल निवासी औरनी थाना सिंहपुर जनपद अलीगढ को पुनवार चौराहा से गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है।

लोकसभा विधानसभा बूथ स्तरीय अभियान चलाएगी भाजपा

लोकसभा चुनाव 2024 की तैयारी में जुटती दिखाई पड़ रही है भारतीय जनता पार्टी

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। केंद्र में भारतीय जनता पार्टी की नरेंद्र मोदी की सरकार को लगभग 9 वर्ष पूर्ण हो रहे हैं आगामी 2024 में लोकसभा का चुनाव होना संभव है लोकसभा चुनाव को लेकर भारतीय जनता पार्टी ने गुपचुप तरीके से तैयारियां शुरू कर दी है पार्टी के केंद्र प्रदेश नेतृत्व के निर्देशन में जिले से लेकर लोकसभा क्षेत्र विधानसभा क्षेत्र बूथ स्तर तक बैठक करने की तैयारियां शुरू हो गई है रविवार को भारतीय जनता पार्टी कार्यालय कौशांबी में जिला कार्यसमिति की बैठक में भाजपा के दिग्गज जुटे हैं जिला प्रभारी अनिल सिंह जिला अध्यक्ष अनीता त्रिपाठी जिला महामंत्री संजय जयसवाल पूर्व विधायक लाल बहादुर पूर्व विधायक संजय कुमार गुप्ता पूर्व जिला अध्यक्ष यशपाल केसरी सहित

बैठक में भाजपा जिला प्रभारी अनिल सिंह जिला अध्यक्ष अनीता त्रिपाठी सहित उपस्थित लोग

तमाम दिग्गजों ने बैठक को संबोधित करते हुए आगे की रणनीति पर चर्चा की है प्रदेश अध्यक्ष के निर्देशन में आगामी होने वाले कार्यक्रमों की रूपरेखा के बारे में बैठक पर चर्चा की गई वहीं केंद्र में नरेंद्र मोदी की सरकार के 9 वर्ष की उपलब्धियों पर चर्चा करते हुए आगामी कार्यक्रमों हेतु अभियान चलाए जाने को लेकर जिले के कार्यकताओं को संबोधित किया गया 22 23 24 मई को सभी मंडल अध्यक्षों को मंडल कार्यसमिति की बैठक संपन्न कराने के निर्देश दिए गए हैं नगर निकाय के चुनाव की सफलता पर भी बैठक में चर्चा की गई है सोशल मीडिया संवाद प्रेस वार्ता प्रबुद्ध वर्ग सम्मेलन व्यापारी वर्ग सम्मेलन सोशल मीडिया वॉलिंटियर सम्मेलन विकास तीर्थ का अवलोकन वरिष्ठ कार्यकर्ता सम्मेलन बैठक मोर्चा सम्मेलन लाभार्थी सम्मेलन सहित विभिन्न कार्यक्रमों की रूपरेखा की तैयारी में कार्यकताओं को जुट जाने के लिए निर्देशित किए गए हैं कार्यक्रम में जिला पंचायत अध्यक्ष कल्पना सोनकर पूर्व विधायक शीतला प्रसाद पटेल गोलू सिंह वीरेंद्र कुमार फौजी राजेंद्र कुमार यादव आशीष केसरवानी बच्चा सत्यम केसरवानी अजय पांडे धर्मराज मौर्या दीपचंद दिवाकर राकेश पांडे अशोक केसरवानी जितेंद्र साहू उमेश केसरवानी अरविंद द्विवेदी सहित समस्त मंडल अध्यक्ष और जिले के पदाधिकारी कार्यकर्ता सदस्यगण बैठक में मौजूद रहे।

मेठ के साथ ईट भट्ठा गया मजदूर रहस्यमय परिस्थिति में लापता

कौशाम्बी। सांदीपन घाट थाना क्षेत्र का एक मजदूर रोजी-रोटी के सिलसिले में गांव के दो अन्य लोगों के साथ हापुड़ के ईट भट्टे में काम करने गया था जहां रहस्यमय परिस्थितियों में मजदूर लापता हो गया है साथ गए लोगों का कहना है कि उन्होंने मजदूर को ट्रेन में बिठा दिया है लेकिन दस दिन बाद भी मजदूर घर नहीं पहुंच सका है। मामले की शिकायत मजदूर की पत्नी ने पुलिस से कर ईट भट्ठा के मालिक मुंशी और साथ गए लोगों पर कार्यवाही की मांग की है बता दें कि संदीपनघाट थाना क्षेत्र के शिवलाल पुत्र स्व. रमेश्वर तीन माह पूर्व गाँव के ही सुरेश वा हरेराम पुत्रगण रामरूप ईट भट्ठा मेठ के साथ हापुड़ के ईट भट्ठा में काम करने गए हैं 5 मई के आसपास शिवलाल ने फोन करके अपनी पत्नी राजपति से बताया कि भट्ठा के मुंशी ने उन्हें बेरहमी से मारा पीटा है जिससे उन्हें गंभीर चोटें आई हैं जब राजपति ने साथ में गए लोगों से बात की तो उन्होंने कहा कि शिवलाल की तबीयत खराब है और 10 मई को शिवलाल को ट्रेन से बिठा दिया गया है और वह घर पहुंच जाएगा 10 दिन बीत जाने के बाद शिवलाल घर नहीं आ सका है घर ना आने से शिव लाल की पत्नी राजपति चिंतित है और जब उसने सुरेश और हरेराम से फोन करके शिवलाल के बारे में जानकारी चाही तो हरेलाल और सुरेश महिला को गाली-गलौज कर जान से मारने की धमकी देने लगे हैं इतना ही नहीं सुरेश के घर वाले भी राजपति के घर पहुंच कर मामले को दबाने का दबाव डाल रहे हैं महिला को आशंका है कि उसके पति शिवलाल के साथ कोई अनहोनी घटना हो गई है महिला ने सूचना पुलिस को देकर आरोपियों के विरुद्ध मुकदमा दर्ज कर कार्रवाई की मांग की है।

न्यूज झरोखा

2 पशु तस्करों को गिरफ्तार कर बरामद की 16 दुधारू भैंस

कौशाम्बी। जनपद में अपराध एवं अपराधियों के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान के क्रम में थाना कोखराज पुलिस बल द्वारा वाहन चेकिंग के दौरान मुखबिर की सूचना पर दो अभियुक्तों वंशराज राम पुत्र किशुन राम निवासी ग्राम उसिया थाना दिलदार नगर

जनपद गाजीपुर व सरफराज कुरैसी पुत्र मो० इरशाद निवासी मोहल्ला कानून गो थाना जमानिया जनपद गाजीपुर को प्रयागराज बाई पास मोड सकाड़ा से एक अदद वाहन ट्रक (यूपी 61 अळ3965) से 16 राशि दुधारू भैंस के साथ गिरफ्तार कर गिरफ्तारी व बरामदगी के आधार पर थाना स्थानीय पशु क्रूरता अधिनियम मुकदमा पंजीकृत कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्तों को न्यायालय भेज दिया है।

चोरी कर भाग रहे चोर को रुपये के साथ किया गिरफ्तार

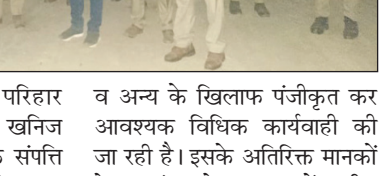

कौशाम्बी। जनपद में अपराध एवं अपराधियो के विरुद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम में थाना सराय अकिल पुलिस बल को मुखबिर खास द्वारा सूचना दी गयी कि ग्राम कोल्हुआ चोरी की घटना को अंजाम देकर एक व्यक्ति भागने की फिराक में है

सूचना पर सराय अकिल पुलिस द्वारा मुखबिर के बताये हुए स्थान पर पहुंचकर अभियुक्त लड्डू पुत्र एकलाख खां निवासी ग्राम डिहवा कटैया थाना सराय अकिल को बकोढा पुलिया के पास से गिरफ्तार कर जमातलाशी से अभियुक्त के कब्जे से चोरी किये हुये कुल 6000 रुपए तथा चोरी के दो अदद पैन कार्ड व दो अदद आधार कार्ड बरामद हुआ पूछताछ से अभियुक्त द्वारा ग्राम कोल्हुआ व ग्राम बेनपुर में हुई चोरी को घटना को स्वीकार किया गया है। गिरफ्तारी व बरामदगी के आधार पर थाना स्थानीय पर मुकदमा पंजीकृत कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है।

प्रलोभन देकर धर्म परिवर्तन के लिए लोगों को किया जा रहा तैयार

स्थान बदल बदल कर हो रही ईसाई धर्म की सभा पुलिस के कार्यवाही के बाद भी कार्यक्रम से जुड़े लोगों के नहीं टूट रहे हौसले

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। पूजा पद्धति इलाज और सभा के बहाने धर्म परिवर्तन का खेल जिले में जड़े जमाने लगा है प्रशासन के तमाम प्रयास के बाद भी धर्म परिवर्तन में लगे लोगों के हौसले टूटते नहीं दिखाई पड़ रहे हैं जगह बदल बदल कर सभा और कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं जिले के कई दर्जन स्थानों में प्रत्येक रविवार को कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं जहां लोगों को प्रलोभन देकर धर्म परिवर्तन के लिए उसकाया जा रहा है धर्म परिवर्तन में लगे लोगों के तार प्रयागराज से जुड़े हैं और प्रयागराज में बैठे लोगों के संपर्क विदेशों से हैं लेकिन सोशल मीडिया और मोबाइल फोन को सर्विलांस में लगाकर धर्म परिवर्तन के आकाओं के गिरेबान तक पुलिस के हाथ नहीं पहुंच सके हैं कई वर्षों से बेखौफ तरीके से संचालित हो रहे धर्म परिवर्तन के इस खेल में तमाम प्रयास के बाद भी पुलिस और प्रशासनिक अधिकारी धर्म परिवर्तन के मुखिया तक नहीं पहुंच सके हैं। कार्यक्रम आयोजित करने वाले लोगों को भी प्रलोभन देकर कार्यक्रम आयोजित कराए जा रहे हैं जिससे कौशांबी जिले के विभिन्न तहसील और थाना क्षेत्रों में बड़े-बड़े कार्यक्रम आयोजित कर लोगों को प्रलोभन देकर हिंदू धर्म छोड़कर ईसाई धर्म स्वीकार करने के लिए मन मस्तिष्क से तैयार किया जाता है बीते कुछ वर्षों में तमाम लोगों ने लालच में आकर धर्म परिवर्तन भी किया है लेकिन उसके बाद तमाम प्रयास करने के बाद भी प्रशासनिक अधिकारियों के पास धर्म परिवर्तन करने वालों की सूची नहीं

सभा में उपस्थित लोग

तैयार हो सकी है बीते कई वर्षों से कौशांबी जिले के विभिन्न क्षेत्रों में पूजा पद्धति इलाज के बहाने सभा करने वाले लोगों की सूची भी तमाम प्रयास के बाद पुलिस और प्रशासनिक अधिकारी नहीं तैयार कर सके हैं जिससे लालच देकर ईसाई धर्म परिवर्तन करने के इस खेल पर रोक लगती नहीं दिख रही है।

रविवार को फिर चायल तहसील क्षेत्र के तिल्हापुर में सभा आयोजित की गई थी जिसकी भनक पुलिस को लग गई पुलिस ने सभा कर रहे लोगों को डंडा पटक कर खदेड़ दिया लेकिन सभा कर रहे लोगों ने कुछ दूर जाकर दूसरे स्थान पर फिर सभा शुरू कर दी है मंझनपुर कोतवाली क्षेत्र के बेला फतेहपुर बरातफरिक देवखरपुर सहित इलाके के दर्जनों गांव में कई वर्षों से सभा आयोजित हो रही है सभा आयोजित करने वाले लोगों के नाम सार्वजनिक है लेकिन उन तक पुलिस के हाथ नहीं पहुंचे हैं इसी तरह करारी थाना क्षेत्र के गुलामी पुर सेषा सहित दर्जनों स्थानों पर ईसाई धर्म की सभा आयोजित की जाती है जिसके आड़ में लालच देकर धर्म परिवर्तन के लिए लोगों को समझाया जाता है लेकिन उसके बाद पुलिस को कार्यक्रम आयोजित करने वालों की जानकारी नहीं है कोखराज थाना क्षेत्र सैनी कोतवाली क्षेत्र कड़ा धाम मोहब्बतपुर पइंसा कौशाम्बी सराय अकिल थाना सहित जिले के अन्य थाना पुलिस चौकी क्षेत्रों में भी बीते कई वर्षों से सभा आयोजित कर धर्म परिवर्तन के लिए लोगों के दिलों दिमाग में गहरे प्रभाव डाले जाते हैं। ईसाई धर्म परिवर्तन के बहाने पूजा पद्धति इलाज के नाम पर सभा करने वाले लोगों को पुलिस प्रशासनिक अधिकारियों को चिन्हित कर इन पर कठोर कार्रवाई किए जाने की जरूरत है लेकिन अभी तक आला अधिकारी इन सभाओं को लेकर गंभीर नहीं दिखाई पड़ रहे हैं सूत्रों की माने तो सभा आयोजित करने वाले लोगों की आर्थिक हैसियत भी कुछ वर्षों में बड़ी तेजी से बदल गए हैं फटीचर से दिखने वाले लोग लाखों करोड़ो में खेलने लगे हैं आखिर इनके पास रातों-रात अकूत संपत्ति कहां से आई है यह भी बड़ी जांच का विषय है लेकिन इस पर भी पुलिस और प्रशासनिक अधिकारियों ने अभी तक गंभीरता से ध्यान नहीं दिया है सभा आयोजित करने वाले लोगों को चिन्हित कर इन पर कठोर कार्यवाही किए जाने की जरूरत है तभी पूजा पद्धति के आड़ में धर्म परिवर्तन के इस खेल पर रोक लग सकती है।

अवैध बालू खनन करने पर टास्क फोर्स ने मारा छापा

बालू पट्टा धारक के विरुद्ध मुकदमा दर्ज कराते हुए 36 लाख 58 हजार रुपये का लगाया जुर्माना

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। शासन की मंशा के अनुरूप अवैध खनन और परिवहन के खिलाफ प्रभावी कार्यवाही हेतु जिलाधिकारी व पुलिस अधीक्षक द्वारा निर्देशित किया गया था इस क्रम में थाना सराय अकिल अंतर्गत ग्राम मोहम्मदाबाद केवटपुरवा स्थित खनन पट्टा क्षेत्र में अवैध खनन और खनन की शर्तों के उलंघन की सूचना पर उपजिलाधिकारी चायल, क्षेत्राधिकारी चायल और खनन अधिकारी की टास्क फोर्स द्वारा थाना सराय अकील व पिपरी पुलिस फोर्स के साथ देर रात छापा मारकर निरीक्षण किया गया निरीक्षण के दौरान मानकों के उल्लघन, निर्धारित सीमा से बाहर खनन करने और एनजीटी के नियमों की अवमानना करने के संबंध में थाना सराय अकिल पर मुकदमा उत्तर

प्रदेश उप खनिज परिहार अधिनियम व 4/21 खान खनिज अधिनियम तथा 3/4 लोक संपत्ति क्षति निवारण अधिनियम के तहत मे0 मां वैष्णो ट्रेडर्स के प्रो० जगदीश प्रसाद पुत्र स्व0 बलजोर प्रसाद निवासी निधियांवा थाना कोखराज व अन्य के खिलाफ पंजीकृत कर आवश्यक विधिक कार्यवाही की जा रही है। इसके अतिरिक्त मानकों के उल्लंघन के सम्बन्ध में छत्तीस लाख अट्ठावन हजार रुपए का जुमार्ना लगाया कर नियमानुसार विधिक कार्यवाही प्रचलित है।

साढे 6 वर्ष बीते नही हो सका धोबीघाट का सौंदर्यीकरण

अखंड भारत संदेश

अझुवा कौशाम्बी। आदर्श नगर पंचायत अझुवा वार्ड नं 2 अम्बेडकर नगर में सन 2016- 17 में तत्कालीन नगर अध्यक्षा शांती देवी कुशवाहा के प्रस्ताव से 2 करोड़ 38 लाख के भारी भरकम रकम से धोबीघाट तालाब का सौंदर्यीकरण शुरू हुआ था बाउंड्रीवाल सहित 50 लाख रुपये की लाइटिंग व्यवस्था की जानी थी।साढ़े 6 वर्ष बीत गए किंतु आज तक सौंदर्यीकरण कार्य पूरा नही हो सका है न सम्बंधित ठेकेदार ने नगर पंचायत को हैंडओवर किया मजे की बात यह कि तमाम खबर, जानकारी जिम्मेदारों को दी गयी किंतु जिम्मेदारों के कान में जूं तक नही रेंगी, न तो किसी के खिलाफ कोई कार्रवाई हुई। आखिर कौन है जिम्मेदार जो सरकारी धन का बंदरबांट कर रहा है इस बीच नगर अध्यक्ष भी बदले,कई अधिशाषी

2 करोड़ 38 लाख से होना था धोबीघाट तालाब का सौंदर्यीकरण

अधिकारी बदल गए। वहीं अधिशासी अधिकारी सुभाष चंद्र सिंह ने बताया कुछ कार्य शेष है 90 फीसदी कार्य हो गया है।ठेकेदार मेडिकल पर है शेष कार्य अति शीघ्र पूरा करवा दिया जाएगा 2016 में जिन अध्यक्षा शांती देवी कुशवाहा ने तालाब सौंदर्यीकरण का प्रस्ताव दिया था 2023 नगर पंचायत चुनाव में शांती देवी कुशवाहा विजयी हुई हैं नवनिर्वाचित नगर पंचायत अध्यक्ष शांति देवी कुशवाहा ने कहा कि शपथग्रहण के बाद शीघ्र ही सौन्दयीर्कृत तालाब की सौगात देंगी।

शराब के साथ तीन अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। थाना मंझनपुर पुलिस द्वारा अभियुक्त जयचन्द्र पुत्र धर्मपाल निवासी महन्दापुर थाना मंझनपुर जनपद को 20 लीटर अवैध कच्ची शराब मय बनाने के उपकरण के साथ गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त का चालान न्यायालय कर दिया है इसी प्रकार थाना सैनी पुलिस द्वारा अभियुक्त रघुराज उर्फ अतहर पुत्र सैकू निवासी वार्ड नं0 02 अजुहा थाना सैनी को 16 लीटर अवैध कच्ची शराब मय बनाने के उपकरण के साथ गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त का चालान न्यायालय कर दिया है इसी प्रकार थाना कोखराज पुलिस द्वारा अभियुक्त रामचन्द्र पुत्र स्व0 विषनाथ निवासी मनमऊ थाना कोखराज को 08 लीटर अवैध कच्ची शराब मय बनाने के उपकरण के साथ गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त का चालान न्यायालय कर दिया है।

डीपीआरओ के निरीक्षण में मिली खामियों के बाद बौखलाए प्रधान के दबंग सहयोगी

अमृत सरोवर तालाब में बिना लाइट लगाए निकाल लिया गया लाखों की रकम, पूर्व जिला बदर अपराधी ग्राम पंचायत का कंप्यूटर घर में रखकर कर रहा निजी कार्य नहीं दर्ज हुआ मुकदमा

अखंड भारत संदेश

कोखराज कौशाम्बी। सिराथू तहसील क्षेत्र के ग्राम पंचायत राला में अपशिष्ट कचरा गड्ढा के निर्माण की जांच करने शुक्रवार को राला गांव पहुंचे जिला पंचायत राज अधिकारी को मौके पर तमाम खामियां मिली थी नालिया बज बजा रही थी जिस पर जिला पंचायत राज अधिकारी ने पंचायत सचिव और ग्राम प्रधान को जमकर फटकार लगाई थी डीपीआरओ की फटकार के बाद ग्राम प्रधान का सहयोगी एक पूर्व जिला बदर अपराधी बदसलूकी पर उतर आया है लोगों से अभद्रता कर यह अपराधी गाली गलौज कर रहा है बताया जाता है कि ग्राम पंचायत में खरीदे गए कंप्यूटर को प्रधान का यह सहयोगी जिला बदर अपराधी ने कंप्यूटर व अन्य सामग्री को अपने घर में रख लिया है जिससे योगी सरकार के मंशा के अनुसार ग्रामीणों का सरकारी कार्य नहीं हो रहा है डीपीआरओ के निरीक्षण की खबर चलाए जाने के बाद प्रधान का अपराधिक प्रवित्ति का यह सहयोगी पत्रकार अजीत कुशवाहा से भी फोन पर बदसलूकी की बात कर रहा है सरकारी कंप्यूटर घर उठा ले जाने वाले इस अपराधी पर अभी तक अधिकारियों ने मुकदमा दर्ज कराकर कंप्यूटर बरामद कर अपराधी को गिरफ्तार कर जेल नहीं भिजवाया है। राला गांव में अमृत सरोवर तालाब के निर्माण में लाखों रुपए की रकम निकाल लिए जाने के बाद विद्युत लाइट नहीं लगाई गई है खड़ंजा नहीं बिछाया गया है पुराने तालाब की रिपेयर कर ग्राम प्रधान और पंचायत सचिव के सहयोग से उसके सहयोगी ने लाखों रुपए की रकम लूट लिया है नाली निर्माण भी घटिया क्वालिटी की बनाई गई है सीमेंट बालू का मिश्रण अनुपात भी बेहद खराब है ग्राम पंचायत में भ्रष्टाचार उजागर होने के बाद अभी तक ग्राम प्रधान पंचायत सचिव और उसके सहयोगियों पर मुकदमा दर्ज कराकर उनकी गिरफ्तारी नहीं कराई गई है।

जिला पंचायत राज अधिकारी के निरीक्षण में ग्राम पंचायत राला में तमाम खामियां मिली थी जिस पर जिला पंचायत राज अधिकारी ने जिम्मेदारों को फटकार लगाते हुए व्यवस्था में सुधार करने का निर्देश दिया था लेकिन 3 दिन बीत जाने के बाद व्यवस्था में सुधार नहीं हो सका है ग्राम प्रधान का यह अपराधिक प्रवृति का सहयोगी जिला पंचायत राज अधिकारी के बारे में भी भद्दे भद्दे कमेंट कर रहा है लोगों ने अधिकारियों का ध्यान आकृष्ट कराते हुए ग्राम पंचायत के भ्रष्टाचार की जांच कराकर पंचायत सचिव और ग्राम प्रधान पर कार्यवाही करते हुए कंप्यूटर उठा ले जाने पर पूर्व जिला बदर अपराधी पर मुकदमा दर्ज कराए जाने की मांग की है।

वार्षिकोत्सव पर पुरातन छात्र ने दिया किड्स पार्क की सौगात

किड्स पार्क का शिक्षक विधायक बाबूलाल तिवारी ने किया बच्चों को समर्पित

अखंड भारत संदेश

अझुवा कौशाम्बी। आदर्श नगर पंचायत अझुवा में दयानन्द सरस्वती इंटर कालेज में वार्षिकोत्सव धूमधाम से मनाया गया।दयानन्द सरस्वती पब्लिक स्कूल का बीती देर शाम शिक्षक विधायक बाबूलाल तिवारी ने भव्य उद्घाटन किया। मुख्य अतिथि के रूप में पहुंचे शिक्षक विधायक बाबूलाल तिवारी ने सरस्वती प्रतिमा पर दीप प्रज्वलित माल्यर्पण कर कार्यक्रम की शुरूआत की है कार्यक्रम में मौजूद नवनिर्वाचित नगर पंचायत अध्यक्षा शांती देवी कुशवाहा के साथ विद्यालय के पूर्व छात्र रहे इंजीनियर राजेन्द्र केसरवानी द्वारा कालेज प्रांगड़ में बनवाये गए किड्स पार्क का उद्घाटन भी किया गया इस दौरान वक्ताओं ने पूर्व छात्र इंजीनियर

कार्यक्रम का शुभारंभ करतीं नगर पंचायत अध्यक्ष शांति कुशवाहा

कार्यक्रम प्रस्तुत करती छात्राएं

राजेन्द्र केसरवानी द्वारा किये गए विद्यालय के प्रति तमाम कार्यों पर उनकी प्रशंसा की गई पूर्व छात्र होकर भी विद्यालय के प्रति ऐसी सकारात्मक सोच को प्रणाम किया गया बता दें कि इंजीनियर राजेन्द्र केसरवानी इस विद्यालय के अलावा भी कई विद्यालयों में समय समय पर पठन पाठन सामग्री, खेलकूद सामग्री उपलब्ध करवाते रहते हैं ,छात्रों के प्रति बड़ी उदार भाव रखते हैं। वार्षिक कार्यक्रम के तहत विद्यालय के बच्चों ने तमाम तरह के उपदेश परक,शिक्षा परक नाटकों, गीतों, सांस्कृतिक कार्यक्रमों को प्रस्तुत कर उपस्थित लोगों को एकाग्रचित्त होकर देखने सुनने को मजबूर किया है। उच्च अंक प्राप्त करने वाले हाईस्कूल, इंटर के छात्रों को सम्मानित किया गया है। उपस्थित अतिथियों ने विद्यालय के उज्ज्वल भविष्य की कामना की है इस दौरान नगर के वरिष्ठ समाज सेवी ओमप्रकाश कुशवाहा, विद्यालय अध्यक्ष कपूरचंद केसरवानी, प्रधानाचार्य डॉ. रमेश चंद्र आचार्य , डॉ. रामकिरण त्रिपाठी शिव प्रताप मौर्य, शीलू पाण्डेय प्रशांत केसरवानी सहित तमाम गणमान्य एवम विद्यालय के अध्यापक गण, अभिभावको सहित छात्र छात्राएं मौजूद रहे है।

दबंगों ने बुलडोजर चलाकर गिरा दिया विधवा गरीब की झोपड़ी

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। योगी सरकार की बुलडोजर कार्यवाही का फायदा अब गुंडे दबंग भी उठा रहे हैं गरीबों की जमीन पर कब्जा करने के लिए बुलडोजर ले कर दबंग गुंडे गरीबों के घर पहुंच रहे हैं ताजा मामला मंझनपुर कोतवाली क्षेत्र के नगर पालिका परिषद मंझनपुर के गौरा में रविवार को दोपहर 2:00 बजे देखने को मिला है इलाके का एक दबंग गरीबों की जमीन पर कब्जा करने के उद्देश्य से रविवार को बुलडोजर लेकर पहुंचा और गरीबों की झोपड़ी को बुलडोजर से गिरा दिया है अपनी झोपड़ी को बचाने के लिए दबंग के सामने गरीब गिड़गिड़ाते रहे लेकिन दबंग नहीं पसीजे है बताया जाता है कि जमीन पर कब्जा करने वाला यह दबंग मंझनपुर थाना के दीवार कोतारी चौकी का पुलिस चौकीदार है। गरीबों के घर के आस-पास मौके पर मौजूद नीम गूलर के कई हरे भरे पेड़ भी बुलडोजर से गिरा कर दबंग ने धराशायी कर दिया है गीता देवी पत्नी स्वर्गीय जगमोहन वा राम बदन पुत्र राम लखन सहित कई गरीब लोगों की झोपड़ी पर बुलडोजर चलाकर उनके आवास को नियम विरुद्ध तरीके से जबरिया धराशाई कर दिया है दबंगों की कार्यवाही से गरीबों में आक्रोश व्याप्त है गरीबों की

सरकारी जमीन पर कब्जा करने के उद्देश्य से दबंगों ने गिरा दिए कई हरे पेड़

झोपड़ी गिराए जाने के मामले में जब मौके पर मौजूद लोगों ने दबंगों से अधिकारियों का आदेश मांगा तो कहा गया एसडीएम के आदेश से गिराया जा रहा है। लेकिन वह किसी भी अधिकारी का आदेश नहीं दिखा सके हैं मामले में लेखपाल व चौकी इंचार्ज की भूमिका संदिग्ध है। इलाके के लोगों ने डीएम एसपी का ध्यान आकृष्ट कराते हुए गरीबों का घर गिराने वाले दबंगों पर कार्रवाई की मांग की है।

संपादकीय

मुफ्त रेवड़ियां और चुनाव

एक ओर सुप्रीम कोर्ट चुनाव से पहले फ्री योजनाओं के खिलाफ इस याचिका पर विचार कर रहा है कि क्यों न फ्री का प्रलोभन देने वाले राजनीतिक दलों की मान्यता रद्द कर दी जाए? दूसरी ओर कर्नाटक के चुनाव से पहले कुछ राजनीतिक दल ऐसे ही कुत्सित प्रयासों में जुटे रहे है । कांग्रेस, आम आदमी पार्टी और जद एस जैसे राजनीतिक दल मुफ्त वादों के जरिए चुनावी लोकतंत्र की नींव को हिलाने में लगे रहे । प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भी इसके पक्षधर रहे हैं कि चुनावों से पहले मुफ्त रेवड़ियां के वादे करने पर तुरंत रोक लगनी चाहिए। क्योंकि इसके मूल में जनता का हित नहीं, बल्कि कुत्सित राजनीतिक स्वार्थ ही छिपे हैं। कर्नाटक में विधानसभा चुनाव के लिए राजनीतिक दलों की ओर से की गई लोकलुभावन घोषणाएं राज्य की अर्थ व्यवस्था पर भारी पड़ सकती हैं। कर्नाटक बेशक अमीर राज्य है, फिर भी उसकी प्रतिबद्ध देनदारियां इतनी हैं कि चुनावी वादों के नाम पर खैरात बांटने की गुंजाइश बिल्कुल नहीं है। गौरतलब है कि पहले हिमाचल प्रदेश और कर्नाटक के चुनाव परिणामों ने एक साथ कई बातों पर गंभीरता से विचार करने को बाध्य किया है। भारत के भविष्य की दृष्टि से इसमें एक प्रमुख मुद्दा है लोक कल्याणकारी कार्यों के नाम पर जनता को मुफ्त वस्तुएं और सेवाएं देने की घोषणाएं । अरविंद केजरीवाल के नेतृत्व में आम आदमी पार्टी ने राजधानी दिल्ली में चुनावी विजयों की दृष्टि से इसका सर्वाधिक चतुर उपयोग किया है। इसे ही विस्तारित करते हुए पंजाब तक ले गए और वहां भी शानदार विजय का सेहरा उनकी पार्टी के सिर बंधा। यहां इन घोषणाओं और वायदों में विस्तार से जाने की आवश्यकता नहीं, क्योंकि सब कुछ देश के सामने है। साफ दिख रहा था कि दूसरी पार्टियां भी धीरे-धीरे 'आप' का अनुसरण कर रही हैं।

कांग्रेस ने हिमाचल प्रदेश में पुरानी पेंशन व्यवस्था लागू करने से लेकर राशन, बिजली सहित ऐसे वायदे किए जो अर्थव्यवस्था के लिए क्षतिकारक है। संयोग से उसे विजय प्राप्त हुई। कर्नाटक में उसने ज्यादा विस्तार किया है। यह तो नहीं कह सकते कि भाजपा इस दौड़ में बिल्कुल शामिल नहीं थी । किंतु पुरानी पेंशन योजना की मांग को पूरी दृढ़ता से उसने खारिज किया। भारत की अर्थव्यवस्था और भविष्य की दृष्टि से यह बिल्कुल सही स्टैंड है। किंतु कर्नाटक में उसने भी कांग्रेस के समानांतर जनता को कुछ वस्तुएं और सेवाएं मुफ्त देने की घोषणा की। हमारे देश के ज्यादातर नेता, एक्टिविस्ट, जिनको भारत राष्ट्र के भविष्य की कल्पना नहीं, जो बड़ी कल्पनायें नहीं करते, जो देश, मूल मुद्दों और आम लोगों के समक्ष उत्पन्न चुनौतियों को समझने में सक्षम नहीं और उनका परिश्रमसाध्य समाधान नहीं दे पाते वे अपने को गरीब समर्थक साबित करने के लिए ऐसे ही राज्य द्वारा मुफ्त दान की प्रतिस्पर्धा में शामिल होते हैं। स्वाभाविक ही इस अंधी दौड़ में जो पार्टियां या व्यक्ति उसके विरोध में खड़ा होगा, वह आज के हल्ला बोल माहौल में गरीब विरोधी और पूंजीपतियों, कॉर्पोरेट का दलाल और समर्थक तक करार दिया जाएगा। गांधी जी ने कहा था कि मैं देश में किसी मुफ्तखोरी की अनुमति नहीं दे सकता। उनका स्पष्ट कहना था कि शारीरिक परिश्रम के बगैर किसी व्यक्ति को भोजन नहीं मिलना चाहिए। वास्तव में अगर गहराई से देखें तो राजनीतिक पार्टियों की मुफ्त दान संबंधी घोषणायें और कदम देश के सामूहिक मानस को भिखारी बना देना है। जिस व्यक्ति, समाज और देश के अंदर यह भाव और व्यवहार नहीं है कि अपने समक्ष उत्पन्न कठिनाइयों, चुनौतियों को स्वयं के संकल्प और परिश्रम से निपटा जाएगा तो वह व्यक्ति, समाज और देश कभी सशक्त व स्वाबलंबी नहीं हो सकता। एक बार समाज को अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की मुफ्तखोरी का स्वाद लग गया तो परिश्रम कर स्वयं को सक्षम बनाने का संस्कार नष्ट हो जाता है। उसमें उसका आत्मविश्वास भी खत्म हो जाता है। इस विचार और व्यवहार का प्रभाव देखिए कि जिनके के लिए कुछ किलो राशन, कुछ यूनिट बिजली या कुछ लीटर पानी का व्यय मायने नहीं रखता वह भी इससे प्रभावित होते हैं। कई चुनाव परिणामों विशेषकर दिल्ली, पंजाब आदि चुनाव परिणामों का निष्कर्ष तो यही है। वैसे भारत में मतदाताओं को रिझाने के लिए सरकारी खजाने से मुफ्त दान का लंबा इतिहास है किंतु इसकी शुरूआत लोग दक्षिण के आंध्र और तमिलनाडु जैसे राज्यों से मानते हैं। वहां मुफ्त चावल से लेकर कलर टीवी, केबल कनेक्शन, मोबाइल तक देने की घोषणाएं हुईं और दी गईं। केंद्र और राज्यों को आय के अनुरूप ही कल्याण और विकास के बीच संतुलन बनाते हुए खर्च करना है। इस तरह के मुफ्त दान और एक वर्ग को खुश करने के लिए पेंशन आदि बढ़ाई तो उसका असर समूची अर्थव्यवस्था पर होता है और दूसरे समूह भी इसकी मांग करते हैं। इससे विकास की नीतियां और कार्यक्रम प्रभावित होते हैं और व्यवहार में आम लोगों के कल्याणकारी योजनाओं में भी कटौती करनी पड़ती है। तो राजनीतिक दलों के लिए भी लंबे समय तक के लिए यह लाभकारी नहीं हो सकता। लोगों को उनकी आकांक्षाओं के अनुरूप सांस्कृतिक शैक्षणिक धार्मिक सामाजिक परिवेश सुरक्षा का वातावरण और विकास चाहिए, और न होने पर वह किसी पार्टी को सत्ता से हटा सकते हैं। एनटी रामाराव के नेतृत्व में ही तेलुगू देशम पार्टी की चुनाव में बुरी तरह पराजय हुई। अकाली दल ने भी पंजाब में लोगों को मुफ्त में काफी कुछ दिया, लेकिन यह उसकी सत्ता की स्थाई गारंटी नहीं बन सका। इसके विपरीत गुजरात में भाजपा लगातार 1995 से सत्ता में है। वहां के मतदाताओं ने आम आदमी पार्टी की मुफ्त घोषणाओं को स्वीकार नहीं किया। ये उदाहरण राजनीतिक दलों के लिए सीख होनी चाहिए।

कर्नाटक : दागी विधायकों की बढ़ती संख्या

डॉ.अजीत रानाडे

राजनेता प्रतिशोध की राजनीति के बारे में शिकायत करते हैं जहां सत्तारूढ़ दल विपक्षी सदस्यों के खिलाफ झूठे मामले दर्ज करते हैं। न्यायमूर्ति शाह समिति ने 2014 की सुधार संबंधी सिफारिशों में ऐसी संभावना के खिलाफ सुरक्षा उपायों को निर्दिष्ट किया है। अब समय आ गया है कि मतदाताओं को इस बात पर जोर देना चाहिए कि प्रत्याशियों के बारे में केवल आपराधिक मामलों का खुलासा पर्याप्त नहीं है। कर्नाटक विधानसभा चुनाव में कांग्रेस पार्टी की जीत पिछले 34 वर्षों में सबसे शानदार विजय है। सीटों की संख्या और वोट शेयर दोनों मामलों में साढ़े तीन दशकों के बाद यह रिकॉर्ड टूटा है। यह एक निर्णायक और व्यापक जनादेश है जिसमें रिकॉर्ड मतदान (72 प्रतिशत) भी हुआ है। इस शानदार जीत में योगदान देने वाले कारणों और खिलाड़ियों का विश्लेषण अंतहीन होगा। क्या यह सत्ता विरोधी लहर का गंभीर मामला था? कर्नाटक में 1985 के बाद किसी भी पार्टी ने लगातार दूसरी बार सत्ता में वापसी नहीं की है। क्या यह '40 प्रतिशत कमीशन' के नारे द्वारा कब्जा किए गए भ्रष्टाचार के खिलाफ घृणा के कारण था? क्या यह धार्मिक भावनाओं को छूने वाले मुद्दों पर अत्यधिक ध्यान केंद्रित करने के कारण था? क्या यह नफरत फैलाने वाले भाषणों के कारण मतदाता की नाराजगी थी? ये सभी नकारात्मक प्रेरक कारक हैं। उन सकारात्मक प्रेरकों के बारे में क्या जो इस जीत का कारण बने? क्या ये पांच गारंटियां थीं जिनका कांग्रेस के घोषणापत्र में उल्लेख किया गया है? ये मुफ्त बिजली, न्यूनतम आय की गारंटी, मुफ्त भोजन और मुफ्त बस पास तथा बेरोजगारी बीमा के बारे में हैं। इनमें से कुछ वादे मुफ्त की तरह लगते हैं और कुछ सामाजिक सुरक्षा की तरह के हैं। बाद वाले आश्वासनों की आवश्यकता है जबकि पहला वादा परेशानी भरा है। कुल मिलाकर उत्प्रेरक कारकों के बारे में होने वाली यह बहस कभी भी निर्णायक नहीं होगी। सभी घटक निश्चित रूप से कुछ हद तक मायने रखते थे और मतदाता हमेशा की तरह तर्कसंगत, आर्थिक या वस्तुनिष्ठ घटकों की तुलना में भावनात्मक कारकों से अधिक प्रभावित होते हैं। भारत में सभी राजनीतिक चुनावों की यह एक विशेषता है, लेकिन परिणाम का एक पहलू ऐसा भी है जिससे हम सभी को चिंतित होना चाहिए। यह आपराधिक तत्वों के उदय के बारे में है। इस समय यदि कोई महत्वपूर्ण जरूरत है तो वह चुनाव प्रक्रिया में सुधारों की है जो इस प्रणाली को साफ कर सकते हैं। आपराधिक मामले लंबित रहने वाले विजयी उम्मीदवारों की हिस्सेदारी 2018 में 35 प्रतिशत की तुलना में बढ़कर 55 प्रतिशत हो गई है। सभी राजनीतिक दलों में आपराधिक मामलों से जुड़े उम्मीदवारों की हिस्सेदारी बढ़ी है। भले ही कोई केवल गंभीर आपराधिक मामलों वाले लोगों को देखे तो भी इन 55 प्रतिशत नवनिर्वाचित विधायकों की हिस्सेदारी चिंताजनक है। जीतने वाले उम्मीदवारों की यह हिस्सेदारी 24 से बढ़कर 32 प्रतिशत हो गई है। गंभीर मामले हत्या, हमला, अपहरण और बलात्कार या आर्थिक अपराधों से संबंधित हैं। ये अपराध गैर-जमानती हैं जिनमें 5 साल या उससे अधिक की सजा का प्रावधान है। 'अपराध' की परिभाषा के बारे में कानून बहुत स्पष्ट है। यह केवल पुलिस के समक्ष शिकायत दर्ज करना या प्राथमिकी दर्ज करना मात्र नहीं है। आपराधिक मामले वे होते हैं जो एक सक्षम मजिस्ट्रेट द्वारा अपने न्यायिक दिमाग का उपयोग करने और फिर आरोप निश्चित करने के बाद तय होते हैं। बेशक यह सही है कि दोषी साबित होने तक कोई भी व्यक्ति निर्दोष होता है। केवल दोषी व्यक्तियों को चुनाव लड़ने से रोक दिया गया है और वह भी ऐसे में जब दोषसिद्धि के खिलाफ ऊपरी अदालत में अपील नहीं की जा रही हो। लंबित मामले अपील प्रक्रिया के दौरान वर्षों तक चल सकते हैं। इसलिए आपराधिक तत्वों को हमारी राज्य विधानसभाओं और संसद से बाहर रखने में चुनाव कानून विफल रहा है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जून 2014 में राज्यसभा में अपने पहले भाषण में इस मुद्दे पर बहुत पीड़ा व्यक्त की थी। उन्होंने कहा था कि आपराधिक तत्वों से राजनीति को साफ करना उनकी सर्वोच्च प्राथमिकता होगी। मोदी ने अदालतों से इन विशेष मामलों के निपटारे में तेजी लाने के लिए कहा था। फिर भी, अब तक अयोग्यता निर्धारित करने के लिए कोई नया कानून पारित नहीं किया गया है। पिछले तीन दशकों से अधिक समय से आपराधिक पृष्ठभूमि वाले उम्मीदवारों को अयोग्य घोषित करने के मुद्दे पर चर्चा की जा रही है। साल 1999 में न्यायमूर्ति जीवन रेड्डी के नेतृत्व में 15वें विधि आयोग की 170 वीं रिपोर्ट ने उम्मीदवारों को अयोग्य घोषित करने के लिए संशोधन प्रस्तुत किए थे। फरवरी, 2014 में न्यायमूर्ति एपी शाह के नेतृत्व वाले 20वें विधि आयोग की 244वीं रिपोर्ट में आपराधिक उम्मीदवारों को अयोग्य घोषित करने के लिए बहुत विस्तृत प्रस्ताव शामिल थे। इससे काफी पहले अक्टूबर 1993 में गृह सचिव एनएन वोहरा की अध्यक्षता वाली एक समिति ने राजनीति के अपराधीकरण पर एक रिपोर्ट सौंपी थी। इससे यह स्पष्ट होता है कि कम से कम 1990 के दशक की शुरूआत से राजनीति में आपराधिक दाग वाले प्रत्याशियों का मुद्दा हर किसी के लिए बड़ी चिंता का विषय रहा है। इसके बावजूद आपराधिक पृष्ठभूमि वाले लोगों की चुनाव में हिस्सेदारी बढ़ती जा रही है। यह एक ऐसी बात है जो संसद के साथ-साथ राज्य विधानसभाओं में भी देखी जा रही है। यह कहने का कोई मतलब नहीं है कि लोग आपराधिक पृष्ठभूमि वाले लोगों को चुनते रहते हैं तो हम क्या कर सकते हैं। पिछले महीने ही गैंगस्टर से राजनेता बने एक व्यक्ति और उसके भाई की पुलिस हिरासत के दौरान टीवी कैमरों के सामने गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। यह हत्याकांड गलत था। न्यायेतर हत्याओं और न्यायेतर सक्रियता की निंदा की जानी चाहिए लेकिन चिंता की बात यह भी है कि वह व्यक्ति एक बार संसद का सदस्य था और पांच बार उत्तर प्रदेश विधानसभा का। राजनीति को साफ करने की समस्या के दो पक्ष हैं। पहला, आपूर्ति पक्ष और दूसरा है मांग पक्ष। बाद के पक्ष का मतलब है कि मतदाताओं को स्वच्छ उम्मीदवारों को चुनने की जरूरत है। दागी राजनेताओं की मांग कम होनी चाहिए। मतदाताओं को आपराधिक पृष्ठभूमि वाले किसी भी व्यक्ति को दृढ़ता से अस्वीकृत कर देना चाहिए। हालांकि आपूर्ति की समस्या भी है। अक्सर मतदाताओं के पास मतपत्र सूची में कोई 'स्वच्छ विकल्प' नहीं होता। अगर किसी निर्वाचन क्षेत्र से चुनाव लड़ने वाले सभी उम्मीदवार दागी हैं तो उस स्थिति में क्या होगा? यहां आपूर्ति पक्ष का समाधान आता है। हमें आपराधिक पृष्ठभूमि वाले उम्मीदवारों के चुनाव लड़ने पर रोक लगाने की जरूरत है। संविधान ने चुनाव लड़ने के अधिकार को मौलिक अधिकार नहीं कहा है। अगर चिंता इस बात की है कि उनके खिलाफ दर्ज मामले झूठे हैं तो अदालतों द्वारा उनके नाम साफ किए जाने चाहिए। राजनेता प्रतिशोध की राजनीति के बारे में शिकायत करते हैं जहां सत्तारूढ़ दल विपक्षी सदस्यों के खिलाफ झूठे मामले दर्ज करते हैं। न्यायमूर्ति शाह समिति ने 2014 की सुधार संबंधी सिफारिशों में ऐसी संभावना के खिलाफ सुरक्षा उपायों को निर्दिष्ट किया है। अब समय आ गया है कि मतदाताओं को इस बात पर जोर देना चाहिए कि प्रत्याशियों के बारे में केवल आपराधिक मामलों का खुलासा पर्याप्त नहीं है। हमें खुलासे से अयोग्यता की ओर बढ़ने की जरूरत है। हलफनामों के माध्यम से खुलासा देने का कानून 2003 में अस्तित्व में आया था। उस बात को बीस साल हो चुके हैं लेकिन चुनाव में आपराधिक तत्वों की हिस्सेदारी लगातार बढ़ रही है। अब समय आ गया है कि हम विधि आयोग की 2014 की रिपोर्ट की सिफारिश के अनुसार आपराधिक उम्मीदवारों को चुनाव लड़ने से रोकने के लिए एक सख्त कानून पारित करें। इसके अलावा राजनीतिक दलों को मिले धन के बारे में पारदर्शिता, पार्टी में आंतरिक लोकतंत्र को बढ़ावा देने और राजनीतिक दलों को सूचना के अधिकार कानून के अधीन करने से संबंधित अन्य चुनाव सुधारों की भी आवश्यकता है। लेकिन निश्चित रूप से सबसे तत्काल आवश्यकता यह है कि कम से कम उन लोगों को टिकट पाने से रोका जाए जिनके खिलाफ गंभीर आपराधिक मामले हैं। निश्चित रूप से एक अरब 30 करोड़ लोगों वाला देश कुछ हजार स्वच्छ और गैर-आपराधिक सांसदों और विधायकों को पा सकता है।

(लेखक प्रसिद्ध अर्थशास्त्री हैं।)

इको सिस्टम के लिए जरूरी है जैव विविधता संरक्षण

योगेश कुमार गोयल

जीव-जंतु तथा पेड़-पौधे भी मनुष्यों की ही भांति धरती के अभिन्न अंग हैं लेकिन अपने निहित स्वार्थों तथा विकास के नाम पर मनुष्य ने न केवल वन्यजीवों के प्राकृतिक आवासों को बेदर्दी से उजाड़ने में बड़ी भूमिका निभाई है और वनस्पतियों का भी तेजी से सफाया किया है। धरती पर अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए मनुष्य को प्रकृति प्रदत्त उन सभी चीजों का आपसी संतुलन बनाए रखने की जरूरत होती है, जो उसे प्राकृतिक रूप से मिलती हैं। इसी को पारिस्थितिकी तंत्र या इकोसिस्टम भी कहा जाता है लेकिन चिंतनीय स्थिति यह है कि धरती पर अब वन्य जीवों तथा दुर्लभ वनस्पतियों की अनेक प्रजातियों का जीवनचक्र संकट में है। वन्यजीवों की असंख्य प्रजातियां या तो लुप्त हो चुकी हैं या लुप्त होने के कगार पर हैं। पर्यावरणीय संकट के चलते जहां दुनियाभर में जीवों की अनेक प्रजातियों के लुप्त होने से वन्य जीवों की विविधता का बड़े स्तर पर सफाया हुआ है, वहीं हजारों प्रजातियों के अस्तित्व पर भी संकट के बादल मंडरा रहे हैं। यही स्थिति वनस्पतियों के मामले में भी है। वन्य जीव-जंतु और उनकी विविधता धरती पर अरबों वर्षों से हो रहे जीवन के सतत विकास की प्रक्रिया का आधार रहे हैं। वन्य जीवन में ऐसी वनस्पति और जीव-जंतु सम्मिलित होते हैं, जिनका पालन-पोषण मनुष्यों द्वारा नहीं किया जाता। आज मानवीय क्रियाकलापों तथा अतिक्रमण के अलावा प्रदूषित वातावरण और प्रकृति के बदलते मिजाज के कारण भी दुनियाभर में जीव-जंतुओं तथा वनस्पतियों की अनेक प्रजातियों के अस्तित्व पर दुनियाभर में संकट के बादल मंडरा रहे हैं। अपनी पुस्तक ह्यप्रदूषण मुक्त सांसेंह्ण में मैंने विस्तार से यह उल्लेख किया है कि विभिन्न वनस्पतियों और जीव-जंतुओं की संख्या में कमी आने से समग्र पर्यावरण किस प्रकार असंतुलित होता है। दरअसल पर्यावरण के इसी असंतुलन का परिणाम पूरी दुनिया पिछले कुछ दशकों से गंभीर पर्यावरणीय समस्याओं और प्राकृतिक आपदाओं के रूप में देख और भुगत भी रही है। लगभग हर देश में कुछ ऐसे जीव-जंतु और पेड़-पौधे पाए जाते हैं, जो उस देश की जलवायु की विशेष पहचान होते हैं लेकिन जंगलों की अंधाधुंध कटाई तथा अन्य मानवीय गतिविधियों के चलते जीव-जंतुओं के आशियाने लगातार बड़े पैमाने पर उजड़ रहे हैं, वहीं वनस्पतियों की कई प्रजातियों का भी अस्तित्व मिट रहा है। जीव-जंतुओं तथा पेड़-पौधों की विविधता से ही पृथ्वी का प्राकृतिक सौन्दर्य है, इसलिए भी लुप्तप्रायः पौधों और जीव-जंतुओं की अनेक प्रजातियों की उनके प्राकृतिक निवास स्थान के साथ रक्षा करना पर्यावरण संतुलन के लिए भी बेहद जरूरी है। इसीलिए पृथ्वी पर मौजूद जीव-जंतुओं तथा पेड़-पौधों के बीच संतुलन बनाए रखने के लिए तथा जैव विविधता के मुद्दों के बारे में लोगों में जागरूकता और समझ बढ़ाने के लिए प्रतिवर्ष 22 मई को अंतर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस मनाया जाता है। 20 दिसम्बर 2000 को संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा प्रस्ताव पारित करके इसे मनाने की शुरूआत की गई थी। इस प्रस्ताव पर 193 देशों द्वारा हस्ताक्षर किए गए थे। दरअसल 22 मई 1992 को नैरोबी एक्ट में जैव विविधता पर अभिसमय के पाठ को स्वीकार किया गया था, इसीलिए यह दिवस मनाने के लिए 22 मई का दिन ही निर्धारित किया गया। धरती पर पेड़-पौधों की संख्या बड़ी तेजी से घटने के कारण अनेक जानवरों और पक्षियों से उनके आशियाने छिन रहे हैं, जिससे उनका जीवन संकट में पड़ रहा है।

पर्यावरण विशेषज्ञों का स्पष्ट कहना है कि यदि इस ओर जल्दी ही ध्यान नहीं दिया गया तो आने वाले समय में स्थितियां इतनी खतरनाक हो जाएंगी कि धरती से पेड़-पौधों तथा जीव-जंतुओं की अनेक प्रजातियां विलुप्त होकर सदा के इतिहास के पन्नों का हिस्सा बन जाएंगी। माना कि धरती पर मानव की बढ़ती जरूरतों और सुविधाओं की पूर्ति के लिए विकास आवश्यक है लेकिन यह हमें ही तय करना होगा कि विकास के इस दौर में पर्यावरण तथा जीव-जंतुओं के लिए खतरा उत्पन्न न हो। अगर विकास के नाम पर वनों की बड़े पैमाने पर कटाई के साथ-साथ जीव-जंतुओं तथा पक्षियों से उनके आवास छीने जाते रहे और ये प्रजातियां धीरे-धीरे धरती से एक-एक कर लुप्त होती गई तो भविष्य में उससे उत्पन्न होने वाली भयावह समस्याओं और खतरों का सामना हमें ही करना होगा।

बढ़ती आबादी तथा जंगलों के तेजी से होते शहरीकरण ने दरअसल मनुष्य को इतना स्वार्थी बना दिया है कि वह प्रकृति प्रदत्त उन साधनों के स्रोतों को भूल चुका है, जिनके बिना उसका जीवन ही असंभव है। आज अगर खेतों में कीटों को मारकर खाने वाले चिड़िया, मोर, तीतर, बटेर, कौआ, बाज, गिद्ध जैसे किसानों के हितैषी माने जाने वाले पक्षी भी तेजी से लुप्त होने के कगार हैं तो हमें आसानी से समझ लेना चाहिए कि हम भयावह खतरे की ओर आगे बढ़ रहे हैं और हमें अब समय रहते सचेत हो जाना चाहिए। जैव विविधता की समृद्धि ही धरती को रहने तथा जीवनयापन के योग्य बनाती है, इसलिए लुप्तप्रायः पौधों और जीव-जंतुओं की अनेक प्रजातियों की उनके प्राकृतिक निवास स्थान के साथ रक्षा करना पर्यावरण संतुलन के लिए भी बेहद जरूरी है।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार तथा पर्यावरण मामलों के जानकार हैं और पर्यावरण पर बहुचर्चित पुस्तक प्रदूषण मुक्त सांसें लिख चुके हैं)

कर्नाटक का संदेश : लोकतंत्र में कोई अजेय नहीं होता

संदीप सिंह

कांग्रेस नेतृत्व के ये संदेश बताते हैं कि यह पार्टी भविष्य में भी जनहित की सकारात्मक राजनीति ही करेगी। कांग्रेस यह कभी नहीं भूल सकती कि देश की जनता ने लड़कर आजादी हासिल की और लाखों कुर्बानियों के बाद एक लोकतांत्रिक, धर्मनिरपेक्ष और समावेशी भारत का निर्माण हुआ है। देश का यह गौरवशाली इतिहास ही कांग्रेस की विरासत है।

कर्नाटक की जनता ने पिछले 34 साल का सबसे बड़ा जनादेश देकर 135 सीटों के ऐतिहासिक बहुमत के साथ कांग्रेस को राज्य की सत्ता सौंपी है। इसके पहले 1989 में कांग्रेस को 178 सीटें मिली थीं। इस ऐतिहासिक बहुमत ने भारतीय राजनीति के कई मिथक तोड़े हैं तो नई अवधारणाएं स्थापित हुई हैं।

पहला

कर्नाटक चुनाव ने मजबूती से यह स्थापित किया है कि जनता के असली मुद्दों पर चुनाव जीता जा सकता है। ग्रामीण और शहरी गरीब, मजदूर-किसान, दलित, पिछड़े, अति पिछड़े, आदिवासी, महिला और युवाओं की बढ़ती मुसीबतें, बढ़ती महंगाई और बेरोजगारी ही जनता के असल मुद्दे हैं और इन पर टिके रहकर जनता का विश्वास जीता जा सकता है।

दूसरा

कर्नाटक का चुनाव भाजपा और कांग्रेस के बीच दोतरफा चुनाव बन गया था। भाजपा ने तमाम भटकाने वाले भावनात्मक और भड़काऊ मुद्दों को हवा दी, तो दूसरी तरफ कांग्रेस ने जनता के असली मुद्दों पर अपना ध्यान केंद्रित किया। हर वर्ग के लोगों से उनकी समस्याएं जानी गईं, उसके सटीक समाधान की गारंटी जनता के सामने रखी गई और जनता ने भरोसा किया। इस चुनाव में कांग्रेस ने सामाजिक-आर्थिक एवं लोकतांत्रिक एजेंडे पर चुनाव लड़ना तय किया। महंगाई से बढ़ती आर्थिक मुसीबतें, किसानों की घटती आय का संकट, बढ़ती बेरोजगारी, दलितों एवं पिछड़ों के लिए सामाजिक न्याय के नये आयाम, महिलाओं का सशक्तिकरण, विभिन्न आर्थिक समूहों की मजबूती को केंद्र में रखकर कांग्रेस चुनाव में उतरी थी। पार्टी ने पूरे चुनावी अभियान को अपने मकसद से भटकने नहीं दिया, बल्कि भाजपा की भटकाने वाली राजनीति को सीधी चुनौती दी। कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी ने प्रधानमंत्री को संबोधित करते हुए कहा, 'मैंने पहला ऐसा प्रधानमंत्री देखा है जो जनता के बीच आकर जनता की समस्याएं सुनने की बजाय खुद रोता है कि मुझे गाली दी, मुझे ये कह दिया, मुझे वो कह दिया।' उन्होंने प्रधानमंत्री को चुनौती दी, 'एक चुनाव किसी भी प्रदेश में जनता के मुद्दों पर लड़कर दिखाओ। इधर-उधर की बातें बहुत हुईं। मुद्दे पे आओ।' भाजपा मुद्दे पर आने की हिम्मत तो नहीं कर पाई, लेकिन कर्नाटक की जनता मुद्दे पर आ गई। उसने कांग्रेस के एजेंडे पर विश्वास किया और अपने उज्ज्वल भविष्य की सकारात्मक राजनीति पर मुहर लगाई।

तीसरा

कर्नाटक चुनाव में नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा के अजेय होने का मिथक ध्वस्त हो गया। भाजपा की प्रोपेगैंडा मशीनरी, आईटी सेल और मीडिया ने मिलकर एक मायाजाल रचा है कि नरेंद्र मोदी की अगुआई में भाजपा अजेय है। कहा जाता है कि भाजपा पूरे देश में हर बूथ पर इतनी मजबूत है कि उसे हराया नहीं जा सकता। यह सही है कि भाजपा का संगठन मजबूत है, लेकिन जनता की जागरूकता और एकता के सामने वे महज कागजी शेर हैं। उनके संगठन के बारे में बहुत कुछ अतिशयोक्ति फैलाई गई है। इस चुनाव में भी वही करने की कोशिश की गई। जब एग्जिट पोल के अनुमान आए तो भाजपा संगठन महासचिव बीएल संतोष ने दावा किया कि भाजपा 31 हजार बूथों पर लीड करेंगे। मगर नतीजे कुछ और निकले।

बाबा बागेश्वर के बूते लड़ेंगे 2024 का चुनाव?

पुष्परंजन

बाबा बागेश्वर महाराष्ट्र की ओर मुड़कर नहीं देखते। नागपुर में श्रीराम चरित्र-चर्चा का आयोजन हुआ था। इस दौरान अंधश्रद्धा उन्मूलन समिति के श्याम मानव ने बाबा बागेश्वर पर जादू-टोने और अंधविश्वास फैलाने का आरोप लगाया था। चुनौती दी कि हमारे चुने हुए दस लोगों में किसी के मन की बात पर्चा में लिख कर दे दो। बागेश्वर वहां से निकल लिये। चुटिया को झटका देते हुए धीरेंद्र शास्त्री बोले, 'भारत के सबसे महंगे धरम गुरू हम ही हैं। वर्तमान में। एक सी-आर तो चाहिए ही चाहिए, कथा की।' यूट्यूब का यह वीडियो क्लिप फेक नहीं है। मध्यप्रदेश के छतरपुर स्थित बागेश्वर धाम के पीठाधीश्वर हैं, धीरेन्द्र कृष्ण शास्त्री। एक सी-आर का मतलब हुआ, एक करोड़ रुपए। इस देश के आम आदमी के अकाउंट में एक करोड़ आ जाए, तो सबसे पहले उसे आयकर विभाग में उसका एक प्रतिशत जमा करना होता है। साल भर बाद टैक्स रिटर्न में उसका ब्योरा भरिये। बाबाओं को इस झंझट से सरकारों ने मुक्त कर रखा है। करोड़ों की चल अचल संपत्ति का कोई हिसाब-किताब नहीं देना है। बाबागिरी से चोखा धंधा आज की तारीख में कोई और हो, तो बता दीजिएगा। बाबागिरी के लिए डिग्री-डिप्लोमा की कोई आवश्यकता नहीं। बस बोलने आना चाहिए। जो जितना अच्छा बोलेगा, उतना ही शानदार बेचेगा। यही मूल मंत्र है, इस धंधे का। पहले लोकसभा, विधानसभाओं के सदस्य अपने कामों के हवाले से छवि बनाते थे। आज की राजनीति में बहुत सारे सभासद, बाबाओं पर आश्रित हो गये। मध्यप्रदेश एक बड़ा उदाहरण है, जहां विधानसभा चुनाव होना है। बीते छह महीने में भोपाल संभाग में 500 कथाओं के आयोजन हो चुके हैं, जिनमें राजधानी भोपाल में 20 कथा, अशोक नगर में 100, राजगढ़ में 150, गुना में 70, सीहोर में 80, रायसेन में 50, और विदिशा में 20 कथाओं का आयोजन हो चुका है। अशोकनगर में 19 से 25 सितंबर 2022 तक सीहोर वाले पंडित प्रदीप मिश्रा की कथा का आयोजन हुआ था। इस कथा के आयोजक सांसद केपी मिश्रा थे। उन्होंने इस कथा पर डेढ़ करोड़ रुपए से ज्यादा राशि खर्च की थी।

खुद को जो संत लिखे, वह संत नहीं हो सकता: अनुज शास्त्री, कथा का सातवां दिन

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। नौ दिवसीय श्रीराम कथा बिहारा गांव के पेरा तीर हनुमान मंदिर में रामेश्वर भोलेनाथ मंदिर में गांव के भोलेराम शुक्ला जनकल्याण को करा रहे हैं। श्रीराम कथा में रविवार को भरत चरित्र सुनकर श्रोता भाव-विभोर हो उठे। कथा व्यास अनुज शास्त्री ने कहा कि भगवान का स्मरण करते रहें, तभी कल्याण होगा। बच्चे भी भगवान का भजन सुनें, ताकि उन्हें प्रभु भजन की आदत पड़े।

रविवार को कथा के सातवें दिन आचार्य अनुज शास्त्री ने भरतजी के प्रसंग को विस्तार से सुनाया। कहा कि जो राम के नाम को सदा जपते रहे, वह भरत ही थे। जब श्रीराम वनवास गए, तब भरत भी 14 साल तक धरती पर सोये थे। वह खुद सिंहासन पर नहीं बैठे, बल्कि भगवान राम की पादुकाएं सिंहासन पर रखकर राज किया था। कलिकाल में तुलसीदास को भगवान श्रीराम के दर्शन भरत ने ही कराए थे। भरत चले चित्रकूट, ओ रामा, राम को मनाने के भजन पर सभी श्रद्धालु झूम उठे। व्यास ने कहा कि इसी पावन चित्रकूट पर भरत राम को मनाने आए थे। जो परिक्रमा मार्ग पर भरत मिलाप स्थान पड़ता है वहां पर आज भी उनके चरण चिन्ह बने हुए हैं। चित्रकूट में भाई-भाई का प्रेम देखकर पत्थर भी पिघल गए थे। भरत राज तिलक के लिए सभी तीर्थों का जल लेकर चित्रकूट आए थे। भगवान राम की आज्ञा से फिर वह जल भरतकूप में डाला गया था। अनुज शास्त्री ने कहा कि जो व्यक्ति अपने नाम के आगे स्वयं संत लिखे, वह कभी संत नहीं हो सकता। सूरज कभी नहीं कहता कि वह सूर्य है, जब रात का अंधकार मिटता है तो सूरज का अस्तित्व स्वयं ही लोगों को पता लग जाता है। संतों की पहचान सबसे अधिक प्रयागराज को है, क्योंकि कुंभ में सबसे ज्यादा संतों का स्नान संगम में ही होता है। वे स्वयं पहचान लेते हैं। उन्होंने कहा कि बिना हरि संत नहीं मिलते। संत दर्शन से पाप स्वयं छोड़कर चले जाते हैं। संत के भी कई प्रकार होते हैं। कोई केश से, कोई भेष से, कोई देह से, अंदर से, कोई बाहर से, कोई स्वभाव से, कोई आचरण से संत होता है।

कथा के सातवें दिन कथा सुनने पहुंचे भागवत रत्न आचार्य नवलेश दीक्षित ने कथा व्यास अनुज शास्त्री को माला पहनाकर स्वागत किया। इस मौके पर रमाकांत मिश्रा, रामनरेश मिश्रा, रमेश शुक्ला, किशोर चंद्र शुक्ला, सौम्या मिश्रा, राजा भैया शुक्ला, सूर्यपाल शुक्ला, अजय पयासी, मुन्ना त्रिपाठी, हिमांशु शुक्ला, द्वारिका द्विवेदी, संतोष कुमार मिश्रा, जगदीश प्रसाद मिश्रा आदि मौजूद रहे।

पुलिस ने तीन वांछित दबोचे

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृंदा शुक्ला के निर्देश पर वांछित/वारंटी की गिरफ्तारी को जारी अभियान में थानाध्यक्ष भरतकूप सुबेदार बिंद की अगुवाई में दरेगा इमरान खां की टीम ने दुष्कर्म व पाक्सो एक्ट के वांछित अरविंद पुत्र स्व शंकरलाल निवासी पथरा थाना अतर्रा बांदा को गिरफ्तार किया है। टीम में दरोगा इमरान खां, सिपाही अजीजऊद्दीन, सिपाही विवेक सिंह शामिल रहे।

इसी क्रम में प्रभारी निरीक्षक कोतवाली कर्वी गुलाब त्रिपाठी की अगुवाई मे चैकी प्रभारी शिवरामपुर राजोल नागर की टीम ने विद्युत अधिनियम के वारंटी राजकरन पुत्र राम अवतार निवासी पथरोड़ी को गिरफ्तार किया है। टीम में चैकी प्रभारी शिवरामपुर राजोल नागर, सिपाह श्यामू शामिल रहे। चैकी सीतापुर के दरोगा मुन्नीलाल की टीम ने वांछित रज्जू पुत्र बच्चू केवट निवासी पडरी ढिलौरा को गिरफ्तार किया है। टीम में दरोगा मुन्नलाल, सोमदेव, अतुल कुमार शामिल रहे।

वहीं अपर पुलिस अधीक्षक चक्रपाणि त्रिपाठी व पुलिस उपाधीक्षक एलआईयू अनुज मिश्र क देखरेख में डॉग स्क्वॉयड एवं एलआईयू की संयुक्त टीम ने राष्ट्रीय लोक अदालत के मद्देनजर न्यायालय परिसर में सघन चेकिंग की गई।

कामदगिरि स्वच्छता समिति का 70वां अभियान

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिलाधिकारी अभिषेक आनंद की प्रेरणा से स्वच्छ भारत मिशन के तहत कामदगिरि स्वच्छता समिति प्रत्येक रविवार को स्वच्छता अभियान चलाती है। नगर पालिका कर्वी के ईओ लाल जी यादव ने बताया कि सफाई अभियान महत्वपूर्ण अभियान है। इससे परिवार के जिम्मेदार लोग अपने बच्चों को स्वच्छता के प्रति जरूर जागरूक करें।

रविवार को कामदगिरि परिक्रमा मार्ग में स्वच्छ भारत मिशन के ब्रांड एम्बेसडर/कामदगिरि स्वच्छता समिति के अध्यक्ष राकेश केसरवानी ने बताया कि स्वच्छ भारत अभियान भारत सरकार ने इस अभियान की शुरूआत की थी। अभियान का मूल उद्देश्य आसपास जो पौराणिक स्थल हो शहर की गलियां हो घर के आसपास गंदगी न रहने पाए। स्वच्छ और सुंदर नगर हो। इस पर सभी को विचार करना चाहिए। खाद्य एवं सफाई निरीक्षक कमलाकांत शुक्ला ने बताया कि भारत सरकार ने स्वच्छता की एक अनोखी पहल की है। साफ और स्वच्छ नगर हो। स्वच्छ भारत मिशन के जिला समन्वय शिवा कुमार ने बताया कि स्वच्छता घरों और सड़कों में ही नहीं, बल्कि सभी जगह होनी चाहिए। स्वच्छता भारत के लिए बहुत जरूरी है। अभियान में अंजू वर्मा, जितेंद्र केसरवानी, सभासद शुभम केसरवानी, विवेक केसरवानी, विनोद कुमार, विनय कुमार, अनूप कुमार, दीपक मलिक आदि लोगों ने सहयोग किया।

नगर पंचायत चितबड़गांव में दुबारा चुनाव कराने की उठी मांग

बलिया। चितबड़ागांव नगर पंचायत कार्यालय के समीप सुभासपा के नगर पंचायत अध्यक्ष पद के प्रत्याशी और बीजेपी से बागी हुए प्रत्याशी अपनी मांगों को लेकर क्रमिक अनशन पर बैठ गए हैं।क्रमिक अनशन पर बैठे राजेश सिंह ने कहा कि मतगणना के दौरान दो मत पेटिका में एक भी मत पत्र नहीं था। मत पेटिका खाली मिलने के बाद मतगणना में धांधली का आरोप लगाया हैं। और कहा है कि आज दूसरा दिन है क्रमिक अनशन का तीन दिनों का क्रमिक अनशन हैं अगर कल कोई अधिकारी नहीं आता है तो हमलोग दूसरा कदम उठाएंगे।

मिशन 2024 में मोदी को फिर बनायेंगे प्रधानमंत्री: प्रकाश पाल

जिला कार्यसमिति की हुई बैठक

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। भाजपा जिला कार्यसमिति की बैठक जिलाध्यक्ष चन्द्रप्रकाश खरे की अध्यक्षता व बतौर मुख्य अतिथि कानपुर बुन्देलखण्ड क्षेत्र के क्षेत्रीय अध्यक्ष प्रकाश पाल व विशिष्ट अतिथि प्रदेश उपाध्यक्ष/प्रभारी चित्रकूट देवेश कोरी की मौजूदगी में हुई। बैठक में एक महीने की कार्य योजना को अंतिम रूप दिया। जिला कार्य समिति का शुभारंभ श्यामा प्रसाद मुखर्जी और पं दीनदयाल उपाध्याय के चित्रो मे माल्यार्पण व दीप जलाकर किया।

रविवार को क्षेत्रीय अध्यक्ष के जिले में पहली बार आगमन पर जोरदार स्वागत हुआ। 30 मई से 30 जून तक महासंपर्क अभियान चलेगा। स्वागत भाषण मे जिलाध्यक्ष चन्द्रप्रकाश खरे ने अतिथियो व जिला कार्यसमिति मे मौजूद पदाधिकारी-कार्यकर्ताओ का स्वागत करते हुये कहा कि सरकार के नौ साल उपलब्धियों से भरे हैं। सब कामो को लेकर जनता के बीच जाना है। आगे भी भाजपा की केन्द्र पर मोदी की सरकार बनाने का काम करना है। जिला कार्य समिति में क्षेत्रीय अध्यक्ष प्रकाश पाल ने कहा कि अभी नगर पालिका और नगर निगमो, नगर पंचायत के चुनाव हुये है। सभी 17 नगर निगमो मे भाजपा ने जीत हासिल की है। नगर पालिका नगर पंचायतो मे पार्टी ने भारी जीत हासिल की है। अब लक्ष्य 2024 का चुनाव जीतना है। भाजपा ने मिशन 2024 को लेकर रणनीतिक शुरू कर दी है। प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार के 30 मई को नौ वर्ष पूरा होने पर पार्टी के पदाधिकारी व कार्यकर्ता हर व्यक्ति व हर मतदाता तक सरकार की उपलब्धियों को पहुंचाएंगे। 30 मई से 30 जून तक विभिन्न कार्यक्रमों के जरिए प्रत्येक नागरिक से संपर्क व संवाद स्थापित किया जाएगा। 30 मई को पीएम मोदी की में केंद्र सरकार के गरीब कल्याण को समर्पित नौ वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। अब

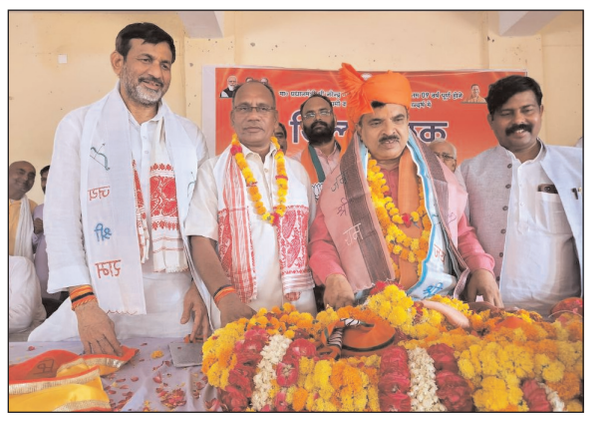

मिशन 2024 व महासंपर्क अभियान की सफलता को प्रत्येक कार्यकर्ता को जुटना होगा। प्रकाश पाल ने बताया 29 को केन्द्र मे राष्ट्रीय अध्यक्ष व प्रदेश मे प्रदेश अध्यक्ष प्रेसवार्ता कर केन्द्र व प्रदेश सरकार की उपलब्धियां बताकर कार्यक्रम की शुरूआत करेगे। 30 को जिलो मे सासद, विधायक प्रेसवार्ता करके जिलो मे उपलब्धि बताने का काम करेगे। 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस प्रत्येक शक्ति केंद्र पर व 23 जून को डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी का बलिदान दिवस बूथ स्तर पर मनाया जाएगा।

उन्होंने बताया कि लोकसभा स्तर पर एक जनसभा होगी। जिसमें 10 हजार लोगों को आमंत्रित किया जाएगा। 20 जून के पहले प्रबुद्ध वर्ग व व्यापारी सम्मेलन होंगे। प्रत्येक विधानसभा में मोर्चो के संयुक्त सम्मेलन तथा योजना लाभार्थी सम्मेलन होंगे। लोकसभा स्तर पर एक बड़े विकास कार्य का अवलोकन होगा। सोशल मीडिया वालंटियर सम्मेलन होगा। लोकसभा क्षेत्र में ढाई सौ विशिष्ट परिवारों की सूची बनाई जाएगी। जिसमें पदम अवार्ड से सम्मानित लोग, खिलाड़ी, कलाकार, उद्योगपति, चिकित्सक, पूर्व न्यायाधीश, शहीद परिवार आदि शामिल होंगे। क्षेत्रीय अध्यक्ष ने कहा की अकेले पिछड़ा मोर्चा सपा को और अकेले अनुसूचित मोर्चा बसपा को हरा सकता है। भाजपा के कमल की बटन दबाने से गरीब का आवास बन जाता है। रसोई गैस, बिजली का मुक्त कनेक्शन मिल जाता है। धारा 370 खत्म हो जाती है। अयोध्या में राम मंदिर बन जाता है। कार्यकर्ताओ से कहा कि आज से कोई भी पार्टी मे किसी को आलोचना नही करना। कोई गुटबाजी नही चलेगी। पार्टी की तरफ से किसी की उपेक्षा नही की जायेगी। जिसमे पार्टी का हित हो वही काम करना है। बैठक में सांसद आरके सिह पटेल, जिला पचायत अध्यक्ष अशोक जाटव, पूर्व सांसद भैरो प्रसाद मिश्रा, रमेश द्विवेदी, पूर्व विधायक आन्नद शुक्ला, आलोक पाडे, देव त्रिपाठी, ब्लॉक प्रमुख अरविन्द मिश्रा, नगर पालिका कर्वी अध्यक्ष नरेन्द्र गुप्ता, मऊ नगर पंचायत में अमित द्विवेदी, अध्यक्ष राजापुर नगर पंचायत अध्यक्ष संजीव मिश्र, लवकुश चतुर्वेदी, दिनेश तिवारी, भोले सिह, रजना उपाध्याय, हीरो मिश्रा, शिव शकर सिह, बृजेश पाडे, मुन्ना करवरिया,दिव्या त्रिपाठी,मनोज तिवारी,अर्जुन शुक्ला,आभेष मिश्रा,रवि गुप्ता अजू बर्मा,महेन्द्र कोटार्य,रामदयाल त्रिपाठी,बब्बू त्रिपाठी,रणवीर सिह,हेमन्त सिह,विपुल प्रताप,ममता सिह,जिले में रहने वाले प्रदेश कार्यसमिति सदस्यध्क्षेत्रीय पदाधिकारी,जिला पंचायत सदस्य,मडल अध्यक्ष,मडल प्रभारी, जिला अभियान समिति के संयोजकध्सह संयोजक, सभी मोर्चो के अध्यक्ष नवनिर्वाचित सभासद उपस्थित रहे।

एसपी के निर्देश पर 237 वाहनों का हुआ चालान

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिले में यातायात व्यवस्था चुस्त-दुरुस्त करने के अलावा डग्गामार वाहनों पर पुलिस महकमे ने शिकंजा कसा है। इसके लिए वाहन चेकिंग अभियान चलाए जा रहे हैं। शनिवार को खुद एसपी वृंदा शुक्ला ने चेकिंग अभियान की कमान संभालते हुए हड़कंप मचाया है। अभियान के दौरान 237 वाहनों का ई-चालान करते हुए पांच लाख 69 हजार का जुमार्ना किया गया है।डग्गामार वाहनों पर शिकंजा कसने के साथ ही यातायात व्यवस्था को दुरुस्त रखने के लिए पुलिस प्रशासन ने काफी सख्ती दिखाई है। एसपी वृंदा शुक्ला की अगुवाई में शनिवार की शाम ट्रैफिक चैराहे पर

सघन वाहन चेकिंग अभियान चलाया गया। जिसमें बिना हेलमेट, काली फिल्म, हैवी हार्न, तीन सवारी, ओवरलोड आदि वाहनों को रोककर उनके कागज चेक किए गए। कई चार पहिया वाहनों के शीशे में लगी काली फिल्म हटवाई गई। एसपी ने खुद खड़े होकर गुजर रहे वाहनों को टोकवाया। चेकिंग की जानकारी होने पर ज्यादातर वाहन इधर-उधर खड़े हो गए। चेकिंग के दौरान कुछ कुछ दूर पर लोग चेकिंग खत्म होने का ई इंतजार कर रहे थे। एसपी ने कहा लोग हेलमेट लगा कर ही वाहन चलायें। ज्यादातर ने रूट बदल दिया। कुल 147 वाहनों का तीन लाख 97 हजार रुपये का ई-चालान किया गया है। जबकि डेढ़ सौ बाइक सवार स्थानीय लोगों को हेलमेट लगाकर चलने की हिदायत के साथ छोडा गया। चेकिंग अभियान में एएसपी चक्रपाणि त्रिपाठी, सीओ यातायात निशी उपाध्याय, सीओ सिटी हर्ष पांडेय, कोतवाल गुलाब त्रिपाठी, यातायात निरीक्षक मनोज कुमार, महिला थाना प्रभारी शालिनी सिंह भदौरिया आदि मौजूद रहे। इसके पहले दोपहर में सीओ यातायात व टीआई ने मंदाकिनी पुल के पास चार पहिया वाहनों पर लगी काली फिल्म को उतरवाया। वहीं नियमों के उल्लंघन पर 90 वाहनों का हाई सिक्योरिटी नंबर प्लेट, बिना हेलमेट एवं तीन सवारी व बिना सीट बेल्ट पर एक लाख 72 हजार रुपये का ई-चालान किया गया।

राजीव गांधी की पुण्यतिथि पर लिया आन्दोलन का संकल्प

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। भारतरत्न पूर्व प्रधानमंत्री स्व राजीव गांधी की पुण्यतिथि जिला कांग्रेस कार्यालय में जिलाध्यक्ष कुशल सिंह पटेल एड की अगुवाई में मनाई गई। जिलाध्यक्ष कुशल सिंह पटेल ने स्व राजीव गांधी के चित्र पर माल्यार्पण कर सभी कांग्रेसियों ने पुष्प अर्पित कर उन्हेंयाद किया।

रविवार को जिलाध्यक्ष कुशल सिंह पटेल ने कहा कि भारतरत्न पूर्व प्रधानमंत्री स्व राजीव गांधी जनता के हितों के लिए संघर्ष करते हुए अपने प्राणों को न्यौछावर कर दिया। संचार क्रांति के जनक थे। उन्होंने देश की तरक्की के लिए बहुत सारे कार्य किए। उनके योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता। सभी लोग

संकल्प लें कि उनके बताए मार्ग पर चलकर देश को प्रगति के लिए कांग्रेस को मजबूत करते हुए आम जनता के हितों के लिए संघर्ष करेंगे। पीसीसी सदस्य पूर्व प्रत्याशी विधानसभा मानिकपुर रंजना बरातीलाल पांडे ने कहा कि स्व राजीव गांधी ने नौजवानों को वोट देने का अधिकार दिया। पंचायती राज लागू किया। वर्तमान भाजपा सरकार देश में नफरत का माहौल पैदा कर रही है। सभी कांग्रेसी एकजुट होकर नफरत को हराकर देश में भाईचारा स्थापित करने का संकल्प ले। आम जनता के हितों के लिए संघर्ष करें। सभी देख रहे हैं ट्रिपल इंजन की सरकार बनने के बाद भी जिले में आम जनता बिजली-पानी की समस्या से जूझ रही है। बिजली का कोई ठिकाना नहीं कब चली जाए, कब आ जाए जनता परेशान है। प्रशासन ने बिजली व्यवस्था में सुधार नहीं किया तो कांग्रेस पार्टी बिजली समस्या को लेकर जनता के सहयोग से जिले में आंदोलन करेगी।

इस मौके पर जिला उपाध्यक्ष अवधेश करवरिया, वरिष्ठ कांग्रेसी नेता गज्जू प्रसाद फौजी, शिव गुलाम वर्मा, चुनवाद प्रसाद, जिला सचिव विजयमणि त्रिपाठी, ओम प्रकाश गुप्ता, सभासद के पूर्व प्रत्याशी महेंद्र कुमार निषाद, आशीष मिश्रा, कृष्णराज सिंह, पुरुषोत्तम यादव, तुलसीदास समेत कांग्रेसी मौजूद रहे।

राष्ट्रीय लोक अदालत में सुलह से निस्तारित हुए 29443 मुकदमें

-71305597 रू अर्थदण्ड और प्रतिकर के रुप में दिलाए

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। राष्ट्रीय लोक अदालत में 29443 मुकदमों का निस्तारण सुलह समझौते के आधार पर रविवार को हुआ। इस दौरान 71305587 रूपए का जुमार्ना व प्रतिकर के रूप में दिलाए।

रविवार को जिला न्यायालय परिसर में आयोजित राष्ट्रीय लोक अदातल में जनपद न्यायाधीश विष्णु कुमार शर्मा ने 11 वादों का निस्तारण करते हुए 213500 रूपए आपसी सुलह समझौते के आधार पर दिलाए। मोटर दुर्घटना दावा न्यायाधिकरण के पीठासीन अधिकारी दिनेशचन्द्र ने 32 वादों का निस्तारण करते हुए 7730000 रूपए आपसी सुलह समझौते के आधार पर दिलाए। परिवार न्यायालय के प्रधान न्यायाधीश रामकृपाल ने आठ जोड़ों को आपसी सुलह समझौते के आधार पर मिलाया और 32 वादों का निस्तारण करते हुए सुलह समझौते के आधार पर 3571000 रूपए दिलाए। अपर जिला जज प्रथम रविन्द्र कुमार श्रीवास्तव ने

एक वाद का निस्तारण किया। विशेष न्यायाधीश पाक्सो विनीत नारायण पाण्डेय ने एक वाद का निस्तारण करते हुए 500 रूपए अर्थदण्ड वसूला। त्वरित न्यायालय के अपर जिला जज संजय कुमार ने 122 वादों का निस्तारण किया। मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट ने 602 वादों का निस्तारण करते हुए 191510 रूपए अर्थदण्ड वसूल किया। सिविल जज विदुषी मेहा ने दो वादों का निस्तारण किया। मऊ की सिविल जज जूडि सैफाली यादव ने 184 वादों का निस्तारण करते हुए 7650 रूपए अर्थदण्ड वसूल किया। न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम अदिति सिंह ने 50 वादों का निस्तारण करते हुए 1000 रूपए अर्थदण्ड, न्यायिक मजिस्ट्रेट द्वितीय संघमित्रा ने 157 वादों का निस्तारण करते हुए 124580 रूपए अर्थदण्ड, त्वरित न्यायालय की सिविल जज अंजलिका प्रियदर्शनी ने 83 वादों का निस्तारण करते हुए 1600 रूपए अर्थदण्ड वसूला।

जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के पूर्ण कालिक सचिव अपर जिला जज फारूख इनाम सिद्दीकी ने बताया कि न्यायिक अधिकारियों द्वारा कुल 1277 वादों का निस्तारण करते हुए 11841340 रूपए तथा 28166 मामलों का निस्तारण राजस्व व अन्य विभागों द्वारा करते हुए 59464247 रूपए प्रतिकर के रूप में वसूला गया। इसके अलावा बीती 18 से 20 मई तक आयोजित विशेष लोक अदालत में कुल 74 वादों का निस्तारण किया गया। रविवार को हुई राष्ट्रीय लोक अदालत में कुल 29443 मुकदमों का निस्तारण करते हुए 71305587 रूपए अर्थदण्ड व प्रतिकर के रूप में दिलाए गए।

इस मौके पर विशेष न्यायाधीश दीप नारायण तिवारी, अपर जिला जज नीरज कुमार श्रीवास्तव समेत सम्बन्धित न्यायिक अधिकारी मौजूद रहे।

पुरानी कोतवाली के कब्जाधारकों ने दिया हाईकोर्ट का हवाला, प्रशासन ने पुरानी कोतवाली खाली कराने की ठानी

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। मराठा कालीन पुरानी कोतवाली में प्रशासन ने डिग्गी पिटवाकर ऐलान किया कि 21 मई तक वहां रहने वाले लोग आवास खाली कर दें। अन्यथा आवासों को ढहाने की कार्यवाही की जायेगी। वहां रहने वाले दो दर्जन लोगों ने कहा कि उच्च न्यायालय में मामला लम्बित है। ऐसे में उनके आवासों को प्रशासन नहीं गिरा सकता।

रविवार को अपरान्ह ढाई बजे मराठा कालीन पुरानी कोतवाली परिसर में बने आवासों में तमाम लोग लम्बे समय से रह रहे हैं। ऐसे लोगों को हटाने को जिला प्रशासन ने अपरान्ह ढाई बजे डिग्गी पिटवाकर ऐलान किया कि 21 मई तक आवास खाली कर दें। ऐसा न करने पर प्रशासन आवासों को ढहाने को बाध्य होगा। इस बाबत वहां रहने वाले अभिमन्यु सिंह, श्यामसुन्दर, प्रदीप, अलखनिरंजन, दिनेश कुमार, लखन रावत, जगदेव सिंह, रामकृष्ण सिंह, गोपीकृष्ण सैनी, कलावती, हरिनाथ सिंह, रामदेव, राकेश कुमार, रामकुमारी, निरंजन कुमार, वीरेन्द्र प्रताप सिंह, अलखनिरंजन मिश्रा, गया प्रसाद, बृजमोहन सिंह, पुष्पेन्द्र सिंह, धर्मेन्द्र कुमार आदि ने बताया कि मराठा कालीन पुरानी कोतवाली परिसर में पचासों परिवार पचास-साठ साल से निवास कर रहे हैं। अचानक प्रशासन ने खाली कराने का निर्णय लिया है। वर्ष 2013 में प्रशासन ने नोटिस दी थी। इसे लेकर रामआधार आदि ने उच्च न्यायालय में याचिका दायर की थी। इसमें आदेश हुआ था कि बिना विधिक कार्यवाही के किसी को बेघर न किया जाये। 2023 में प्रशासन ने परिसर खाली करने को आदेश दिया तो लोगों ने उच्च न्यायालय का हवाला दिया। 24 जनवरी नोटिस पर सभी के ऊपर पीपी एक्ट 3/5 के तहत मुकदमा कायम कर दिया। प्रस्तुत साक्ष्यों को महत्व देते हुए एसडीएम कोर्ट ने अलग-अलग तिथियों में बेदखली का आदेश दिया। दस वर्ष का किराया जमा करने आदेश दिया।

वहां के लोगों ने जिला सत्र न्यायालय में पीपी एक्ट के खिलाफ अपील दायर की। न्यायालय में दोनों मामले विचाराधीन है। 23 मई को तारीख लगी है। प्रचलित अपील एवं सिविल सूट की अनदेखी कर प्रशासन ने 21 मई को अपरान्ह ढाई बजे डिग्गी पिटवाकर 21 मई को आवास खाली करने आदेश दिया है। लोगों ने कहा कि भीषण गर्मी में विधिक प्रतिक्रिया के प्रतिकूल प्रशासन कार्यवाही करता है और कोई अनहोनी होती है तो उसकी जिम्मेदारी प्रशासन की होगी।

चार लाख के बैंक लोन की चीटिंग का मुख्य आरोपी गिरफ्तार

नगीना। पुलिस ने कूटरचित फर्जी कोटेशन व बिल के सहारे बैंक लोन की चीटिंग कर चार लाख रु. हड़पने के मुख्य आरोपी धामपुर की फर्म रेहान ट्रेडर्स के मालिक को गिरफ्तार कर पुलिस ने न्यायालय में पेश किया, कोर्ट ने उसे न्यायिक अभिरक्षा में लेकर जेल भेज दिया है।

नगीना पुलिस के अनुसार मोहल्ला मुगलान बारादरी निवासी कैसर सुल्तान पुत्र सुल्तान ने 17 मार्च को नगीना थाना कोतवाली में थाना व कस्बा धामपुर के मोहल्ला अफगानान निवासी शेख रेहान (रेहान ट्रेडर्स धामपुर के स्वामी)तथा थाना व कस्बा शेरकोट के मोहल्ला मनिहारी सराय निवासी निसार अहमद व खुशहाल अहमद पुत्रगण इकबाल अहमद के खिलाफ आईपीसी की धारा 420(धोखाधड़ी),406(अमानत में खयानत),467,468,471(कूटरचित फर्जी दस्तावेजों को बनाना)504(गाली गलौज करना) व 506(जान से मारने की धमकी देना) के तहत मुकदमा दर्ज कराया था।पीड़ित कैसर सुल्तान द्वारा थाना कोतवाली में दर्ज कराई गई रिपोर्ट में कहा गया था कि नामजद आरोपियों में से रेहान ट्रेडर्स धामपुर के मालिक शेख रेहान ने हैंडीक्राफ्ट फैक्ट्री में काम आने वाली पांच मशीनों के कूटरचित फर्जी कोटेशन तथा बिल ऑफ सप्लाई बनाकर दी और उससे बैंक ऑफ इंडिया नगीना शाखा के लोन अकाउंट से चार लाख रूपए 21 अक्तूबर 21को अपनी फर्म के करंट अकाउंट में ट्रांसफर करा लिए थे। लेकिन रेहान ट्रेडर्स धामपुर के मालिक शेख रेहान ने उसे न तो मशीनों की डिलिवरी दी और न ही चार लाख रूपए की रकम दी।

काफी समय तक बार बार मशीनों की डिलिवरी करने का आग्रह करने के बाद एक दिन शेख रेहान ने मशीनों की डिलिवरी करने या चार लाख रूपए लौटाने से साफ इंकार कर दिया।शेख रेहान अहमद,निसार अहमद व खुशहाल अहमद ने आपस में हमसाज व एकराय होकर प्रार्थी के साथ विश्वासघात व बेईमानी करते हुए धोखाधड़ी करते हुए जालसाजी पूर्वक कूटरचित व नकली कोटेशन तथा बिल ऑफ सप्लाई के चार लाख रूपए हड़प लिए।

युद्ध में दोनों पैर गंवाने वाले पूर्व ब्रिटिश गोरखा सैनिक ने माउंट एवरेस्ट फतह कर इतिहास रचा

काठमांडू। दोनों पैरों से अशक्त एक जांबाज पूर्व सैनिक ने दुनिया की सबसे ऊंची पर्वत चोटी माउंट एवरेस्ट फतह कर इतिहास रच दिया। यह कीर्तिमान स्थापित करने वाले हरि बुधमागर (43)

कृत्रिम पैरों से इस चोटी पर पहुंचने वाले दुनिया के पहले व्यक्ति बन गए हैं। यह जानकारी नेपाल पर्यटन विभाग के एक वरिष्ठ अधिकारी ने दी। इस अधिकारी ने कहा कि पूर्व ब्रिटिश गोरखा सैनिक हरि बुधमागर अफगानिस्तान में 2010 में युद्ध लड़ते हुए दोनों पैरों से अशक्त हो गए थे। उन्होंने दोपहर 8848.86 मीटर ऊंची पर्वत चोटी फतह की।

नेपाल के सुदूर पश्चिम प्रांत का मंत्रिमंडल विस्तार

काठमांडू। नेपाल के सुदूर पश्चिम प्रांत में मंत्रिमंडल का विस्तार किया गया है। सुदूर पश्चिम प्रांत के प्रमुख से आज तीन मंत्रियों और एक राज्य मंत्री ने शपथ ली। इन मंत्रियों में नेपाली कांग्रेस

के एक और सीपीएन-एकीकृत माओवादी केंद्र के दो मंत्री और एक राज्य मंत्री शामिल हैं। मुख्यमंत्री कमल बहादुर शाह सीपीएन-यूएमसी के हैं। उन्हें तीन महीने पहले मुख्यमंत्री नियुक्त किया गया था। नेपाल में केंद्र सरकार में सत्ता संतुलन में बदलाव के बाद प्रांतों में भी बदलाव आया है। 7 प्रांतों में से केवल कोशी प्रांत में सीपीएन-यूएमएल के नेतृत्व वाली सरकार है। शेष 6 प्रांतों में सरकार का नेतृत्व सत्तारूढ़ गठबंधन की पार्टी करती है।

हिन्द प्रशांत क्षेत्र की सफलता और सुरक्षा पूरे विश्व के लिए महत्वपूर्ण : पीएम

हिरोशिमा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 1945 में द्वितीय विश्वयुद्ध के अंत में जापान के हिरोशिमा शहर में हुए परमाणु हमले में मारे गए लोगों की याद में बनाए गए हिरोशिमा शांति स्मारक संग्रहालय में रविवार को पुष्पांजलि अर्पित की। मोदी जी7 समूह के वार्षिक शिखर सम्मेलन में हिस्सा लेने के लिए जापान की यात्रा पर हैं। विदेश मंत्रालय ने एक बयान में कहा कि मोदी ने जी7 के अन्य नेताओं के साथ संग्रहालय का दौरा किया। उन्होंने संग्रहालय की आगंतुक पुस्तिका पर हस्ताक्षर भी किए। प्रधानमंत्री मोदी ने ट्वीट किया, ''आज (रविवार) सुबह हिरोशिमा में शांति स्मारक संग्रहालय और हिरोशिमा शांति स्मारक पार्क गया।'' स्मारक पर अन्य विश्व नेताओं ने भी अमेरिका के परमाणु हमले में मारे गए लोगों को पुष्पांजलि अर्पित की। अमेरिका ने छह अगस्त 1945 को हिरोशिमा में दुनिया का पहला परमाणु हमला किया था, जिसमें यह शहर तबाह हो गया था और करीब 1,40,000 लोगों की मौत हो गई थी। मोदी के स्मारक स्थल स्थित संग्रहालय के दौरे की तस्वीरें ट्वीट करते हुए विदेश मंत्रालय ने कहा, ''हिरोशिमा के पीड़ितों की याद में श्रद्धांजलि। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शांति स्मारक संग्रहालय का दौरा कर अपने दिन की शुरुआत की, जहां उन्होंने दस्तावेजों का अवलोकन किया और आगंतुक पुस्तिका पर हस्ताक्षर किए।'' मंत्रालय ने जी7 शिखर सम्मेलन में हिस्सा ले रहे विश्व नेताओं की एक सामूहिक तस्वीर भी ट्वीट की। उसने कहा, ''नेताओं ने भी हिरोशिमा शांति स्मारक पार्क में श्रद्धांजलि अर्पित की।'' इस संग्रहालय में हमले में मारे गए लोगों के सामान, तस्वीरें और अन्य सामग्री रखी गई हैं, जो हिरोशिमा पर अमेरिका द्वारा परमाणु बम गिराए जाने की विभीषिका दर्शाती हैं। जी7 देशों में जापान, अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी, कनाडा, इटली और यूरोपीय संघ (ईयू) शामिल हैं।

यूक्रेन के राष्ट्रपति जेलेंस्की से मुलाकात में प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, युद्ध के समाधान के लिए हर मुमकिन कोशिश करेंगे

टोक्यो। जापान के हिरोशिमा में जी-7 शिखर सम्मेलन में भाग लेने पहुंचे भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमिर जेलेंस्की से मुलाकात की। इस दौरान भारतीय प्रधानमंत्री ने कहा कि यूक्रेन-रूस युद्ध के समाधान के लिए हर मुमकिन कोशिश करेंगे। पिछले साल यूक्रेन पर रूसी हमले के बाद पहली बार जेलेंस्की और मोदी की मुलाकात हुई। जी-7 शिखर सम्मेलन के लिए पहुंचे दोनों नेताओं की सम्मेलन से इतर द्विपक्षीय बातचीत हुई। यूक्रेन के राष्ट्रपति से मुलाकात के दौरान भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि यूक्रेन युद्ध दुनिया का एक बड़ा मुद्दा है। वे इसे सिर्फ अर्थव्यवस्था और राजनीति का मुद्दा नहीं मानते, उनके लिए यह मानवता का मुद्दा है। उन्होंने कहा कि भारत और वे स्वयं भी युद्ध की समस्या के समाधान के लिए हर मुमकिन कोशिश करेंगे।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने फ्रांस के राष्ट्रपति एमैनुएल मैक्रों के साथ द्विपक्षीय बैठक की। इस

दौरान बैस्टिल दिवस के लिए प्रधानमंत्री मोदी की आगामी फ्रांस यात्रा पर चर्चा हुई। साथ ही दोनों नेताओं ने भारत-फ्रांस रणनीतिक साझेदारी में प्रगति का जायजा लिया। प्रधानमंत्री मोदी संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस से भी मिले। भारतीय प्रधानमंत्री ट्वीट कर संयुक्त राष्ट्र महासचिव के साथ हुई अपनी बातचीत को शानदार करार दिया।

जर्मनी के साथ द्विपक्षीय संबंधों पर चर्चा

भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जर्मनी के चांसलर ओलाफ शोल्ज के साथ बैठक की, जिसमें दोनों नेताओं ने द्विपक्षीय संबंधों में प्रगति की समीक्षा की और क्षेत्रीय घटनाक्रम एवं वैश्विक चुनौतियों पर विचारों का आदान-प्रदान किया। भारतीय विदेश मंत्रालय के ट्वीट में जानकारी दी गयी कि दोनों नेताओं ने द्विपक्षीय संबंधों में प्रगति का सकारात्मक मूल्यांकन एवं समीक्षा की। साथ ही क्षेत्रीय घटनाक्रमों एवं वैश्विक चुनौतियों पर विचारों का आदान-प्रदान किया।

माउंट एवरेस्ट की चोटी पर पहुंचने वाला भारतीय मूल का सिंगापुरी पर्वतारोही लापता

वाशिंगटन। भारतीय मूल का एक सिंगपुरी पर्वतारोही माउंट एवरेस्ट की चोटी पर पहुंचने के बाद लापता हो गया, जिसक बाद उसके परिवारवालों ने उसकी स्थिति का ध्यान देने कू मांग की है। चेंज डॉट ओआरजी की वेबसाइट में दाखिल की गई एक याचिका के अनुसार श्रीनिवास सैनी दत्तात्रेय माउंट एवरेस्ट की चोटी पर चढ़ने के लिए पिछले महीने ही सिंगापुर से नेपाल के लिए रवाना हुए थे।

उनके चचेरे भाई ने बताया कि चोटी से नीचे उतरते समय श्रीनिवास को शीतदंश और ऊंचाई की वजह से वह बीमार पड़ गए। इस वजह से वह अपने समूह से बिछड़ गया और 8000 मीटर चेटी की तिब्बती क्षेत्र में गिर गया।

सिंगापुर की एक टीवी चैनल ने भरत के हवाले से बताया कि शेरपाओं की एक टीम शनिवार को श्रीनिवास के लिए तलाशी अभियान शुरू किया था। भरत ने बताया कि उनके परिवार संबंधित सरकार से लगातार संपर्क में हैं।

भरत ने बताया कि श्रीनिवास का परिवार हताश है लेकिन अभी भी उन्होंने उम्मीद नहीं छोड़ी है।

39 वर्षीय श्रीनिवास रियल एस्टेट कंपनी 'जोंस लैंग लासेल' में कार्यकारी निदेशक हैं। एक अप्रैल को वह माउंट एवरेस्ट के लिए नेपाल रवाना हुए थे और चार जून को वह स्वदेश लौटने वाले थे। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार श्रीनिवास ने आखिरी बार अपनी पत्नी को शुक्रवार को संदेश भेजा था। उन्होंने अपनी पत्नी को माउंट एवरेस्ट की चोटी पर पहुंचने की खबर दी थी। श्रीनिवास का पूरा परिवार नई दिल्ली में सिंगापुर उच्चायोग, नेपाल में स्थानीय अधिकारियों और आपातकालीन चिकित्सकीय सेवाओं के साथ लगातार संपर्क में है। इस घटना पर सिंगापुर का विदेश मंत्रालय घटनाक्रम पर लगातार नजर बनाए हुए है।

पीएम मोदी के फैन हुए अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन, बोले - मुझे आपका ऑटोग्राफ ले लेना चाहिए

वाशिंगटन। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की लोकप्रियता किसी से छिपी नहीं है लेकिन अब तो दुनिया के बड़े-बड़े देशों के राष्ट्राध्यक्ष भी ऐसा लगता है कि पीएम मोदी की लोकप्रियता के कायल हो गए हैं। दुनिया के सबसे ताकतवर देश अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडन तो प्रधानमंत्री मोदी के इतने प्रशंसक बन चुके हैं कि वह उनका ऑटोग्राफ लेने की बात करने लगे हैं।

'मुझे आपका ऑटोग्राफ ले लेना चाहिए'

जापान में क्वाड बैठक के दौरान अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन जिस तरह से पीएम मोदी के पास आकर उनके गले लगे, उसे पूरी दुनिया ने देखा। अब खबर आई है कि क्वाड बैठक के दौरान जो बाइडन ने पीएम मोदी से कहा कि उनके कार्यक्रम में शामिल होने के लिए उनके पास कई शीर्ष नागरिकों की इतने आवेदन आ रहे हैं कि उन्हें काफी चुनौती का सामना करना पड़ रहा है। बता दें कि पीएम मोदी जून में

अमेरिका के दौरे पर जाने वाले हैं। जो बाइडन ने पीएम मोदी से ये भी कहा कि 'उन्हें पीएम मोदी का ऑटोग्राफ ले लेना चाहिए।'

सिडनी में पीएम मोदी का कार्यक्रम रहेगा हाउसफुल

क्वाड बैठक के दौरान ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री एंथनी अल्बानीज ने भी पीएम मोदी की लोकप्रियता की तारीफ की। उन्होंने कहा कि सिडनी में कम्युनिटी रिसेप्शन की क्षमता 20 हजार लोगों की है लेकिन अभी भी उनके पास कार्यक्रम में शामिल होने के लिए इतने आवेदन आ रहे हैं कि वह सभी को शामिल नहीं कर पाएंगे। अल्बानीज ने अपने भारत दौरे को याद करते हुए कहा कि नरेंद्र मोदी स्टेडियम में 90 हजार से ज्यादा लोगों ने उनका स्वागत किया था। पीएम मोदी और ऑस्ट्रेलियाई पीएम एंथनी अल्बानीज मार्च में भारत-ऑस्ट्रेलिया के बीच खेले गए क्रिकेट मैच में शामिल हुए थे। बता दें कि सोमवार को प्रधानमंत्री मोदी जापान से ऑस्ट्रेलिया के दौरे पर जाएंगे।

यूक्रेन विवाद को बातचीत और कूटनीति से सुलझाया जाना चाहिए : Quad

वाशिंगटन। क्वाड नेताओं ने यूक्रेन संघर्ष को बातचीत और कूटनीति के माध्यम से सुलझाने का आह्वान करते हुए कहा कि यह युद्ध का युग नहीं होना चाहिए। नेताओं का यह रुख प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के रुख को प्रतिध्वनित करता है। मोदी, अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन, जापानी प्रधानमंत्री फुमियो किशिदा और उनके ऑस्ट्रेलियाई समकक्ष एंथनी अल्बनीस ने हिरोशिमा में वार्षिक क्वाड शिखर सम्मेलन में यूक्रेन संघर्ष सहित विभिन्न वैश्विक चुनौतियों पर बातचीत की।

शिखर सम्मेलन के बाद, नेताओं ने एक संयुक्त बयान जारी किया जिसमें यूक्रेन संघर्ष, पूर्वी और दक्षिण चीन सागर की स्थिति तथा हिंद-प्रशांत क्षेत्र के लिए उनके दृष्टिकोण को शामिल किया गया। क्वाड नेताओं ने कहा कि वे अंतरराष्ट्रीय कानून के पालन, विवादों के शांतिपूर्ण समाधान और सभी देशों की क्षेत्रीय अखंडता एवं संप्रभुता सहित संयुक्त राष्ट्र चार्टर के सिद्धांतों के सम्मान के लिए खड़े हैं। नेताओं ने कहा, इस संदर्भ में, आज हम यूक्रेन में जारी युद्ध पर अपनी गहरी चिंता व्यक्त करते हैं और इसके भयानक एवं दुखद मानवीय परिणामों पर शोक व्यक्त करते हैं।

उन्होंने कहा, हम खाद्य, ईंधन और ऊर्जा सुरक्षा तथा महत्वपूर्ण आपूर्ति श्रृंखलाओं सहित वैश्विक आर्थिक प्रणाली पर इसके गंभीर प्रभावों को पहचानते हैं। हम यूक्रेन के लिए मानवीय सहायता प्रदान करना जारी रखेंगे। बयान में कहा गया, यह जानते हुए कि हमारा युग युद्ध का नहीं होना चाहिए, हम बातचीत और कूटनीति के लिए प्रतिबद्ध हैं। हम संयुक्त राष्ट्र चार्टर के अनुरूप एक व्यापक, न्यायसंगत और स्थायी शांति का समर्थन करते हैं। क्वाड नेताओं के इस बयान में प्रधानमंत्री मोदी के रुख की प्रतिध्वनि दिखी।

उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री मोदी ने रूस-यूक्रेन युद्ध के मुद्दे पर पिछले साल रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन से कहा था, यह युग युद्ध का नहीं है। मोदी की इस टिप्पणी के लिए दुनियाभर के नेताओं ने उनकी प्रशंसा की थी। क्वाड नेताओं ने एक मुक्त और खुले हिंद-प्रशांत के लिए अपनी दृढ़ प्रतिबद्धता की भी पुष्टि की जो समावेशी हो। उन्होंने कहा, ''हम ऐसा क्षेत्र चाहते हैं जहां किसी देश का दबदबा न हो और किसी देश को दबाया न जा सके।'' क्वाड नेताओं ने हिंद महासागर क्षेत्र में सहयोग को मजबूत करने की अपनी प्रतिबद्धता भी व्यक्त की।

क्षेत्र में चीनी सेना की आक्रामक गतिविधियों के बीच, क्वाड नेताओं ने कहा, ''हम अस्थिरता या एकतरफा गतिविधियों का कड़ा विरोध करते हैं, जिनमें यथास्थिति को जबरन बदलने की कोशिश की जाती हो।''

नेताओं ने अंतरराष्ट्रीय कानून के पालन के महत्व पर भी जोर दिया, विशेष रूप से जैसा कि समुद्री कानून से संबंधित संयुक्त राष्ट्र संधि में परिलक्षित होता है। उन्होंने सभी तरह के आतंकवाद और हिंसक चरमपंथ की स्पष्ट रूप से निंदा की।

पीएम मोदी, फ्रांस के राष्ट्रपति मैक्रों ने द्विपक्षीय संबंधों के सभी पहलुओं पर चर्चा की

हिरोशिमा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि हिन्द प्रशांत क्षेत्र वैश्विक कारोबार, नवाचार और विकास का 'इंजन' है तथा इसकी सफलता एवं सुरक्षा पूरे विश्व के लिए महत्वपूर्ण है। प्रधानमंत्री मोदी ने हिरोशिमा में क्वाड शिखर बैठक में शुरूआती संबोधन में यह बात कही। इसमें अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन, जापान के प्रधानमंत्री फुमियो किशिदा और आस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री एंथनी अल्बानीस ने हिस्सा लिया। मोदी ने कहा, ''क्वाड हिंद-प्रशांत क्षेत्र में शांति, स्थिरता और समृद्धि सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण मंच के रूप में उभरा है।'' उन्होंने कहा कि हिंद-प्रशांत क्षेत्र की सफलता और सुरक्षा पूरी दुनिया के लिए महत्वपूर्ण है तथा ''हम रचनात्मक एजेंडे और लोकतांत्रिक सिद्धांतों के आधार पर आगे बढ़ रहे हैं।'' प्रधानमंत्री ने कहा, ''एकजुट प्रयासों के साथ, हम मुक्त, खुले और समावेशी हिंद-प्रशांत क्षेत्र के अपने दृष्टिकोण को व्यावहारिक आयाम दे रहे हैं।'' उन्होंने कहा कि इसमें कोई संदेह नहीं है कि हिन्द प्रशांत क्षेत्र वैश्विक कारोबार, नवाचार और विकास का 'इंजन' है।

मोदी ने कहा कि क्वाड मानव कल्याण, शांति और समृद्धि की दिशा में काम करना जारी रखेगा। ज्ञात हो कि क्वाड शिखर सम्मेलन का आयोजन हिरोशिमा में जी-7 शिखर बैठक से इतर आयोजित किया जा रहा है। पहले क्वाड शिखर बैठक का आयोजन 24 मई को आस्ट्रेलिया में किया जाना निर्धारित था। अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडन द्वारा देश में उत्पन्न गंभीर आर्थिक संकट पर ध्यान केंद्रित करने के मकसद से अपनी ऑस्ट्रेलिया यात्रा को स्थगित करने के कारण सिडनी में प्रस्तावित क्वाड देशों के नेताओं की बैठक रद्द कर दी गई थी।

ढाका हुआ भगवामय, बांग्लादेशवासियों ने शंकराचार्य अधोक्षजानंद का किया अभूतपूर्व नागरिक अभिनंदन

ढाका। बांग्लादेश की राजधानी ढाका में आज गोर्वधन पीठाधीश्वर जगदुरु शंकराचार्य स्वामी श्री अधोक्षजानंद देव तीर्थ जी महाराज का अभूतपूर्व नागरिक अभिनंदन हुआ। सनातन धर्म के शीर्षस्थ धर्माचार्य का हिन्दुओं के अलावा मुस्लिम समाज के लोगों ने भी भव्य स्वागत किया। बच्चे

कहा कि भारत के लोग और सरकारें बांग्लादेश की शुभचिंतक हैं। भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जितना अपने देश के विकास हेतु चिंतित रहते हैं, उतना ही वह पड़ोसी देशों विशेषकर बांग्लादेश के उत्थान को लेकर प्रयासरत रहते हैं। इस अवसर पर जगदुरु ने श्रद्धालुओं को बताया कि आज से करीब 2500 वर्ष पूर्व वैदिक सनातन धर्म के पुनरुद्धार हेतु स्वयं भगवान शिव ने दक्षिण भारत के केरल प्रांत में अवतार जी महाराज ने कहा कि बांग्लादेशवासियों के इस अभूतपूर्व स्वागत और अभिनंदन से वह अभिभूत हैं। उन्होंने वहां उपस्थित विशाल जनसमूह को आशीर्वाद दिया। शंकराचार्य ने लिया था। मात्र आठ वर्ष की आयु में संन्यास ग्रहण कर शंकराचार्य के नाम से विख्यात हुए। उन्होंने अद्वैत वेदान्त को ठोस आधार प्रदान किया। गौरतलब है कि श्री आद्य शंकराचार्य द्वारा गोवर्धन मठ की स्थापना हुई और भारत के पूर्वी एवं पूर्वोत्तर राज्यों समेत बांग्लादेश, नेपाल, भूटान व म्यांमार जैसे देश गोवर्धन मठ के ही विशेष धर्म संरक्षित क्षेत्र हैं। गोवर्धन पीठाधीश्वर जगदुरु शंकराचार्य स्वामी श्री अधोक्षजानंद देव तीर्थ जी महाराज 19 नवम्बर 2021 से 12 ज्योतिर्लिंगों एवं 52 शक्ति पीठों की यात्रा पर हैं। सम्पूर्ण भारत का भ्रमण कर अधिकतर ज्योतिर्लिंगों और शक्ति पीठों का दर्शन-पूजन सम्पन्न कर लेने के बाद शंकराचार्य जी ने पड़ोसी देशों में स्थित शक्ति पीठों के दर्शन की यात्रा दूसरे चरण में प्रारम्भ की है। नेपाल और श्रीलंका की यात्रा के बाद अब वह बांग्लादेश पहुंचे हैं। शंकराचार्य के साथ भारत के संतों और विद्वानों का एक सात सदस्यीय प्रतिनिधि मंडल भी बंग्लादेश की यात्रा पर है। वह यहां स्थित सभी शक्ति पीठों का दर्शन व पूजन करेंगे। इस क्रम में जल्द ही वह तिब्बत और पाकिस्तान स्थित शक्ति पीठों की भी यात्रा करेंगे।

नागरिक अभिनंदन समारोह के मुख्य अतिथि और बांग्लादेश के प्रमुख विपक्षी दल जातीय पार्टी के अध्यक्ष व सांसद गुलाम मोहम्मद कादीर ने इस अवसर पर कहा कि जगदुरु शंकराचार्य जी महाराज के आने से वे सभी लोग बहुत खुश हैं। उन्होंने कहा कि जगदुरु बांग्लादेश के हर धर्म के लोगों को अपना आशीर्वाद देने आए हैं और हम सब सौभाग्यशाली हैं, जो उनका स्वागत करने का शुभ अवसर आज मिला है। गुलाम मोहम्मद कादीर ने शंकराचार्य जी से अपने संसदीय क्षेत्र, रंगपुर आने का भी अनुरोध किया।

समारोह में विशेष अतिथि के रुप में उपस्थित ढाका के सांसद सैयद अबू हुसैन बावला ने कहा कि लोगों की पूजा पद्धति अलग-अलग हो सकती है लेकिन, सभी धर्म का वास्तविक मकसद मानवता है। उन्होंने इस अवसर पर बांग्लादेश की आजादी की लड़ाई में भारत की तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के योगदान को भी याद किया।

शंकराचार्य के नागरिक अभिनंदन समारोह को भारत के त्रिपुरा राज्य के विधानसभा उपाध्यक्ष रामप्रसाद पाल ने भी संबोधित किया। उन्होंने कहा कि बांग्लादेश हमारा मित्र देश है। यहां कई शक्ति पीठ हैं, जगदुरु उन शक्ति पीठों का दर्शन और पूजन करने आए हैं। वह यहां के सभी लोगों को अशीर्वाद भी देंगे।

पूर्व में अभिनंदन समारोह आयोजन समिति के अध्यक्ष विधान बिहारी गोस्वामी, सचिव एसके बादल, सह संयोजक सुसांत चक्रवर्ती, विश्व हिन्दू परिषद, बांग्लादेश चैप्टर के संयुक्त महामंत्री सुजन डे, कोलकाता से आए वरिष्ठ पत्रकार तरुण चक्रवर्ती समेत कई लोगों ने जगदुरु शंकराचार्य का स्वागत किया। स्थानीय कलाकार राधिका सरकार ने 'सत्यम शिवम सुन्दरम' संगीत पर नृत्य करते हुए जगदुरु का भव्य स्वागत कर सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया।

ईईपीसी : रूस को भारत का इंजीनियरिंग निर्यात अप्रैल में 11 गुना बढ़ा

इस्लामाबाद। रूस को इंजीनियरिंग उत्पादों का निर्यात पिछले वर्ष की तुलना में इस साल अप्रैल में 11 गुना बढ़कर 13.36 करोड़ डॉलर तक पहुंच गया जबकि अमेरिका और चीन के बाजारों में नरमी बरकरार रही। इंजीनियरिंग निर्यात संवर्द्धन परिषद (ईईपीसी) ने यह जानकारी दी। अप्रैल 2022 में स्वतंत्र देशों के राष्ट्रकुल (सीआईएस) को इंजीनियरिंग निर्यात 1.17 करोड़ डॉलर था। अप्रैल में अमेरिका को 1.4 अरब डालर की इंजीनियरिंग वस्तुओं का निर्यात किया गया। अप्रैल 2022 के 1.86 अरब डालर के निर्यात के मुकाबले इसमें 24.9 प्रतिशत की कमी रही। चीन को इंजीनियरिंग निर्यात अप्रैल 2023 में 15.5 प्रतिशत घटकर 18.33 करोड़ डालर रहा। हालांकि, पिछले महीने ओमान को होने वाला

निर्यात अप्रैल 2022 के मुकाबले दोगुना बढ़कर 15.39 करोड़ डालर पहुंच गया। भारत की इंजीनियरिंग वस्तुओं के लिए शीर्ष 25 देशों में से 15 को निर्यात में वार्षिक आधार पर वृद्धि दर्ज की गई है। देश के कुल इंजीनियरिंग निर्यात में अमेरिका, जर्मनी, ब्रिटेन, फ्रांस, इंडोनेशिया और सिंगापुर की 76 प्रतिशत हिस्सेदारी है। वित्त वर्ष 2023-24 के पहले महीने में भारत का कुल इंजीनियरिंग निर्यात 7.15 प्रतिशत घटकर 8.99 अरब डालर रहा जबकि अप्रैल 2022 में कुल 9.68 अरब डालर का इंजीनियरिंग निर्यात किया गया था।

अल-सल्वाडोर में भगदड़ से नौ की मौत

अल सल्वाडोर। मध्य अमेरिकी देश अल सल्वाडोर में एक दुखद हादसे में नौ लोगों की मौत हो गई है। दरअसल एक फुटबॉल मैच के दौरान भगदड़ मच गई, जिसमें नौ लोगों की जान चली गई। अल सल्वाडोर की नेशनल सिविल पुलिस ने यह जानकारी दी है। पुलिस का कहना है कि मैच देखने के लिए स्टेडियम में घुसने की कोशिश की, इसी दौरान भगदड़ मच गई।

मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, अल सल्वाडोर की स्थानीय टीमें एलियांजा और एफएएस के बीच फुटबॉल मैच था। ये दोनों टीमें अल-सल्वाडोर की सबसे पसंदीदा टीमों में से एक है, यही वजह है कि इस मैच के लिए बड़ी संख्या में दर्शक स्टेडियम पहुंचे थे। इसी दौरान कुछ लोगों ने जबरन स्टेडियम में घुसने की कोशिश की, जिसकी वजह से भगदड़ मच गई और दम घुटने की वजह से नौ लोगों की मौत हो गई। भगदड़ में 500 के करीब लोग घायल भी हुए हैं, जिनमें से दो की हालत गंभीर बताई जा रही है। कई घायलों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। फुटबॉल मैच शुरू होने के 16 मिनट बाद ये हादसा हुआ, जिसकी वजह से मैच को रद्द कर दिया गया।

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
स्वामी श्री योगी सत्यम् फॉर
योग सत्संग समिति
द्वारा विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज से मुद्रित
एवं
क्रियायोग आश्रम एण्ड अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
से प्रकाशित।
सम्पादक
स्वामी श्री योगी सत्यम्
RNI No: UPHIN/2001/09025
ऑफिस मो.:
9565333000
Email:-
akhandbharatsandesh1@gmail.com
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र
प्रयागराज होगा।